

HAFIZA KESE MAZBOOT HO ? (HINDI)



अल्लाह वालों के हाफिज़े की हिकायत नीज़ हाफिज़ा मजबूत करने के औशदो वजाइफ़

और गिज़ाओं की मां बूमात पर मुश्तमिल मुफ़ीद किताब

हाफिज़ा कैसे मजबूत हो ?

(मअ 48 दिलचस्प हिकायात)



श्री वाए खानादी वा के इस्लामी

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ**

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ
 तर्जमा : ऐ **اَللّٰهُ** ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले ।
 (المُسْتَطَرَف ج ١ ص ٢٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखिर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना
 बक़ीअ
 व मग़फ़िरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुनिया में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)

(تاريخ دمشق لابن عساکر، ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

“हाफिज़ा कैसे मज़बूत हो ?” का हिन्दी रस्मूल ख़त

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की मजलिस “अल मदीनतुल इल्मिय्या” ने येह किताब ‘उर्दू’ ज़बान में पेश की है और मजलिसे तराजिम ने इस किताब का ‘हिन्दी’ रस्मूल ख़त (लीपियांतर) करने की सआदत हासिल की है [भाषांतर (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ लीपियांतर (Transliteration) या'नी बोली तो उर्दू ही है जब कि लीपि (लिखाई) हिन्दी की गई है] और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी-बेशी या ग़लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए Sms, E-mail या Whats App ब शुमूल सफ़हा व सतर नम्बर) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी रस्मूल ख़त का लीपियांतर खाक़

थ = تھ	त = ت	फ = ف	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = س	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ز	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख = کھ	ह = ح
श = ش	स = س	ज़ = ز	ज़ = ز	ढ = ڈھ	ड = ڈ	र = ر
फ = ف	ग = گ	अ = ع	ज़ = ظ	त = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ل = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئی	و = و	آ = آ	ی = ی	ہ = ہ	و = و	ن = ن

✍ :- राबिता :- ✍

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, कासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड,

बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

अल्लाह वालों के हाफिज़े की हिकायात नीज़ हाफिज़ा
मजबूत बनाने के औरादो वज़ाइफ़ और गिज़ाओं की
मा'लूमात पर मुश्तमिल मुफ़ीद किताब

हाफिज़ा कैसे मजबूत हो ?

- : पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
शो'बए बयानाते दा'वते इस्लामी

- : नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना, देहली

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

وَعَلَىٰ إِلِكْ وَأَصْحِكْ يَا حَبِيبُ اللَّهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ

नाम किताब : हाफ़िज़ा कैसे मज़बूत हो ?

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(शो'बए बयानाते दा'वते इस्लामी)

पहली बार : रमज़ानुल मुबारक सिने. 1437 हिजरी

ता'दाद : 5100

कुल सफ़्हात : 200

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली

-: मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

- ❁..... अजमेर : मक्तबतुल मदीना, 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह अजमेर शरीफ़, राजस्थान, फ़ोन : 0145-2629385
- ❁..... बरेली : मक्तबतुल मदीना, दरगाह आ'ला हज़रत, महल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यु.पी. फ़ोन : 09313895994
- ❁..... गुलबर्गा : मक्तबतुल मदीना, फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तिममापुरी चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक फ़ोन : 09241277503
- ❁..... बनारस : मक्तबतुल मदीना, अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यु.पी. फ़ोन : 09369023101
- ❁..... कानपुर : मक्तबतुल मदीना, मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, नज़्द गुर्बत पार्क, डिपटी पडाव चौराहा, कानपुर, यु.पी. फ़ोन : 09616214045
- ❁..... कलकत्ता : मक्तबतुल मदीना, 35A/H/2 मोमिन पुर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल, फ़ोन : 033-32615212
- ❁..... नागपुर : मक्तबतुल मदीना, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ीनगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर (ताजपुर) महाराष्ट्र, फ़ोन : 09326310099
- ❁..... अनंतनाग : मक्तबतुल मदीना, मदनी तरबियत गाह, टाउन हॉल के सामने, अनंतनाग, (इस्लामाबाद), कश्मीर, फ़ोन : 09797977438
- ❁..... सुरत : मक्तबतुल मदीना, वलिया भाई मस्जिद के सामने, ख़्वाजा दाना दरगाह के पास, सुरत, गुजरात, फ़ोन : 09601267861
- ❁..... इन्दोर : मक्तबतुल मदीना, शोप नम्बर 13, बोम्बे बाज़ार, उदा पुरा, इन्दोर, एम. पी. (मध्य प्रदेश) फ़ोन : 09303230692
- ❁..... बेंगलोर : मक्तबतुल मदीना, शोप 13, हज़रत बिलाल मस्जिद कोम्प्लेक्स, नवां मेन पिल्लाना गार्डन, अरेबिक कोलेज, बेंगलोर, कर्नाटक : 09343268414
- ❁..... हुबली : मक्तबतुल मदीना, ए. जे. मुढोल कोम्प्लेक्स, ए. जे. मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

Web : www.dawateislami.net / E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

**“بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ” के 19 हुरफ़ की निश्चत से
इस किताब को पढ़ने की 19 नियतें**

फ़रमाने मुस्तफ़ा : صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

या'नी मुसलमान की नियत उस के अमल से बेहतर है ।

(المعجم الكبير للطبرانی، الحديث: ۵۹۲۲، ج ۶، ص ۱۸۵)

दो मदनी फूल :

❁ बिगैर अच्छी नियत के किसी भी अमले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता ।

❁ जितनी अच्छी नियतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

﴿1﴾ हर बार हम्द व ﴿2﴾ सलात और ﴿3﴾ तअव्वुज़ व
﴿4﴾ तस्मिय्या से आगाज़ करूंगा । (इसी सफ़ह़ा पर ऊपर दी हुई दो
अरबी इबारात पढ़ लेने से चारों नियतों पर अमल हो जाएगा)
﴿5﴾ रिज़ाए इलाही **عَزَّوَجَلَّ** के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर
मुतालआ करूंगा । ﴿6﴾ हत्तल वस्अ़ इस का बा वुजू और
﴿7﴾ क़िब्ला रू मुतालआ करूंगा । ﴿8﴾ कुरआनी आयात और
﴿9﴾ अहादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴿10﴾ इस रिवायत
عِنْدَ ذِكْرِ الصّٰلِحِيْنَ تَنْزَلُ الرّحْمَةُ या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रहमत

नाज़िल होती है । (حلیۃ الاولیاء، ج ۷، ص ۳۳۵، رقم ۱۰۷۵۰) पर अमल करते हुवे इस किताब में दिये गए वाक़िआत दूसरों को सुना कर ज़िक्रे सालिहीन की बरकतें लूटूंगा । ﴿11﴾ जहां जहां ‘अल्लाह’ का नामे पाक आएगा वहां **عَزَّوَجَلَّ** और ﴿12﴾ जहां जहां ‘सरकार’ का इस्मे मुबारक आएगा वहां **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** पढ़ूंगा । ﴿13﴾ किताब की ता’जीम करते हुवे इस पर कोई चीज़ क़लम वगैरा नहीं रखूंगा । इस पर टेक नहीं लगाऊंगा । ﴿14﴾ जो बात समझ में नहीं आएगी उस के लिये आयते करीमा **فَسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ** (پ ۱۲، النحل: ۴۳) **ईमान :** “तो ऐ लोगो इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म नहीं” पर अमल करते हुवे इल्मा से रुजूअ करूंगा ﴿15﴾ इस हदीसे पाक **“تَهَادَوْا تَحَابُّوْا”** या’नी एक दूसरे को तोहफ़ा दो आपस में महबूबत बढ़ेगी । (مَوْطَأُ اِمَامِ مَالِكٍ الْعَدِیْثُ: ۱۷۳، ج ۲، ص ۴۰) पर अमल की निय्यत से (कम अज़ कम 12 अदद या हस्बे तौफीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोहफ़तन दूंगा । ﴿16﴾ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरगीब दिलाऊंगा । ﴿17﴾ (अपने ज़ाती नुस्खे पर) इन्दज़ज़ूरत ख़ास ख़ास मक़ामात अन्दर लाइन करूंगा । ﴿18﴾ किताबत वगैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तहरीरी तौर पर मुत्तलअ करूंगा (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वगैरा को किताबों की अग़लात सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता) ﴿19﴾ इस किताब के मुतालए का सवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगा ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इल्मिया

अज् : बानिये दा'वते इस्लामी, आशिके आ'ला हज़रत, शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते

अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार कादिरि रज़वी ज़ियाई وَأَمَّا بِرَبِّكَ أَنتَ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी

तहरीक 'दा'वते इस्लामी' नेकी की दा'वत, इहयाए सुन्नत और
इशाअते इल्मे शरीअत को दुन्याभर में आम करने का अज़मे मुसम्मम
रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो खूबी सर अन्जाम देने के
लिये मुतअद्दिद मजालिस का क़ियाम अमल में लाया गया है जिन
में से एक मजलिस 'अल मदीनतुल इल्मिया' भी है जो दा'वते
इस्लामी के उलमा व मुफ़्तियाने किराम كَرَّمَهٖمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल
है, जिस ने खालिस इल्मी, तहकीकी और इशाअती काम का बीड़ा
उठाया है। इस के मुन्दरिजए जैल छे शो'बे हैं :

- (1) शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत
- (2) शो'बए दर्सी कुतुब
- (3) शो'बए इस्लाही कुतुब
- (4) शो'बए तराजिमे कुतुब
- (5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
- (6) शो'बए तख़रीज

पेशक़श : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

‘अल मदीनतुल इल्मिय्या’ की अब्बलीन तरजीह सरकारे आ’ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्सु रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल कारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن** की गिरां माया तसानीफ़ को अस्से हाज़िर के तकाज़ों के मुताबिक़ **हत्तल वसअ** सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तहकीकी और इशाअती मदनी काम में हर मुमकिन तआवुन फ़रमाएं और मजलिस की तरफ़ से शाएअ होने वाली कुतुब का खुद भी मुतालआ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरगीब दिलाएं।

اَللّٰهُمَّ **عَزَّوَجَلَّ** ‘दा’वते इस्लामी’ की तमाम मजालिस ब शुमूल ‘अल मदीनतुल इल्मिय्या’ को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक्की अता फ़रमाए और हमारे हर अमले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। **اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم**



रमज़ानुल मुबारक 1425 हिजरी

पेशक़श : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा’वते इस्लामी)

कुव्वते हाफिज़ा एक अनामोल ने'मत

एक ज़माना था जब इन्सान उड़ते परन्दों और तैरती मछलियों को देख कर मुतअस्सिर होता था, चमकते चांद और दमकते सितारों को देख कर हैरान होता और बुलन्दो बाला पहाड़ों की शानो शौकत के आगे मरक़ब होता था मगर जब अपनी दिमागी सलाहिय्यतों का इस्ति'माल करते हुवे ग़ौरो फ़िक्क के समन्दरों में ग़ौताज़न हुवा तो काइनात मुसख़्ख़र (फ़त्ह) करने का राज़ इस पर आश्कार हो गया । इसी अक्ले इन्सानी के ज़रीए इस ने जहाज़ बनाए, समन्दर की मौजों का सीना चीरती कश्तियां और बहरी जहाज़ों की सूरत में एक नया जहान आबाद कर दिया । आस्मान से बातें करती बुलन्दो बाला इमारतों का वोह तसल्लुल काइम किया जिस का माज़ी में तसव्वुर भी ना मुमकिन था । हमारे बुजुर्गाने दीन, अस्लाफ़, बड़े बड़े हुकमा व अतिब्बा और नामवर मुसलमान साइन्सदानों ने इस ने'मत का भरपूर इस्ति'माल किया और ऐसे कारनामे सर अन्जाम दिये जो रहती दुन्या के लिये यादगार बन गए । यूं तो इन्सान की तख़लीक़ के इब्तिदाई दौर से ही कुव्वते हिफ़ज़ और ज़िहानत के हैरान कर देने वाले नज़ारे देखने को मिलते रहे मगर सरकारे दो आलम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की उम्मत को हिफ़ज़ व ज़िहानत की येह कुव्वत कामिल व अकमल तौर पर अता हुई जैसा कि हज़रते सय्यिदुना क़तादा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** ने फ़रमाया : **عَزَّوَجَلَّ** ने इस उम्मत को हिफ़ज़ और **याददाश्त** की वोह ग़ैर मा'मूली सलाहिय्यत अता फ़रमाई है जिस से गुज़्ता उम्मतें महरूम थीं ।⁽¹⁾ गोया बे मिसाल

1... زرقانی علی المواهب، المقصد الرابع، خصائص امته صلى الله تعالى عليه وسلم، 4/48

कुव्वते हिफ़ज़ व जिहानत इस उम्मत का खास्सा है। मगर जूँ जूँ वक़्त ज़मानए रिसालत से दूर होता गया इस ने'मत के जुहूर में कमी वाक़ेअ होने लगी। इस के अस्बाब पर भी अगर गौर किया जाए तो इस शे'र के मिस्दाक़ नज़र आते हैं कि

देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़लत की बदौलत

सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

हर ज़माने में एक मख़सूस तबका ऐसा रहा है कि जिन्हें **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** कुव्वते हाफ़िज़ा की ऐसी दौलत अता फ़रमाता है कि चारों तरफ़ न सिर्फ़ उन का शोहरा हो जाता है बल्कि वोह ऐसे हैरान कुन कारनामे सर अन्जाम देते हैं कि दुनिया अंगुशत ब दन्दां (हैरान) रह जाती है। जैसा कि आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान **عليه رَحْمَةُ الرَّحْمٰن** अस्लाफ़ की अज़ीम यादगार थे जिन के हिफ़ज़े कुरआन के बारे में **मन्कूल है कि रोज़ाना एक पारह याद फ़रमा लिया करते थे और यूँ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ** ने तीस दिन में मुकम्मल कुरआने मजीद हिफ़ज़ फ़रमा लिया था।⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! भूल दिमागी अमराज़ में से एक मरज़ है जो काबिले इलाज है इसी लिये उलमा ने इस मौजूअ पर किताबें लिखीं और इस का इलाज तजवीज़ किया। उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के तहत मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी हाफ़िज़ अबुल बिनतैन मुहम्मद हस्सान रज़ा अत्तारी अल मदनी **سَلَمَةُ الْعَفْي ने मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या से ख़्वाहिश का इज़हार फ़रमाया**

①हयाते आ'ला हज़रत, 1/208

कि कुव्वते हाफ़िज़ा के मौजूअ पर ऐसी किताब मुस्तब की जाए जिस में हाफ़िज़ा बढ़ाने के अस्बाब और **अब्बाह** वालों के हैरत अंगेज़ हाफ़िज़े की हिकायात सादा और दिलचस्प अन्दाज़ में शामिल हों नीज़ इस में तिब्बी साइन्सी तहकीकात को भी आसान कर के शामिले किताब किया जाए। आप की इस तरगीब पर **अल मदीनतुल इल्मिया** के मदनी इस्लामी भाइयों को येह अहम काम सोंपा गया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ किताब को जामेअ बनाने के लिये इस मौजूअ पर लिखी गई अरबी, उर्दू, अंग्रेज़ी मतबूआ कुतुब के साथ साथ अरबी मख़्तूतात से भी इस्तिफ़ादा किया गया है। इस किताब पर बिल खुसूस दो मदनी इस्लामी भाइयों अबू आतिर मुहम्मद नासिर जमाल अत्तारी अल मदनी और अबू सलमान मुहम्मद अदनान चिश्ती अल मदनी **سَلَّمَهُمَا اللهُ الْغَنَى** ने काम करने की सआदत हासिल की है।

मौजूआत का इजमाली तआरुफ़

येह किताब तीन अबवाब (**CHAPTERS**) पर मुश्तमिल है। पहला बाब कुव्वते हाफ़िज़ा की अहम्मियत के मुतअल्लिक है, दूसरे बाब में बुजुर्गाने दीन और सलफ़े सालिहीन के हैरत अंगेज़ हाफ़िज़े के वाकिआत, जब कि तीसरे बाब के तहत याद करने का तरीक़ा कार, **याददाश्त** बढ़ाने वाले आ'माल, भूल पैदा करने वाले अस्बाब, कुव्वते हिफ़ज़ बढ़ाने वाले औरादो वज़ाइफ़ और ग़िज़ाओं का ज़िक़्र है। येह तीसरा बाब सब से अहम तरीन और मुफ़ीद मा'लूमात पर मुश्तमिल है, पहला बाब पढ़ने से हाफ़िज़े की अहम्मियत

उजागर होगी, दूसरे बाब से जहां हमारे अस्लाफ़ की अज़ीम याददाश्त का हमें इल्म होगा वहीं इस ने'मत के दुरुस्त इस्ति'माल का भी पता चलेगा और इस ने'मत के हुसूल का ज़ेहन भी बनेगा और तीसरे बाब के मुतालए से याददाश्त में इज़ाफ़े के मुतअल्लिक रहनुमाई मिलेगी ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की इस काविश को क़बूल फ़रमाए, हमें अपनी इस्लाह के लिये शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ के अताक़र्दा मदनी इन्आमात पर अमल की तौफीक़ अता फ़रमाए । सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये 3 दिन, 12 दिन, एक माह और 12 माह के लिये अशिक़ाने रसूल के सफ़र करने वाले मदनी काफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफीक़ अता फ़रमाए दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक्की अता फ़रमाए ।

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

शो'बए बयानाते दा'वते इस्लामी

9 ज़िका'दतुल ह़राम सिने 1436 हिजरी ब मुताबिक़ 25 अगस्त सिने 2015 ईसवी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम ﷺ का फ़रमाने
आफ़ियत निशान है : जब तुम कोई चीज़ भूल जाओ तो मुझ पर
दुरूद पढ़ो **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** याद आ जाएगी।⁽¹⁾

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

आलिमे मदीना की क्या शान है !

हज़रते सय्यिदुना इमाम शिहाबुद्दीन अबू बक्र मुहम्मद बिन
मुस्लिम जोहरी **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ** इल्मे हदीस के बहुत बड़े आलिम थे।
एक रोज़ आप **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ** ने अपने दर्से हदीस में चालीस से ज़ाइद
अहादीस बयान फ़रमाई। आप **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ** अगले रोज़ जब
तशरीफ़ लाए तो त़लबा से इरशाद फ़रमाया : सब किताब देखें
ताकि मैं हदीस बयान करूं, (फिर फ़रमाया) क्या तुम में से कोई यह
बता सकता है कि इस किताब से मैं ने कल कौन कौन सी अहादीस
बयान की थीं ? आप **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ** के इस सुवाल पर वहां मौजूद
त़लबा कुछ जवाब न दे सके। इसी दौरान एक त़ालिबे इल्म यूं गोया
हुवा : “यहां एक ऐसा नौजवान मौजूद है जो गुज़ता कल बयान

① ... القول البدیع، الباب الخامس فی الصلاة علیه فی اوقات مخصوصة، ص ۲۷

कर्दा अहादीस सुना सकता है ।” हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ ने फ़रमाया : “वोह कौन है ?” अर्ज़ की : “इब्ने अमिर ।” फिर इब्ने अमिर नामी उस नौजवान ने बर जस्ता वोह चालीस की चालीस अहादीस ज़बानी सुना दीं । हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने जब उस नौजवान की कुव्वते हाफ़िज़ा को मुलाहज़ा फ़रमाया तो बहुत खुश हुवे और उन्हें इन ता’रीफ़ी कलिमात से नवाज़ा : “मैं नहीं समझता कि तुम्हारे इलावा किसी और को भी येह अहादीस याद हुई हों !”⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जैसे जलीलुल क़द्र मुहद्दिस ने इब्ने अमिर नामी जिस नौजवान के कुव्वते हाफ़िज़ा के लिये येह कलिमात इरशाद फ़रमाए थे, उन का नाम “मालिक बिन अनस” है जिन्हें ज़माना “इमाम मालिक” के नाम से याद करता है, जो चार मशहूरो मा’रूफ़ अइम्माए मुज्ताहिदीन में से एक हैं । हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ खुद अपने हाफ़िज़े के बारे में इरशाद फ़रमाते हैं : “जो चीज़ एक बार देख लेता हूं उसे याद कर लेता हूं और फिर मुझे वोह चीज़ कभी नहीं भूलती ।”⁽²⁾

① ... سير اعلام النبلاء، مالك الامام، ٢/ ٣٩٩

②बोस्तानुल मुहद्दिसीन, स. 16 मुल्लक़तून

आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने कुव्वते हाफ़िज़ा और खुदादाद सलाहियत की बदौलत जो ख़िदमते दीन सर अन्जाम दी है इस की वजह से आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने “अल्लिमे मदीना” के अज़ीमुश्शान लक़ब से शोहरत पाई बल्कि येह लक़ब आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** को बारगाहे रिसालत से अता हुवा जैसा कि तिरमिज़ी शरीफ़ की रिवायत में है कि नबिय्ये करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “अन करीब लोग तलबे इल्म की खातिर (कसरते सफ़र की वजह से अपने) ऊंटों के कलेजे पिघला देंगे लेकिन फिर भी अल्लिमे मदीना से बढ़ कर कोई अल्लिम नहीं पाएंगे।” मशहूर मुहद्दिस हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उयैना **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : “इस रिवायत में अल्लिमे मदीना का मिस्दाक़ हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** हैं।”⁽¹⁾

बाब 1 : हाफ़िज़े की अहम्मियत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्यवी कामयाबी के हुसूल का मुआमला हो या उख़रवी नजात मतलूब हो दोनों ही के लिये अच्छी याददाश्त का होना बहुत ज़रूरी है। क्यूंकि दीनी व दुन्यवी मुआमले की अहम्मियत व इफ़ादियत, फ़वाइदो समरात और नुक़सानात पर मुश्तमिल अहम तरीन मा'लूमात हमारे ज़ेहन में जितनी ज़ियादा

... तर्मिज़ी, کتاب العلم, باب ما جاء في عالم المدينة, ३/३११, حديث: २५८९

पुख़्ता होगी मक्सद पाने की लगन उतनी बढ़ेगी । यकीनन हमारे लिये वोही मा'लूमात मुफ़ीद है जो हमारे ज़ेहन में महफूज़ हो, येही वजह है कि दुन्या व आख़िरत में कामयाबी से हम किनार करने के लिये कुव्वते हाफिज़ा की बहुत ज़ियादा अहम्मियत है ।

कुव्वते हाफिज़ा का हमारी ज़िन्दगी में क्या किरदार है ? कौन कौन से मुआमलात में हम इस की मदद से कामयाबी हासिल करते हैं ? नीज़ इस की जानिब तवज्जोह न देने से हमें किस तरह के नुक़सानात का सामना हो सकता है ? इन तमाम बातों को जानने के लिये आने वाली तफ़्सील का दिल ज़मई से मुतालआ कीजिये :

हाफिज़े के उख़्शवी फ़्वाइद

﴿1﴾ हुकूकुल्लाह की अदाएगी

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की रिज़ा पाने और ना फ़रमानी से बचने के लिये “हुकूकुल्लाह” की मा'रिफ़त बेहद ज़रूरी है । **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के हुकूक की अदाएगी के लिये येह भी ज़रूरी है कि बन्दे को न सिर्फ़ वोह तमाम हुकूक मा'लूम हों बल्कि अदाएगी के लिये उन का अज़बर होना भी ज़रूरी है, मसलन नमाज़ की अदाएगी का तअल्लुक हुकूकुल्लाह से है, लिहाज़ा जब तक बन्दा “नमाज़ के अहकाम” याद न करे उस वक़्त तक येह हक़ दुरुस्त तरीक़े से अदा नहीं कर सकता । इसी तरह दीगर फ़राइज़ो वाजिबात की अदाएगी में याददाश्त का बेहद अहम किरदार है ।

﴿2﴾ हुक्कूल इबाद की अदाएगी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुआशरती तअल्लुकात में सब से अहम और बुन्यादी चीज़ “हुक्कूल इबाद” हैं। बन्दों की हक़ तलफ़ी का कैसा वबाल है चुनान्चे, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया : “क्या तुम लोग जानते हो कि मुफ़्लिस कौन है ?” सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : “जिस शख़्स के पास दरिहम और दूसरी किस्म का माल न हो वोह मुफ़्लिस है।” नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : मेरी उम्मत में सब से बड़ा मुफ़्लिस वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात जैसी नेकियां ले कर मैदाने ह़शर में आएगा मगर उस का येह हाल होगा कि उस ने दुन्या में किसी को गाली दी होगी, किसी पर तोहमत लगाई होगी, किसी का माल (नाहक़) खाया होगा किसी का खून बहाया होगा, किसी को मारा होगा, तो येह सब हुक्कू वाले अपने अपने हुक्कू तलब करेंगे तो **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** उस की नेकियों से हुक्कू वालों को उन के हुक्कू के बराबर नेकियां दिलाएगा। अगर उस की नेकियों से तमाम हुक्कू अदा न हो सके बल्कि नेकियां ख़त्म हो गई और हुक्कू बाकी रह गए तो **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** हुक्म फ़रमाएगा कि तमाम हुक्कू वालों के गुनाह उस के सर लाद दो, लिहाज़ा वोह सब हक़ वालों के गुनाहों को सर पर उठाएगा फिर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।⁽¹⁾

१ ... مسلم، كتاب البر والصلة والآداب، باب تحريم الظلم، ص १३९، حديث: २५८१

इस रिवायत से मा'लूम हुआ कि बन्दों के हुक्क का मुआमला यूं भी ज़ियादा संगीन है कि जब तक बन्दा अपना हक मुआफ़ न करे **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** भी मुआफ़ नहीं फ़रमाएगा लिहाज़ा क़ियामत की आजमाइश से बचने के लिये हुक्कूल इबाद में एहतियात निहायत ज़रूरी है। दुन्यवी नुक़सान के लिये सिर्फ़ इस पहलू को मद्दे नज़र रखिये कि हुक्कूल इबाद की पामाली से मुआशरे का सुकून ग़ारत हो जाता है लिहाज़ा जिस के ज़ेहन में हुक्कूल इबाद की अहम्मियत नक़श हो और इस की पामाली के नुक़सानात भी ज़ेहन नशीन हों तो यकीनन ऐसा शख़्स इस अज़ीम तरीन गुनाह से बचने की हर मुमकिन कोशिश करेगा।

﴿3﴾ अय्यामुल्लाह याद रखने के लिये

जिस दिन **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की तरफ़ से कोई ने'मत मिले या किसी खास फ़ज़लो करम का नुज़ूल हो ऐसे दिनों को अय्यामुल्लाह कहते हैं। अय्यामुल्लाह को याद रख कर इन्हें मनाना भी सालिहीन का तरीका रहा है और इस से जहां ख़ूब ख़ूब बरकतें हासिल होती हैं वहीं कई बिगड़े काम भी बन जाते हैं इस लिये खुश अकीदा मुसलमान ज़ने विलादत, शबे मे'राज, ग्यारहवीं शरीफ़, छठी शरीफ़ और बुजुर्गाने दीन के आ'रास याद भी रखते हैं और खुसूसी एहतियाम के साथ मना कर बरकतें भी पाते हैं। इन दिनों को मनाने से अस्लाफ़ की सीरत से आगाही भी हासिल होती है और नेकियां करने और गुनाहों से बचने का ज़ब्बा भी मुयस्सर आता है। लिहाज़ा अपने अमल में इज़ाफ़े के लिये इन अय्याम को याद रखना और इन्हें मनाना मुआशरे की इस्लाह के लिये मुफ़ीद है।

पेशक़श : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

«4» अल्लाह वालों के हालाते ज़िन्दगी

बुजुर्गाने दीन की सीरत पर अमल करना बाइसे बरकत भी है और ज़रीअए रहमत भी । जहां येह सीरते ज़िन्दगी को खुश गवार और पुर मसरत बनाने का सबब बनती है वहीं ज़ाहिरी व बातिनी बीमारियों के लिये मुअस्सिर इलाज भी है । अल्लाह वालों की सीरत के मुतालए से निय्यत को पाकीज़ा रखने, आ'माल की इस्लाह करने और मुश्किलात और मुसीबत में साबित क़दम रहने का ज़ेहन बनता है । अस्लाफ़ की सीरत से हासिल होने वाले मदनी फूलों में वोह महक होती है जो न सिर्फ़ हमारी दुन्यवी ज़िन्दगी को खुशबूदार बना देती है बल्कि हमारी उख़रवी ज़िन्दगी के लिये भी मुफ़ीद किरदार अदा करती है यकीनन येह तमाम फ़वाइदो समरात उसे हासिल होंगे जो इन की सीरत से हासिल होने वाले मदनी फूलों को अपने ज़ेहन में रख कर उन पर अमल भी करे ।⁽¹⁾

«5» हुसूले इब्रत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन्सान की फ़ितरत है कि जब उसे कोई नुक़सान पहुंचता है या वोह किसी को आजमाइश में देखता है तो उस से नसीहत हासिल करता है लेकिन येह नसीहत उसी सूरत

①.....अल्लाह वालों की सीरत पर दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की कुतुब बिल खुसूस "फ़ैज़ाने सिद्दीके अक्बर, फ़ैज़ाने फ़ारूके आ'ज़म, हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की 425 हिकायात, अस्लाफ़ का अन्दाज़े तिजारत, अल्लाह वालों की बातें" का मुतालआ बेहद मुफ़ीद है ।

पेशक़श : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

में मुफ़ीद होती है जब इन तमाम बातों को अपने ज़ेहन में रखे और इसी तरह की ग़लती करने से खुद को ज़िन्दगी भर बचाए रखे लिहाज़ा इब्रत हासिल करने वाली आंख की तमाम तर मा'लूमात को याददाश्त में महफूज़ कर लेना दुनिया व आख़िरत की बेहतरी के लिये बेहद मुफ़ीद है ।

﴿6﴾ शरई अहक़ाम पर अमल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह इन्सान की फ़ितरत है कि जब उसे किसी चीज़ के नफ़अ या नुक़सान का इल्म हो तो उस पर अमल करता है या उस से बचता है । चूँकि शरीअत इन्सान के दीन, जान, माल, अक्ल, नसब की हिफ़ाज़त करती है और इस के मुतअल्लिक अहक़ाम भी अता फ़रमाती है लिहाज़ा जब किसी के पेशे नज़र इस की अहम्मियत होगी और उस के ज़ेहन में अमल का उख़रवी फ़ाइदा भी नक़्श होगा तो वोह ज़ियादा रग़बत से **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** और उस के प्यारे रसूल **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के अताक़र्दा अहक़ाम पर इस्तिक़ामत से अमल करेगा ।

हाफ़िज़े के दुन्यवी फ़वाइद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़बूत कुव्वते हाफ़िज़ा के जहां बेशुमार उख़रवी फ़वाइद हैं वहीं इस के दुन्यवी फ़वाइद का भी इन्कार नहीं किया जा सकता, यहां चन्द फ़वाइद ज़िक़्र किये गए हैं :

पेशक़्श : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

﴿1﴾ ता'लीमी कामयाबी का हुसूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इम्तिहान ता'लीमी दौर के किसी भी मर्हले का हो उस में बरतरी हासिल करने के लिये इन्सान अपनी याददाश्त से ज़रूर मदद लेता है। हाफ़िज़े में महफूज़ मा'लूमात का बर वक़्त और सहीह इस्ति'माल उस के मुस्तक़्बल को ताबनाक बना सकता है। ता'लीमी मैदान में कामयाबी हासिल करने और अपने मक़्सद को पाने के लिये सच्ची लगन और मेहनत व मशक़त का आदी होने के साथ साथ बेहतरीन कुव्वते हाफ़िज़ा का होना भी ज़रूरी है।

﴿2﴾ कारोबारी कामयाबी

कारोबार से तअल्लुक रखने वाले इस्लामी भाइयों को हिसाब किताब, लैन दैन से ज़ियादा वासिता पड़ता है अगर ख़रीदो फ़रोख़्त के शर्ई अहक़ाम उन की याददाश्त में महफूज़ हों तो इस की बरकत से हराम से बचने का ज़ेहन बनता है, लैन दैन में भी एहतियात का दामन हाथ से नहीं छूटता। इसी तरह कारोबार करने वाले शख़्स की याददाश्त में जिस क़दर गाहक और डीलर की अहम्मियत, नफ़अ नुक़सान के पहलू और इन्हें मुतमइन करने के जाइज़ तरीक़े महफूज़ होंगे इतना ही वोह झूट, धोकाबाज़ी वग़ैरा से बच सकेगा नीज़ आख़िरत की बरबादी से खुद को बचाने में कामयाब होगा। मज़ीद येह कि हुस्ने सुलूक, दियानत दारी और खुश अख़्लाकी की बरकत

से कारोबारी फ़वाइद भी यकीनन हासिल करेगा लिहाज़ा कारोबार किसी भी नोइय्यत का हो उस की कामयाबी के लिये अच्छी याददाश्त का होना भी शर्त है।

﴿3﴾ मुशावरत के लिये

किसी भी मस्अले को हल करने के लिये मुशावरत (मश्वरा करना) बहुत मुफ़ीद है। इस की अहम्मिय्यत वाज़ेह करने के लिये दो आलम के मालिको मुख्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मुशावरत का हुक्म दिया गया।

चुनान्चे, इरशाद होता है :

وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ

(प २, बाल عمران: १५९)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और

कामों में उन से मश्वरा लो।

इस आयत की तफ़सीर में ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अल्लामा मुफ़्ती सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَوْنِي फ़रमाते हैं : “इस में इन की दिलदारी भी है और इज़्ज़त अफ़ज़ाई भी और येह फ़ाइदा भी कि मश्वरा सुन्नत हो जाएगा और आइन्दा उम्मत इस से नफ़अ उठाती रहेगी।” सरकारे मदीना لَا نَدْرَهُ مَنْ اسْتَشَارَ का फ़रमाने अलीशान है صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ या'नी मश्वरा करने वाला नादिम नहीं होता।^(१) लेकिन येह मुआमला जिस क़दर अहम है उसी क़दर ह़स्सास भी, क्यूंकि कुन्द ज़ेहन से मुशावरत जहां वक़्त की बरबादी का सबब बनती है वहीं उस के

ग़लत मश्वरे पर अमल की सूरत में संगीन नुक़सान भी उठाना पड़ सकता है लिहाज़ा मुशावरत के अमल को नतीजा ख़ैज़ बनाने के लिये हाफिज़े का क़वी होना ज़रूरी है।

«4» अच्छी यादों से महज़ूज़ होने के लिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी के कुछ लम्हात ऐसे होते हैं कि जिन्हें बार बार याद कर के खुशी महसूस होती है। बा'ज औकात उन लम्हात को बतौर तरगीब भी ज़िक्र किया जाता है। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ गुज़ारे हुवे लम्हात को याद फ़रमा कर खुशी महसूस करते, बल्कि बा'ज रिवायात बयान करने वालों का अन्दाज़ इस तरह होता कि जैसे रावी के पेशे नज़र वोह तमाम मन्ज़र हो। इसी तरह अगर ज़ियारते मक़ामाते मुक़द्दसा की यादें ज़ेहन में नक़श हों तो उन के ख़याल से दिल को फ़रहत और रूह को सुकून मिलता है। खुशी के उन लम्हात को याददाश्त में महफूज़ रख कर ज़िन्दगी को खुश गवार बनाया जा सकता है, खास तौर पर सफ़रे मदीना के यादगार लम्हात ज़ेहन में बसाए रखने की वजह से इश्के रसूल में इज़ाफ़ा होता है।

«5» दिलचस्प गुफ़्तगू करने के लिये

गुफ़्तगू में नमी इख़्तियार करना भी बहुत अच्छी ख़ूबी है लेकिन बात चीत को दिलचस्प और मुअस्सिर बनाने नीज़ बात समझाने के लिये ब वक्ते ज़रूरत मुहावरों और मिसालों का इस्ति'माल

बेहद मुफ़ीद होता है। नसीहत आमोज़ अक्वाल और दिलजुई पर मुश्तमिल अल्फ़ाज़ भी गुफ़्तगू का हिस्सा हों तो सुनने वाले को भी लुफ़ आता है और बात भी जल्द समझ आ जाती है। इस तरह की दिलचस्प गुफ़्तगू करने के लिये इन लवाज़िमात का ज़ेहन में होना लाज़िमी है क्योंकि येह तमाम लवाज़िमात जितने अहसन तरीक़े से ज़ेहन में महफूज़ होंगे गुफ़्तगू भी उतनी ही मा'नाख़ैज़, दिलचस्प और पुरमग़ज़ होगी।

«6» निगरान व मुन्तज़िम के लिये

निगरान या मुन्तज़िम घर का हो या किसी इदारे का, येह ओहदा जितना अहम है उसी क़दर हस्सास भी है। निगरान या मुन्तज़िम की सरपरस्ती और निगरानी में कई लोग काम करते हैं लिहाज़ा निगरान या मुन्तज़िम इदारे के इन्तिज़ामी उमूर की भारी ज़िम्मेदारी अपने सर ले कर अपने मा तहत अफ़राद को सुकून फ़राहम करता है लेकिन येह उसी सूरत में मुमकिन है कि निगरान या मुन्तज़िम दियानत दार, खुश अख़्लाक़ और ख़ैर ख़्वाह होने के साथ साथ निहायत ज़हीन और क़वी हाफ़िज़े का मालिक भी हो ताकि हिसाबो किताब के आ'दाद व शुमार से ले कर मा तहत अफ़राद को काम देने और लेने के तमाम मराहिल ब आसानी तै हो सकें।

«7» परेशानी से बचने के लिये

कोई चीज़ कहीं रख कर भूल जाने से जिस तरह की आजमाइश और परेशानी का सामना होता है उस के नज़ारे आए

पेशक़श : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

दिन होते ही रहते हैं। इस तरह की भूल न सिर्फ़ हमारे कीमती वक़्त की बरबादी का सबब बनती है बल्कि बा'ज़ औकात तो बड़े माली ख़सारे का ज़रीआ भी बन जाती है। इस तरह भूलने की वजह से ज़िन्दगी उलझन और परेशानी का शिकार हो जाती है। इस परेशानी से खुद को बचाने के लिये कुव्वते हाफ़िज़ा को बेहतर बनाने की कोशिश करना बेहद ज़रूरी है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी के और भी कई शो'बे हैं जिन में कुव्वते हाफ़िज़ा की अहम्मियत से इन्कार नहीं किया जा सकता। चन्द फ़वाइद का ज़िक्र सिर्फ़ इस लिये कर दिया गया है ताकि कुव्वते हाफ़िज़ा की अहम्मियत उजागर हो और आइन्दा आने वाले अबबाब (Chapters) की रौशनी में आप भी हाफ़िज़े की बेहतरी के लिये कोशिश करें।

हैशत अंगेज़ कुव्वते हाफ़िज़ा की हिक्मायतें

इन्सान ने कुव्वते हाफ़िज़ा की बुनियाद पर न सिर्फ़ अपनी तारीख़ को महफूज़ रखा बल्कि रोज़ मर्ग़ के तजरिबात को याद रख कर दुन्या में तरक्की की। यूं तो साबिका उम्मतों में भी हैरान कुन कुव्वते हाफ़िज़ा के मालिक अफ़राद मौजूद थे लेकिन सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के सदके इस उम्मत को ख़ुसूसियत के साथ इस वस्फ़ से नवाज़ा गया। चुनान्वे, हज़रते सय्यिदुना क़तादा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** इरशाद फ़रमाते हैं : **“اَبْوَاهُ عَزَّوَجَلَّ** ने इस उम्मत को हिफ़ज़ और याददाश्त की ग़ैर मा'मूली सलाहियत

अता फ़रमाई है जब कि गुज़श्ता उम्मतों में से किसी को इस से नहीं नवाज़ा गया, (हैरत अंगेज़ हाफ़िज़े की) इस ने'मत को नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की उम्मत के साथ खास फ़रमाया और इस की बदौलत इस उम्मत की इज़्ज़त अफ़ज़ाई फ़रमाई ।”(1)

हज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन अब्दुरहीम इराक़ी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي** इस उम्मत की खुसूसिय्यात ज़िक्र करते हुवे फ़रमाते हैं : “इस उम्मत की एक खुसूसिय्यत येह भी है कि लोगों ने अपनी कम उम्री में जिन उलूम पर उबूर हासिल किया, साबिका उम्मतें लम्बी उम्र मिलने के बा वुजूद हासिल न कर सकीं, येही वज्ह है कि इतनी कम उम्री में इस उम्मत के मुज्ताहिदीन पर उलूमे मअरिफ़ के ख़ज़ाने खुल गए ।”(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बुजुर्गाने दीन की सीरत में हैरान कुन कुव्वते हाफ़िज़ा की सेंकड़ों मिसालें मौजूद हैं जिन्हें पढ़ या सुन कर उम्मतें मुहम्मदिय्या की इस खुसूसिय्यत पर यक़ीन न सिर्फ़ क़वी होता है बल्कि इस की बदौलत सुन्नते नबवी की पैरवी और शरीअत पर चल कर कामयाबी पाने का ज़ब्बा भी नसीब होता है । हमारे बुजुर्गाने दीन ने बारगाहे इलाही से मिलने वाली कुव्वते हाफ़िज़ा और ज़िहानत के ज़रीए दीने इस्लाम की ख़िदमत फ़रमाई और ऐसे कारनामे अन्जाम दिये जो रहती दुन्या तक हिदायत और रहनुमाई का सबब बनते रहेंगे ।

① ... زرقانی علی المواهب، المقصد الرابع فی... الخ، الفصل الرابع ما اختص به من

الفضائل... الخ، ۴/۸۷

② ... زرقانی علی المواهب، المقصد الرابع فی... الخ، الفصل الرابع ما اختص به من

الفضائل... الخ، ۴/۸۷

हिफ़जे क़ुरआन की सात हिक्कयात

«1» सिर्फ़ पढ़ कर सूराह अन्आम याद कर ली

हज़रते सय्यिदुना अबुल मअली मुहम्मद बिन अली हलबी **عَزَّوَجَلَّ** को **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** ने तेज़ तरीन कुव्वते हाफ़िज़ा से नवाज़ा था । एक मरतबा आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** को किसी ने सूराह अन्आम हिफ़ज़ करने का मश्वरा दिया तो आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** ने सिर्फ़ एक मरतबा पढ़ कर येह सूरात हिफ़ज़ फ़रमा ली । याद रहे कि सूराह अन्आम में 20 रुकूअ और 165 आयतें हैं और फ़क़त एक बार पढ़ कर हिफ़ज़ कर लेना आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** के तेज़ तरीन हाफ़िज़े की दलील है ।⁽¹⁾

«2» एक रात में हिफ़जे क़ुरआन

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सीना **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** को किसी शख्स ने क़ुरआने पाक हिफ़ज़ न करने पर मलामत की तो आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** ने पूरा क़ुरआन सिर्फ़ एक रात में हिफ़ज़ फ़रमा लिया, जब कि इस से पहले आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** को सूराह फ़ातिहा, सूराह इख़लास और मुअव्वज़तैन (सूराह फ़लक़ और सूराह नास) के इलावा कुछ याद न था ।⁽²⁾

1... الدرر الكامنة، محمد بن علي... الخ، ٨٦/٢، رقم: ٢٣٤

2... المنن الكبرى، الباب السابع، فيه من النعم نعمة... الخ، ص ٢٦٨

«3» तीन माह में हिफ़ज़े क़ुरआन

हज़रते सय्यिदुना इमाम रब्बानी मुजहिदे अल्फे सानी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के साहिबज़ादे हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मा'सूम नक्शबन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ के बारे में मन्कूल है कि वोह मादर ज़ाद वली (या'नी पैदाइशी वलियुल्लाह) थे और उन्होंने ने सिर्फ़ तीन माह की क़लील मुदत में मुकम्मल कुरआने करीम हिफ़ज़ कर लिया था ।⁽¹⁾

«4» चार साल की उम्र में हिफ़ज़े क़ुरआन

हज़रते सय्यिदुना इमाम अब्दुल वहहाब शा'रानी قُدْس سرّة السّامی नक्ल फ़रमाते हैं : “हज़रते सुफ़यान बिन उयैना رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने चार साल की उम्र में पूरा कुरआन हिफ़ज़ कर लिया था ।”⁽²⁾

«5» पन्ध्रह पाखों के पैदाइशी हाफ़िज़

हज़रते ख़्वाजा कुत्बुल हक्के वहीन बख़्तियार काकी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की उम्र जिस दिन चार बरस चार महीने चार दिन की हुई (तो) “तक़रीबे يُسْمِعُ اللَّهَ” मुक़रर हुई, लोग बुलाए गए। हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ भी तशरीफ़ फ़रमा हुवे । “يُسْمِعُ اللَّهَ” पढ़ाना चाही मगर इल्हाम हुवा कि ठहरो ! हमीदुद्दीन नागोरी आता है वोह पढ़ाएगा । इधर नागोर में काज़ी हमीदुद्दीन (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) को इल्हाम हुवा कि जल्द जा ! मेरे एक बन्दे को “يُسْمِعُ اللَّهَ” पढ़ा ! काज़ी साहिब फ़ौरन तशरीफ़ लाए और आप

1... جامع کرامات اولیاء، ۳۳۳/۱

2... طبقات الکبریٰ للشعرانی، ۸۰/۱

से फ़रमाया : “साहिब ज़ादे पढ़िये بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ आप ने पढ़ा :
 اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ और शुरू से ले कर पन्दरह
 पारे हिफ़ज़ सुना दिये । हज़रते काज़ी साहिब और ख़्वाजा साहिब ने
 फ़रमाया : साहिब ज़ादे आगे पढ़िये ! फ़रमाया : मैं ने अपनी मां के
 शिकम (या'नी पेट) में इतने ही सुने थे और इसी क़दर उन (या'नी
 अम्मी जान) को याद थे, वोह मुझे भी याद हो गए ।⁽¹⁾

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदेक़े
 हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ख़ुदा अपनी उल्फ़त में सादिक् बना दे

मुझे मुस्तफ़ा का तू आशिक बना दे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से मा'लूम हुवा कि
 ज़मानए हज़ल में मां के मुआमलात बच्चे की शख़्सियत पर गहरा
 असर डालते हैं । इस लिये मां को चाहिये कि इन अय्याम में अपने
 अफ़कार व ख़यालात को पाकीज़ा रखने की कोशिश करे । अगर वोह
 येह ज़माना केबल और वी सी आर पर फ़िल्में ड्रामे देखते हुवे
 गुज़रेगी तो शिकम में पलने वाली औलाद पर जो असरात मुरत्तब
 होंगे वोह औलाद के बा शुरु होने पर ब आसानी मुलाहज़ा किये जा
 सकते हैं । जब तक माएं इबादतों रियाज़त का शौक और तिलावते

①मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 481

कुरआन का जौक रखने वाली होती थीं, उन की गोद में पलने वाली औलाद भी इल्मो अमल का पैकर और खौफ़े खुदा का मज़हर हुवा करती थी। जब माओं ने नमाज़ें तर्क करना अपना मा'मूल, फ़ेशन को अपना शिआर और बे पर्दगी को अपना वकार बना लिया तो औलादें भी इसी डगर पर चल निकलीं और फ़ह्हाशी व उरयानी और बे राह रवी का सैलाब हया को बहा कर ले गया।

मैं कर के तौबा पलट कर गुनाह करता हूं

हकीक़ी तौबा का कर दे शरफ़ अता या रब

सुनूं न फ़ोहूश कलामी न ग़ीबत व चुग़ली

तेरी पसन्द की बातें फ़क़त सुना या रब

करें न तंग ख़यालाते बद कभी, कर दे

शुक्रो फ़िक़्र को पाकीज़गी अता या रब

नहीं है नामए अत्तार में कोई नेकी

फ़क़त है तेरी ही रहमत का आसरा या रब

(वसाइले बख़्शिश)

﴿6﴾ हज़रते शाह क़क्को आलम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم का हिफ़ज़े क़ुरआन

सिलसिलए सोहरवर्दिया के अज़ीम पेशवा, कुतबुल अक्ताब हज़रते सय्यिदुना रुक्ने आलम अबुल फ़त्ह शाह रुक्नुद्दीन सोहरवर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْفَرَى की उम्रे मुबारका चार साल चार माह चार दिन की हुई वलिये कामिल, गौसुल वक़्त, जद्दे अमजद हज़रते सय्यिदुना बहाउल हक्के वद्दीन ज़करिय्या मुल्तानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنَى ने “بِسْمِ اللَّهِ” पढ़ाई और वालिदे बुजुर्गवार क़िल्ला सदरुद्दीन आरिफ़ शरीफ़” पढ़ाई और वालिदे बुजुर्गवार क़िल्ला सदरुद्दीन आरिफ़

पेशक़श : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

बिल्लाह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने आप को कुरआने पाक हिफ़ज़ करवाना शुरू किया। आप का मा'मूल था कि कुरआन शरीफ़ का पाव पारह तीन मरतबा पढ़ते तो वोह आप को ज़बानी याद हो जाता।⁽¹⁾

﴿7﴾ कुरआन नाज़िरा पढ़ कर हिफ़ज़ हो गया

ताजदारे गोलड़ा हज़रते अल्लामा पीर सय्यिद मेहर अली शाह गोलड़वी चिश्ती निज़ामी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की सीरत में है कि आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने जब (नाज़िरा) कुरआने मजीद ख़त्म किया तो उस वक़्त सारा कुरआन आप को बिला इरादा हिफ़ज़ हो चुका था।⁽²⁾

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى اَمِيْنٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इन सब पर रहमत हो और इन के सदके हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

अल्लाह वालों के हैशत अंगेज़ हाफ़िज़े की 39 हिक्कयात

﴿1﴾ आप तो तबीब हैं !

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा नो'मान बिन साबित رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में से हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक और हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) और कमो बेश 16 ताबेईन (या'नी जिन्हों ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सोहबत पाई) से अहादीसे करीमा रिवायत की हैं। हर मस्अले के हल के लिये आप की ज़ात मरजए

1सीरते पाक हज़रते शाह रुक्नुद्दीन वल आलम, स. 10 मुलख़ब़सन

2मेहरे मुनीर, स. 65

ख़लाइक़ थी इसी खुसूसियत की वजह से आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** को बे मिसाल समझा जाता था । अपने वक़्त के अज़ीम मुहद्दिस हज़रते सय्यिदुना इमाम आ'मश सुलैमान बिन मेहरान **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** का शुमार इमामे आ'जम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم** के असातिज़ा में होता है जो न सिर्फ़ शहरे कूफ़ा बल्कि पूरे इराक़ में इल्मे हदीस के हवाले से मशहूर थे । एक दिन हज़रते सय्यिदुना इमाम आ'मश **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** से कुछ इल्मी सुवालात किये, जिस पर सय्यिदुना इमामे आ'जम **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने ऐसे इल्मी और फ़िक़ही जवाबात इरशाद फ़रमाए कि उस्तादे मोहतरम हैरान व शशदर रह गए, हज़रते सय्यिदुना इमाम आ'मश **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने अपने इस लाइक़ और हौनहार शागिर्द से पूछा : “आप ने येह जवाबात कहां से सीखे और समझे ?” सय्यिदुना इमामे आ'जम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم** ने फ़रमाया : “आप ने जो हमें फुलां फुलां रिवायात बयान कीं थीं बस उन्हीं की बुन्याद पर मैं ने येह जवाबात बयान किये हैं ।” हज़रते सय्यिदुना इमाम आ'मश **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** आप की खुदादाद कुव्वते हाफ़िज़ा और बे मिसाल फ़काहत देख कर बे साख़्ता पुकार उठे : आप तो तबीब हैं और हम आप की तजवीज़ कर्दा दवाओं को फ़रोख़्त करने वाले (या'नी आप कुरआनो हदीस के दलाइल से मसाइले शरइय्या निकालने वाले हैं और हम लोगों को बयान करने वाले ।)⁽¹⁾

1 ... الثقات لابن حبان، كتاب من روى عن اتباع التابعين، باب العين، ٣٣٢/٥، رقم: ٢٢٢٦

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे इमामे आ'जम अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की शान बड़ी निराली है, **اَبُو حَنِيفَةَ** ने आप को वोह इल्मी मक़ामो मर्तबा और इस क़दर बुलन्द मन्सबे इजतिहाद अता फ़रमाया था कि आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के ज़माने के उलमा और आप के असातिज़ा सब ही आप से मुतअस्सिर थे । मज़कूरए बाला वाक़िए से हज़रते सय्यिदुना इमाम आ'मश رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के दिल में आप का वोह मक़ाम पैदा हो गया कि इस के बा'द जब आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى से कोई सुवाल पूछता तो आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى इरशाद फ़रमाते : “इस मस्अले का जवाब तो अबू हनीफ़ा ही दे सकते हैं, मुझे महसूस होता है कि **اَبُو حَنِيفَةَ** ने उन के इल्म में बरकत दी है ।”(1)

﴿2﴾ इमाम औज़ाई ने तहसीन फ़रमाई

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'जम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की फ़काहत और बे मिसाल हाफ़िज़े का एक और वाक़िआ मुलाहज़ा फ़रमाइये :
चुनान्चे, उस्ताज़ुल मुहद्दिसीन इमाम अब्दुर्रहमान औज़ाई رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى जिन का शुमार बुलन्द पाया उलमा में होता है, एक दफ़आ आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'जम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم से चन्द सुवालात किये, इमामे आ'जम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने अपनी फ़िक़ही बसीरत की रौशनी में शानदार जवाबात इरशाद फ़रमाए । इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى उन जवाबात को सुन कर बहुत

मुतअस्सिर हुवे, आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** से दलील पूछी तो फ़रमाया :
 “मैं ने येह जवाबात आप ही की रिवायत कर्दा अहादीस की
 रौशनी में बयान किये हैं ।” हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई
رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم** के
 हाफ़िज़े और फ़िक्ही बसीरत पर बेहद हैरान हुवे और फ़रमाया :
 “तबीब तो आप लोग हैं हम तो सिर्फ़ दवा फ़रोश हैं ।”⁽¹⁾

﴿3﴾ एक लाख अशरफ़ियों पर तरजीह

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा
رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की कुव्वते हाफ़िज़ा का येह अ़ालम था कि आप
رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को हज़ारों हदीसें ज़बानी याद थीं और कुरआनो
 हदीस से मसाइले दीनिय्या निकालने में आप की मिसाल
 नहीं मिलती । आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** से हदीसे मुबारका सुनना
 लोग अपने लिये सअ़ादत समझते और इस पर बेहद मसरूर
 भी हुवा करते चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ मुहम्मद बिन
 मैमून **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : इमामे आ'ज़म **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم**
 के ज़माने में आप जैसा कोई अ़ालिम था न ही परहेज़गार,
 और न आप जैसा कोई अ़ारिफ़ और फ़कीह था, ख़ुदा की
 क़सम ! मुझे आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** से हदीस शरीफ़ सुन कर इतनी
 मसररत व ख़ुशी होती है जितनी एक लाख अशरफ़ियां (सोने
 के सिक्के) मिलने से भी नहीं होती ।⁽²⁾

1... مرقاة المفاتيح، شرح مقدمة المشكاة، ٤٢/١

2... الخيرات الحسان، الفصل الثالث عشر، ص ٢٩

«4» सब से बड़े हाफ़िज़े हदीस

हज़रते सय्यिदुना तमीम बिन मुन्तसिर رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन हारून رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बारगाह में हाज़िर था, दौराने गुफ़्तगू जब इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का ज़िक्रे ख़ैर हुवा तो एक बे अदब शख़्स ने आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के लिये कुछ नाज़ैबा कलिमात कहे, येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन हारून رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ गर्दन झुकाए कुछ देर ख़ामोश बैठे रहे, लोगों ने अज़र्ज की : **اَعَزَّوَجَلَّ** आप पर रहम फ़रमाए, आप हमें मुआमले की हकीकत से आगाह फ़रमाएं ? फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के औसाफ़ बयान करना शुरूअ किये : इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा मुत्तकी, पाकीज़ा शख़्सियत के मालिक और ज़बान के हृद दरजा सच्चे थे, दुन्या की हिर्स (लालच) से बे नियाज़ थे, अपने ज़माने में सब से बड़े हाफ़िज़े हदीस थे, मैं ने उन के हम ज़माना में से जितनों को भी पाया सब को येही कहते सुना कि “इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ सब से बड़े फ़कीह थे ।”⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم न सिर्फ़ फ़कीह और मुहद्दिस थे बल्कि मुज्ताहिद के दरजे पर भी फ़ाइज़ थे और एक मुज्ताहिद के लिये तमाम कुरआनी आयात का मअ उन के शाने नुज़ूल वाकिफ़ होना और तमाम

1... اخبار ابي حنيفة، نكر ماروي في زهد، ص ۲۸

अहदीसे करीमा की हकीकत से आगाह होना नीज़ उन दलाइले शरइय्या से मसाइले दीनिय्या निकालने पर क़ादिर होना शर्त है और बिलाशुबा हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म **رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَمُ عَلَيْهِ** में येह शराइत ब दरजए अतम पाई जाती थीं । इजतिहाद के इस अज़ीम दरजे पर फ़ाइज़ होने के लिये जहां बेहद ज़हीन होना ज़रूरी है वहीं बे पनाह कुव्वते हाफ़िज़ा का मालिक होना भी ना गुज़ीर है । हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म नो'मान बिन साबित **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के हाफ़िज़े में कुरआनो हदीस से माखूज़ हज़ारों दलाइल हर वक़्त मौजूद रहते और इसी की रौशनी में हर मस्अले का हल इरशाद फ़रमाते थे, येह ही वजह है कि आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** दुन्या में “इमामे आ'ज़म” के अज़ीम लक़ब से मशहूर हो गए ।

इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** का कुव्वते हाफ़िज़ा जिस तरह ज़ाहिरी उलूम (या'नी कुरआनो हदीस, फ़िक़ह वगैरा) के समन्दर को अपने अन्दर समोए हुवे था, इसी तरह बातिनी उलूम (इख़्लास, अजिज़ी, ज़ोहदो क़नाअत, सब्रो शुक्र वगैरा) के जाम भी आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की अमली ज़िन्दगी से छलकते थे, चुनान्चे, आप की ज़िन्दगी का येह पहलू भी मुलाहज़ा फ़रमाइये :

(1) ख़ौफ़े ख़ुदा से आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** इतना रोते कि पड़ोसियों को भी आप पर रहूँ आ जाता । (2) रियाकारी से बचने के लिये तरह तरह की तदाबीर इख़्तियार फ़रमाते । (3) जब आप पर कोई मस्अला वाज़ेह न होता तो **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में इस्तिग़फ़ार

करते । (4) बेकार और फुज़ूल बातों में न कभी ग़ौरो फ़िक्क़ फ़रमाते और न उन्हें सुनते । (5) ग़ीबत से दूर रहते । (6) ग़रीब और मोहताज मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही फ़रमाते, हाज़त मन्द त़लबा की कफ़ालत फ़रमाते, जैसी चीज़ अपने घर वालों के लिये ख़रीद फ़रमाते वैसी ही चीज़ अपने असातिज़ा के लिये भी ख़रीदते और उन्हें भिजवाते । (7) फुज़ूल बातों से बचने के लिये ज़ियादा तर ख़ामोश रहते । येह ही वज्ह है कि आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** जोहदो तक्वा और परहेज़गारी में भी अपना सानी न रखते थे, इमामे आ'ज़म **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم** की इन्ही पाकीज़ा सिफ़ात के सबब बड़े बड़े बुज़ुर्गाने दीन **رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّيِّئِينَ** फ़रमाया करते थे : तमाम मुसलमानों पर वाजिब है कि अपनी नमाज़ों में इमामे आ'ज़म के लिये दुआ करें क्यूंकि इन्हों ने हदीस व फ़िक्क़ह को महफूज़ रखा ।⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की मुबारक सीरत के इन गोशों से येह मा'लूम हुवा कि जब दिल रियाकारी, तक्ब्बुर, हसद, बुर्ज़ो कीना वगैरा की नुहूसत से पाको साफ़ हो, ख़ौफ़े खुदा, इख़्लास, अ़ाजिज़ी और मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही से दिल आबाद हो, तो फिर इन की बरक़त से ज़ेह्न के बन्द दरीचे और **عَزَّ وَجَلَّ** की अ़ताओं के दरवाज़े खुलते हैं और दिमागी कुव्वत में भी कई गुना इज़ाफ़ा हो जाता है ।

ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** इमामे आ'ज़म के सदके हमें ज़ाहिरी और बातिनी बीमारियों से नजात अता फ़रमा कर हमारे कुव्वते हाफ़िज़ा में बरकत अता फ़रमा । **اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ

﴿5﴾ मुत्तकी वालिदैद का ज़हीन तरीन फ़रज़ब्द

हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ** के शागिर्द हज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन इब्राहीम **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ** निहायत मुत्तकी और परहेज़गार थे । **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने आप को शुब्हात से पाक मालो दौलत (या'नी ऐसा माल जिस में मकरूह व हराम होने का ज़रा बराबर भी शाइबा न हो) से नवाज़ा था । 13 शव्वाल 194 हिजरी में **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने हज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन इब्राहीम **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ** को बेटे की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया, आप **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ** ने बेटे का नाम “मुहम्मद” रखा और येह ही “मुहम्मद बिन इस्माईल” आगे चल कर “इमाम बुख़ारी” के लक़ब से मशहूर हुवे ।

हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ** अभी छोटे ही थे कि इन के वालिद हज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन इब्राहीम **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ** इन्तिक्काल फ़रमा गए । आप **रَحْمَةُ اللّٰهِ तَعَالٰی عَلَیْہِ** की तरबियत की तमाम तर ज़िम्मेदारी आप **रَحْمَةُ اللّٰهِ तَعَالٰی عَلَیْہِ** की निहायत ही नेक और परहेज़गार वालिदा पर आ गई । बचपन में हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी **रَحْمَةُ اللّٰهِ तَعَالٰی عَلَیْہِ** को एक और तकलीफ़ पहुंची कि आप की

बीनाई चली गई, जिस की वजह से आप की वालिदा शदीद ग़म से दो चार हो गई, परेशानी के आलम में इन्होंने ने रो रो कर दुआएं की और बारगाहे इलाही में फ़रयादी हुई। इन दुआओं की क़बूलिय्यत का असर यूँ ज़ाहिर हुवा कि एक रात जब इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की वालिदए माजिदा सोई तो इन्हें ख़्वाब में हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम खलीलुल्लाह عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की ज़ियारत हुई, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने खुश बख़्त बेटे की बीनाई वापस आने की खुश ख़बरी सुनाई, सुब्ह वोह ख़्वाब हकीकत में बदल गया और इस तरह इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की आंखों में दोबारा बसारत का नूर पैदा हो गया। नेक वालिदा की परवरिश और हलाल रिज़क़ खिलाने की बरकत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को हैरत अंगेज़ हाफ़िज़ा अता फ़रमाया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने दस साल की छोटी उम्र में ही इल्मे हदीस हासिल करना शुरू कर दिया और सिर्फ़ एक साल में मतने हदीस और सनदे हदीस पर इतना उबूर हासिल कर लिया कि बा'ज़ औकात आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के असातिज़ा भी अपने बयान कर्दा मतन व सनद की दुरुस्ती के लिये आप की मदद हासिल करते।⁽¹⁾

﴿6﴾ सत्तर हज़ार हदीसों का कम सिन हाफ़िज़

हुसूले इल्म के इब्तिदाई ज़माने में हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने सत्तर हज़ार अहादीस याद फ़रमा ली थीं

① ... فتح الباری، الفصل العاشر، ذکر نسبہ و مولدہ۔ الخ، ۱/ ۳۵۲

चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सलाम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन मुजाहिद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से फ़रमाया : अगर आप कुछ देर पहले आ जाते तो मैं आप को वोह बच्चा दिखाता जो सत्तर हज़ार (70,000) हदीसों का हाफ़िज़ है। येह हैरत अंगेज़ बात सुन कर हज़रते सय्यिदुना सुलैमान رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के दिल में आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से मुलाक़ात का शौक पैदा हुवा, चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सलाम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की मजलिस से फ़राग़त के बा'द आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को तलाश करना शुरू कर दिया, जब मुलाक़ात हुई तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : क्या सत्तर हज़ार अह़ादीस के हाफ़िज़ आप ही हो ? येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अर्ज़ की : “जी हां, मैं ही वोह हाफ़िज़ हूं, बल्कि मुझे इस से भी ज़ियादा अह़ादीस याद हैं और जिन सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और ताबेईन أَجْمَعِينَ और ताबेईन أَجْمَعِينَ से मैं हदीस रिवायत करता हूं उन में से अक्सर तारीख़े पैदाइश, रिहाइश और तारीख़े वफ़ात से भी वाकिफ़ियत रखता हूं।”⁽¹⁾

﴿7﴾ एक हज़ार हदीसों ज़बानी बयान फ़रमा दीं

हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपनी बे पनाह कुव्वते हाफ़िज़ा से भरपूर फ़ाइदा उठाया और छे साल हिजाज़े मुक़द्दस (अरब शरीफ़ का वोह हिस्सा जिस में मक्काए मुकर्रमा,

1 ... ارشاد الساری، مقدمة المؤلف، الفصل الخامس فی ذکر نسب البخاری... الخ، 59/1

मदीना मुनव्वरा और त़ाइफ़ के अलाके शामिल हैं) में मुक़ीम रह कर ख़ूब इक़तिसाबे इल्म फ़रमाया । हुसूले इल्मे दीन के लिये आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने कई सफ़र इख़्तियार फ़रमाए, दो मरतबा मिस्र और शाम, चार मरतबा बसरा और कई दफ़आ (इराक़ के शहर) कूफ़ा और बग़दाद भी तशरीफ़ ले गए ।⁽¹⁾ एक मरतबा आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** बलख़ (ख़ुरासान के एक मशहूर शहर) तशरीफ़ ले गए, लोगों ने आप से हदीस सुनाने की फ़रमाइश की तो आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने एक हज़ार अहादीस ज़बानी बयान फ़रमा दीं ।⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** इस क़दर क़वी हाफ़िज़ा रखने और अपने मुअ़सिरीन (या'नी अपने ज़माने के उलमा) में बुलन्द मक़ाम हासिल करने के बा वुजूद दुन्यवी लज़ज़तों और ऐशो इशरत से कोसों दूर रहते थे । नेक होने के सबब गुनाहों से तो बचते ही थे मगर शुब्हात (या'नी ऐसी चीज़ें जिन का हलाल व ह़राम होना मुश्तबा हो उन) से बचना आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** को अपने वालिद से विरासत में मिला था । आप लोगों के हुज़ूम में होते या तन्हाई में, हर वक़्त **عَزَّوَجَلَّ** का ख़ौफ़ त़ारी रहता, जिस तरह आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** हुकूकुल्लाह की अदाएगी में बे मिसाल थे उसी तरह हुकूकुल इबाद की पासदारी में भी अपनी मिसाल आप थे, ज़बान को ग़ीबत से महफूज़ रखते चुनान्चे, आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** खुद फ़रमाते हैं : “मुझे उम्मीद है कि जब मेरी बारगाहे इलाही में हाज़िरी

१ ... سير اعلام النبلاء، ابو عبد الله البخارى - النخ، १०/ २८५

२ ... سير اعلام النبلاء، ابو عبد الله البخارى - النخ، १०/ २८९

होगी तो **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** मेरा हिसाब नहीं लेगा क्योंकि मैं ने आज तक कभी किसी की गीबत नहीं की।”⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लुक़्मए हलाल, नेक वालिदैन की परवरिश, दुन्यवी लज़्ज़तों से दूरी, **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** का ख़ौफ़, ज़बान की हिफ़ाज़त करते हुवे गीबत से परहेज़ और इन जैसे दीगर अच्छे आ’माल हमारे दिलो दिमाग़ के लिये मुफ़ीद तरीन रूहानी ग़िज़ाएं हैं। इन की बरकत से इन्सान का ज़ेहन यक्सूई पाता है, क़ल्बी बे चैनी से नजात हासिल करता है और आ’ज़ा पुर सुकून रहते हैं और दाइमी मुतालाए पर कुव्वत हासिल होती है। हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के नज़दीक “मुकम्मल तवज्जोह और दाइमी मुतालाआ” कुव्वते हाफ़िज़ा के लिये बेहद ज़रूरी हैं चुनान्चे, आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** से किसी ने पूछा : क्या हाफ़िज़े को क़वी करने के लिये भी कोई दवा है ? आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने फ़रमाया : दवा का तो मुझे मा’लूम नहीं, अलबत्ता आदमी के इन्हिमाक और दाइमी मुतालाए को मैं ने कुव्वते हाफ़िज़ा के लिये मुफ़ीद तरीन पाया है।⁽²⁾

﴿8﴾ शौक़ और लगन ते मुश्किलात आसान कर दीं

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي** को **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने बे पनाह इल्म के साथ अमल की तौफ़ीक़ से नवाज़ कर बुलन्द मक़ामो मर्तबा अता फ़रमाया था।

1... فتح الباری، الفصل العاشر، ذکر سیرتہ و شمائلہ... الخ، ۴۵۵/۱

2... فتح الباری، الفصل العاشر، ذکر جمل الاخبار الشاہدۃ... الخ، ۴۶۰/۱

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को हुसूले इल्मे दीन का इस क़दर शौक़ था कि यतीम हो जाने और गुर्बत व इफ़लास के बावजूद आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने राहे इल्म को इख़्तियार फ़रमाया और इस राह में आने वाली रुकावटों को मुस्तक़िल मिज़ाजी के साथ इल्मे दीन हासिल करते हुवे पार करते चले गए। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अपने इस बुलन्द हौसले की दास्तान ख़ुद बयान फ़रमाते हैं : “मक्तब में उस्ताद साहिब कोई बात किसी बच्चे को ज़ेहन नशीन कराते तो मैं बहुत ध्यान से उन की बातें सुनता, यूँ मुझे उस्ताद साहिब की बात लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ याद हो जाती, चूँकि मैं यतीम था, मेरी वालिदा के पास ता’लीम दिलाने के लिये पैसे न थे लेकिन मैं ने उस्ताद साहिब से येह तै कर लिया था कि मैं उन की ग़ैर मौजूदगी में उन के बच्चों की देख भाल करूँगा, त़लबा उस्ताद साहिब की गुफ़्तूगू लिखा करते थे और जब उस्ताद साहिब इम्ला करवा के फ़ारिग़ होते, तो मैं लिखने के साथ साथ उन तमाम बातों को याद भी कर चुका होता था।”⁽¹⁾

मज़ीद फ़रमाते हैं : “जब मैं ने कुरआने करीम हिफ़ज़ कर लिया तो मस्जिद में उलमा की महाफ़िल में हाज़िर होने लगा, इस की बरकत से मैं हदीसे पाक या कोई शरई मस्अला याद कर लिया करता। फिर लिखने के लिये कोई हड्डी तलाश करता और उस पर हदीस शरीफ़ या दीनी मस्अला लिख कर एक थैली में महफूज़ कर लेता।”⁽²⁾

① ... ترتيب المدارك، ابتداء طلبه وحفظه، ۲۲۲/۱

② ... حلیة الاولیاء، الامام الشافعی، نکر بیان نسبہ و مولده و وفاته، ۸۲/۹

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ने आप को बे मिसाल कुव्वते हाफिज़ा से भी नवाज़ा था । शौक़, लगन और अज़मे जवां ने हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के हाफिज़े को चार चांद लगा दिये थे, येही वज्ह है कि आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने इमाम मालिक **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की बारगाह में हाज़िर होने से पहले ही मोअत्ता इमाम मालिक (इमाम मालिक की तहरीर कर्दा अह्दादीसे करीमा का मजमूआ) हिफ़ज़ फ़रमा ली थी और उस वक़्त आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की उम्र मुबारक सिर्फ़ बारह साल थी ।⁽¹⁾

﴿9﴾ आस्माने इल्म का चमकता दमकता सिताबा

कुव्वते हाफिज़ा की इस ने'मते ख़ुदावन्दी को हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي** ने हुसूले इल्मे दीन में सर्फ़ फ़रमाया । **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने इस मेहनत की बदौलत आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** को वोह बुलन्द मक़ामो मर्तबा अता फ़रमाया कि फ़िक़ह के चार इमामों में आप का शुमार होता है । आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़िक़हे शाफ़ेई के इमाम की हैसियत से मुस्लिमे दुन्या में जाने और पहचाने जाते हैं और कई जलीलुल क़द्र मुफ़स्सरीन व मुह़द्दीसीन फ़िक़ह में आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के मुक़ल्लिद (या'नी पैरूकार) हैं । हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** सिर्फ़ याद कर लेने को ही काफ़ी नहीं समझते

1 ... حلیة الاولیاء، الامام الشافعی، نکر بیان نسبہ و مولدہ و وفاتہ، 4/8

थे बल्कि आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के नज़दीक फ़ाइदा मन्द इल्म वोही था जिस पर अमल भी किया जाए चुनान्चे, खुद फ़रमाते हैं :
الْعِلْمُ مَا نَفَعَهُ، لَيْسَ الْعِلْمُ مَا حُفِظَ या'नी इल्म वोही है जो नफ़अ पहुंचाए, इल्म वोह नहीं जो सिर्फ़ याददाश्त में महफूज़ हो जाए।⁽¹⁾

इल्मे नाफ़ेअ की चमक दमक आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की ज़िन्दगी के हर गोशे में वाज़ेह नज़र आती है। हाज़त मन्दों की ख़ैर ख़्वाही आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की अ़ादाते मुबारका में शामिल थी। इबादत का ऐसा ज़ौक़ शौक़ था कि रमज़ान के नवाफ़िल में साठ मरतबा कुरआने करीम ख़त्म फ़रमाया करते थे।⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के इख़लास का येह अ़ालम था कि अपनी तह़रीर कर्दा किताबों से मुतअल्लिक़ फ़रमाया करते :
وَدِدْتُ أَنَّ الْخَلْقَ يَتَعَلَّمُونَ هَذَا الْعِلْمَ وَلَا يُنْسَبُ إِلَيَّ مِنْهُ شَيْءٌ या'नी मेरी ख़्वाहिश है कि मेरी किताबों से लोग इल्मे दीन हासिल करें लेकिन उन किताबों को मेरी जानिब मन्सूब न करें।⁽³⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़ेह्न में महफूज़ इल्मे दीन के मदनी फूल उसी सूरत में फ़ाइदा देंगे जब उस की खुशबू हमारे अमल से ज़ाहिर हो और दीगर मुसलमान उस से मुस्तफ़ीज़ हों। हमारे

① ... سير اعلام النبلاء، الامام الشافعي --- الخ، ٢١٤/٨

② ... سير اعلام النبلاء، الامام الشافعي --- الخ، ٣٩٠/٨

③ ... حلية الاولياء، الامام الشافعي، نكريبان نسبه ومولده ووفاته، ١٢٦/٩

अस्लाफ़ अपने इल्म पर अमल करते, दिन रात कुरआने करीम की तिलावत में बसर फ़रमाते और इबादतों रियाज़त के ज़रीए तौशए आख़िरत इकठ्ठा करते, हमें उन की पैरवी करनी चाहिये, नेक आ'माल में इज़ाफ़े की जुस्तजू के लिये अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** के अताक़र्दा मदनी इन्आमात पर अमल करना बेहद मुफ़ीद है इस की बरकत से न सिर्फ़ नेकियों की तौफ़ीक़ मिलेगी बल्कि इन में इज़ाफ़े का शौक़ भी पैदा होगा । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿10﴾ उस्ताद की तमाम बातों को ज़ेह्न में महफूज़ कर लिया

हज़रते सय्यिदुना हुशैम **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के पहले उस्ताद हैं, इमाम अहमद बिन हम्बल **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** एक अर्से तक हज़रते सय्यिदुना हुशैम **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की सोहबते बा बरकत में इक्तिसाबे इल्मे दीन फ़रमाते रहे । जिस वक़्त हज़रते सय्यिदुना हुशैम **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** का इन्तिक़ाल हुवा उस वक़्त इमाम अहमद बिन हम्बल **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की उम्र मुबारक बीस साल थी और जो कुछ आप ने अपने उस्तादे मोहतरम से सुना था वोह तमाम का तमाम आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने अपने ज़ेह्न में महफूज़ फ़रमा लिया था चुनान्वे, आप खुद फ़रमाते हैं : जब मैं बीस साल का था तो हज़रते सय्यिदुना हुशैम **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** का

इन्तिकाल हो गया, मैं ने आप से सुनी हुई तमाम बातों को अपने ज़ेहन में महफूज़ कर लिया था ।⁽¹⁾

«11» हज़ारहा हदीसों याद फ़रमा लिया करते

हिफ़ज़े हदीस में भी हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की शान निराली है चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू जुरआ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने एक रोज़ हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के साहिब ज़ादे हज़रते अब्दुल्लाह बिन अहमद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से इरशाद फ़रमाया : आप के वालिद हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हज़ारहा अहादीस याद फ़रमा लिया करते थे ।⁽²⁾

«12» जो सुनते याद फ़रमा लेते

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन अम्र رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू जुरआ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से पूछा : ऐ अबू जुरआ ! आप का हाफ़िज़ा ज़ियादा क़वी है या इमाम अहमद बिन हम्बल (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) का ? इरशाद फ़रमाया : इमाम अहमद बिन हम्बल رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का हाफ़िज़ा मुझ से ज़ियादा क़वी है । हज़रते सय्यिदुना सईद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَجِيد ने फ़रमाया : आप को कैसे मा'लूम हुवा ? फ़रमाया : मैं ने सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

1 ... سير اعلام النبلاء، احمد بن حنبل، ۴۳۸/۹

2 ... سير اعلام النبلاء، احمد بن حنبل، ۴۴۰/۹

की किताबें देखीं हैं, इन की इब्तिदा में जो अहदीसे मुबारका आप ने बयान की हैं उन के रावियों के नाम मज़कूर नहीं हैं और येह इस वजह से है कि सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हदीसे मुबारका का जो हिस्सा सुन लेते हैं उसे अपनी याददाश्त में महफूज़ फ़रमा लेते हैं और येह मेरे बस से बाहर है।⁽¹⁾

«13» कुव्वते हाफ़िज़ा से लोगों को फ़ाइदा

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के ज़ेहन में कुरआनो हदीस की खुशबू रच बस गई थी इसी लिये आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की मजालिस इल्मो हिक्मत के मदनी फूलों से महका करतीं और आप की सोहबत में बैठने वालों का ज़ेहन मुअत्तर हो जाया करता था चुनान्वे, हदीस के एक बुलन्द पाया इमाम हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू दावूद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की मजालिस दर हकीकत आख़िरत की याद दिलाने वाली होती थीं, उस में किसी किस्म की दुन्यवी गुफ़्तगू न होती, मैं ने आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को (उन मजालिस के इलावा भी कभी) दुन्या के ज़िक्र में मशगूल नहीं पाया।⁽²⁾

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

1 ... سير اعلام النبلاء، احمد بن حنبل، ۴/۹

2 ... سير اعلام النبلاء، احمد بن حنبل، ۴/۹

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** को मिलने वाला मक़ामो मर्तबा यकीनन आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के खुलूसे निय्यत के साथ दीने मतीन की ख़िदमत का कीमती इन्आम था । आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने ज़िन्दगी भर दीने इस्लाम की ख़िदमत की और उम्मत को शरई अहक़ाम से आगाह किया, दीन को अपना ओढ़ना बिछौना बनाया और इसी को अपना सब कुछ जाना । अस्लाफ़ की सीरत के येह पहलू हमारे लिये मशअले राह और आख़िरत की नजात का ज़रीआ है । **دَا'وَتَةُ الْحَمْدِ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** दा'वते इस्लामी मुसलमानों को इसी नजात से बहरावर कराने के लिये शबो रोज़ मसरूफ़े अमल है, नेक बनने और सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल किसी ने'मत से कम नहीं, आप भी मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाए, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दो जहां में बेड़ा पार होगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿14﴾ इल्म तफ़सीर, मगाज़ी और अख़्यामे अरब के हाफ़िज़

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ या'कूब बिन इब्राहीम अन्सारी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** सिराजुल अइम्मा हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'जम अबू हनीफ़ा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के लाइक़, फ़ाइक़ शागिर्दों में

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

से एक हैं । आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने सय्यिदुना इमाम आ'ज़म **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की सोहबते बा बरकत में सतरह साल गुज़ारे और इल्मे दीन की मनाज़िल तै फ़रमाई ।⁽¹⁾

اَللّٰهُ **عَزَّوَجَلَّ** ने आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** को बे पनाह हाफ़िज़ा अता फ़रमाया था और आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने भी इस खुदादाद सलाहियत को उलूमे दीनिय्या के हुसूल में सर्फ़ फ़रमाया, हज़रते सय्यिदुना हिलाल **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** इल्मे तफ़सीर, इल्मे मगाज़ी और अय्यामे अरब के हाफ़िज़ थे और इन उलूम में से एक फ़िक़ह भी है ।⁽²⁾

हज़रते अल्लामा इब्ने अब्दुल बर **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने भी आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** को हाफ़िज़ का लक़ब दिया । याद रहे हाफ़िज़ उसे कहा जाता है जो एक लाख अहादीस को सनदन व मतनन रावियों के अहवाल के साथ जानता हो ।⁽³⁾

﴿15﴾ जिस्म बीमार लेकिन हाफ़िज़ा सिद्दहत मब्द

एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** सफ़रे हज़ के दौरान बीमार हो गए तो आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने एक जगह क़ियाम फ़रमाया, अपने ज़माने के अज़ीम मुहद्दिस हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उयैना **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** भी क़रीब तशरीफ़ फ़रमा थे, उन्हें

① ... سير اعلام النبلاء، القاضي أبو يوسف، الخ، ٤/٤٠٨

② ... سير اعلام النبلاء، القاضي أبو يوسف، الخ، ٤/٤٠٨

③ ... وفيات الاعيان، القاضي أبو يوسف، الخ، ٣/٣٨٩

जब आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की बीमारी का इल्म हुवा तो इयादत के लिये तशरीफ़ ले आए, हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने वहां मौजूद लोगों से इरशाद फ़रमाया : अबू मुहम्मद (येह हज़रते सुफ़यान बिन उयैना की कुन्यत है) से इल्मे हदीस हासिल करो । चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उयैना **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने चालीस अहादीसे मुबारका बयान फ़रमाई, जब हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उयैना **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** वहां से तशरीफ़ ले गए तो हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने लोगों से फ़रमाया : जो रिवायतें सुफ़यान बिन उयैना (**رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ**) ने बयान की हैं वोह मुझ से भी सुन लो, येह फ़रमा कर आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने शदीद बीमारी व कमजोरी और सफ़र की थकन के बा वुजूद महज़ अपने हाफ़िज़े की बुन्याद पर वोह चालीस की चालीस अहादीस बयान फ़रमा दीं ।⁽¹⁾

﴿16﴾ जिन के हाफ़िज़े से दूसरे श्री मुस्तफ़ीद होते

हज़रते सय्यिदुना अबू मुआविया **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : मैं और इमाम अबू यूसुफ़ इल्मे हदीस के लिये हज़रते सय्यिदुना हज्जाज बिन अरताह **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की बारगाह में हाज़िर होते । आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** हमें अहादीस लिखवाया करते थे और इमाम अबू यूसुफ़ **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** उन रिवायात को अपनी याददाश्त में महफूज़ करते थे । फिर जब हज़रते सय्यिदुना हज्जाज **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ**

1 ... اخبار ابي حنيفة، اخبار الامام ابي يوسف و تكملة له، ص 100

तशरीफ़ ले जाते तो हम हज़रते इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के हाफ़िज़े की मदद से उन अहादीस को लिखा करते ।⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का हाफ़िज़ा मिसाली था । किसी ने आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को हाफ़िज़े हदीस कहा तो किसी ने हदीस के इम्ला के लिये आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की तरफ़ रुजूअ करने का मदनी मश्वरा दिया और हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने तो आप को सब से ज़ियादा इल्म वाला क़रार दिया ।⁽²⁾

﴿17﴾ सात दिन में क़ुरआन हिफ़ज़ कर लिया

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन हसन शैबानी قُدْسِ سِرُّهُ السَّامِي भी इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के हौनहार तलामिज़ा में से एक हैं । जब आप ने इल्मे दीन हासिल करने का इरादा फ़रमाया तो अपने वक़्त के अज़ीम व बे मिसाल मुअल्लिम हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की इल्मी दर्सगाह का इन्तिखाब फ़रमाया हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इन की कम उम्र की वजह से पहले क़ुरआने करीम हिफ़ज़ करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया । आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ वापस तशरीफ़ ले गए, लेकिन सात दिन ही गुज़रे थे कि इमाम मुहम्मद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फिर हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم की बारगाह में

1 ... اخبار ابي حنيفة، اخبار الامام ابي يوسف وذكر نسبه، ص 101

2 ... سير اعلام النبلاء، القاضى ابو يوسف - الخ، 4/408

पहुंच गए । इमामे आ'जम **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने आप को देख कर फ़रमाया : मैं ने कहा था कि आप पहले कुरआन शरीफ़ हिफ़ज़ करें फिर आइयेगा । आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने निहायत अदब से अर्ज़ की : मैं कुरआने पाक हिफ़ज़ कर चुका हूँ ।⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'जम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** आप की कुव्वते हाफ़िज़ा देख कर बेहद मुतअस्सिर हुवे और आप को अपनी शागिर्दी में क़बूल फ़रमा लिया, बा'दे अज़ां हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'जम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم** की सोहबत में कई साल रह कर इल्मी, अख़्लाकी और रूहानी फैज़ान से मुस्तफ़ीज़ होते रहे ।

﴿18﴾ शारिफ़ मसाइल हल करने का अनोखा अब्दाज़

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيم** जैसे जलीलुल क़द्र इमाम का शुमार हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के शागिर्दी में होता है । एक मरतबा इमाम शाफ़ेई **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने अपने उस्ताद हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के यहां एक रात क़ियाम फ़रमाया, जब रात हुई तो इमाम शाफ़ेई **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** नवाफ़िल की अदाएगी के लिये **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में खड़े हो गए जब कि हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** बिस्तर पर ही आराम फ़रमा रहे, जब फ़ज़्र का वक़्त हुवा तो इमाम मुहम्मद **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने वुजू किये बिग़ैर नमाज़ अदा फ़रमाई,

इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को इस पर बेहद तअज्जुब हुवा, आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से बे वुजू नमाज़ अदा करने का सबब पूछा तो हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : आप ने सारी रात नवाफ़िल अदा कर के फ़क़त अपने लिये अमल किया जब कि मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तमाम उम्मत के लिये येह अमल किया कि सारी रात बिस्तर पर लेटे लेटे कुरआन शरीफ़ से मसाइले दीनिय्या निकालता रहा और इस रात मैं ने हज़ार से जाइद मसाइल का इस्तिख़राज किया है ।” हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : जब मैं ने आप का येह जवाब सुना, तब से ही मैं अपनी शब बेदारी पर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की शब बेदारी को तरजीह देता हूँ ।⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सात दिन में कुरआन शरीफ़ हिफ़ज़ करना और एक रात में महूज़ अपनी याददाश्त की बुन्याद पर कुरआने मजीद से हज़ार मसाइले शरइय्या निकालना उसी शख़्स के लिये मुमकिन है जिस का हाफ़िज़ा ग़ैर मा'मूली हो, चूँकि हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बे मिसाल हाफ़िज़े के मालिक थे इस लिये येह कारनामा आप ही के हिस्से में आया । इल्मे दीन हासिल कर के उस में ग़ौरो ख़ौज़ करना बहुत अहम्मिय्यत का हामिल है, जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अइशा

सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : इल्म की ज़ियादती इबादत की ज़ियादती से बेहतर है और दीन की अस्ल परहेज़गारी है ।⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मुझ से रसूले करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! अगर तुम सुब्ह उठ कर कुरआने मजीद की एक आयत का इल्म हासिल करो तो वोह तुम्हारे लिये सौ (100) रकअत नमाज़े नफ़ल पढ़ने से अफ़ज़ल है और अगर तुम सुब्ह उठ कर इल्म का एक बाब (CHAPTER) पढ़ लो, ख़्वाह उस पर अमल करो या न करो तो वोह एक हज़ार रकअत नफ़ल पढ़ने से अफ़ज़ल है ।⁽²⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इल्मे दीन की इसी अहम्मियत के पेशे नज़र दा'वते इस्लामी के तहत “जामिअतुल मदीना (लिल बनीन और लिल बनात) का क़ियाम अमल में लाया गया है जहां बे शुमार इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें चश्मए इल्म से सैराब हो रहे हैं, दा'वते इस्लामी का पाकीज़ा सुन्नतों भरा मदनी माहोल अख़्लाक व किरदार संवारने में मजीद चार चांद लगा देता है, आइये ! आप भी “जामिअतुल मदीना” में दाख़िला ले लीजिये, अपने बच्चों को दाख़िल करवाइये, अपने अज़ीज़ो अक़ारिब को

1 ... مشکاة المصابيح، کتاب العلم، الفصل الثالث، ۶۸/۱، حدیث: ۲۵۵، ملقطاً

2 ... ابن ماجه، کتاب السنه، باب فی فضل من تعلم القرآن وعلمه، ۱۴۲/۱، حدیث: ۲۱۹

दाखिला लेने की तरगीब दिलाइये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इल्म का नूर हमारे मुआशरे से जहालत की सियाही को काफूर कर देगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿19﴾ सय्यिदुल हुफ़फ़ाज़ का हैरत अंगेज़ हाफ़िज़ा

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के उस्ताद हज़रते सय्यिदुना इस्हाक़ बिन राहवया **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** का शुमार जलीलुल क़द्र मुहद्दिसीने किराम में होता है । **اللَّهُ** ने आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** को भी हैरान कुन हाफ़िज़ा अता फ़रमाया था । आप की इसी अज़मत के पेशे नज़र इमाम ज़हबी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْفَى** ने आप को शैख़ुल मशरिफ़ (मशरिफ़ का सब से बड़ा आलिम) और सय्यिदुल हुफ़फ़ाज़ (हाफ़िज़ों का सरदार) के लक़ब से याद फ़रमाया है ।⁽¹⁾

एक मरतबा अमीर अब्दुल्लाह बिन त़ाहिर के दरबार में हज़रते सय्यिदुना इमाम इस्हाक़ बिन राहवया **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की एक आलिम साहिब से किसी इल्मी मस्अले में गुफ़्तू जारी थी, इसी दौरान एक किताब की इबारत पर दोनों में इख़िलाफ़ हुवा तो हज़रते सय्यिदुना इमाम इस्हाक़ बिन राहवया **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने अमीर अब्दुल्लाह बिन त़ाहिर से वोह किताब मंगवाने के लिये इरशाद फ़रमाया, जब किताब आ गई तो आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने अमीर से फ़रमाया :

1 ... سير اعلام النبلاء، اسحاق بن راهويه - الخ، ٥٢٤/٩

“इस किताब का सफ़ह नम्बर ग्यारह और लाइन नम्बर सात मुलाहज़ा फ़रमा लें आप को मा’लूम हो जाएगा कि जो मैं कह रहा हूं वोही दुरुस्त है।” जब अमीर अब्दुल्लाह ने किताब का येह मक़ाम देखा तो आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की बात को दुरुस्त पाया, इस पर वोह बेहद हैरान हो कर कहने लगा : “मैं आप के अज़ीमुश्शान हाफ़िज़े का तो पहले ही मो’तरिफ़ था लेकिन इस से ज़ियादा मुझे आप के इस मुशाहदे पर हैरत है।”⁽¹⁾

अमीर अब्दुल्लाह बिन ताहिर ने एक दिन आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** से इस क़वी हाफ़िज़े का सबब पूछ ही लिया और कहा : मुझे पता चला है कि आप हाफ़िज़ा मज़बूत करने के लिये “बलाजुर” नामी शरबत नोश फ़रमाते हैं ? आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने इरशाद फ़रमाया : “मैं ने कभी इस तरह की चीज़ों में ज़रा बराबर दिलचस्पी नहीं ली (या’नी येह अताए इलाही है जिस में किसी खाने पीने वाली चीज़ का कोई अमल दख़ल नहीं)”⁽²⁾

हब सुनी हुई बात याद हो जाती

एक मौक़अ पर आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने अपने हाफ़िज़े के मुतअल्लिक़ इरशाद फ़रमाया : मैं जो भी सुन लेता हूं मुझे वोह चीज़ याद हो जाती है और मैं याद की हुई कोई भी बात, कभी नहीं भूलता।⁽³⁾ येह ही वजह है कि आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने फ़रमाया : मुझे

① ... تاريخ ابن عساکر، ۱۳۷/۸

② ... سير اعلام النبلاء، اسحاق بن راهويه... الخ، ۵۵۳/۹

③ ... تاريخ ابن عساکر، ۱۳۸/۸

सत्तर हजार (70,000) अहादीसे मुबारका इस तरह याद हैं कि गोया वोह मेरे पेशे नज़र हैं।⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **اَللّٰهُمَّ** की तरफ़ से मिलने वाली मज़बूत कुव्वते हाफ़िज़ा की अज़ीम ने'मत को आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** ने भी इल्मे दीन की खिदमत में सर्फ़ फ़रमाया और यूं आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** हर खासो अ़ाम में मक्बूल हो गए। जब कभी आप का ज़िक्रे ख़ैर होता कोई आप की सलाहियत का ए'तिराफ़ करता तो कोई रश्क का इज़हार करता जैसा कि हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन यहूया **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** ने हज़रते सय्यिदुना इस्हाक़ बिन राहवया **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** की ज़िन्दगी के एक दिन को अपनी तमाम उम्र से ज़ियादा महबूब जाना और इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब फ़र्रा **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** ने आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** की फ़काहत और इल्म को बे मिसाल क़रार दिया।⁽²⁾

येह हकीक़त है कि जिस ने भी दीने इस्लाम की खिदमत और तरवीजो इशाअत के लिये कोशिशें की हैं वोह दुन्या में तो सुख़रू हुवा है, आख़िरत में भी उस के लिये जन्नत का वा'दा है।

① ... المنتظم، ثم دخلت ثمان وثلاثين ومائتين، ٢٦٠/١١

② ... سيرة اعلام النبلاء، اسحاق بن راهويه... الخ، ٥٥٣/٩

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे अस्लाफ़ ज़िन्दगी भर हुसूले इल्मे दीन के साथ दर्सी तदरीस में मशगूल रहे और नेकी की दा'वत के ज़रीए उम्मत की इस्लाह भी फ़रमाते रहे, इन का हर अमल महज़ रिज़ाए इलाही के लिये होता और इन का कोई लम्हा फ़िक़रे आख़िरत से ख़ाली न होता। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : **الْبِرْكَةُ مَعَ الْكَابِرِكُمْ** या'नी बरकत तुम्हारे अकाबिरीन (बुजुर्गाने दीन, उलमा, औलिया) की पैरवी में है।⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि हमारी कामयाबी व कामरानी इसी में है कि हम ज़िन्दगी के हर मुआमले में अपने अस्लाफ़ की पैरवी करें और इन की तरह सामाने आख़िरत इक़ठा करने की फ़िक़्र करें, फ़ी ज़माना गुनाहों का दौर दौरा है और नेकियां करना बेहद मुश्किल हो गया है, अव्वल तो शैतान नेक राह की तरफ़ आने नहीं देता और फिर किस्मत से नमाज़ें पढ़ने, दाढ़ी रखने और सुन्नतें अपनाने की तौफ़ीक़ मिल जाए तो ग़ाफ़िल लोग इस राह में आड़े आते हैं, दोस्त अहबाब बातें बना कर शैतान की चालों को कामयाब बनाते हैं, **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल दौरे हाज़िर में किसी ने'मत से कम नहीं, जहां न सिर्फ़ इस्लाम की तरह ज़िन्दगी अपनाने का ज़ेहन दिया जाता है बल्कि शैतान को नाकाम करने का तरीक़ा भी सिखाया जाता है, इख़लास की

1 ... مستدرک حکم، کتاب الایمان، البرکة مع اکابرکم، ۲۳۸/۱، حدیث: ۲۱۸

दौलत मिलती है और इस्तिफ़ामत हासिल होती है, आप भी मदनी माहौल से वाबस्ता हो कर अशिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नत की शाहराह पर गामज़न हो जाइये ।

﴿20﴾ क़ुव्वते हाफ़िज़ा की बदौलत उम्मत की ख़ैब ख़ाही

अरबी ज़बान की ग्रामर सीखने में जिन दो बुन्यादी उलूम का सहारा लिया जाता है वोह “सर्फ़” और “नह्व” हैं, इल्मे नह्व में इमाम का दरजा पाने वाले हज़रते सय्यिदुना ख़लील नह्वी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ निहायत इबादत गुज़ार और अज़िज़ी व इन्क़िसारी के पैकर थे । हज़रते सय्यिदुना ख़लील नह्वी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को दुन्यवी लज़्ज़ात में कोई रग़बत न थी, सब्र व क़नाअत जैसी अज़ीम ख़ूबियां आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ में पाई जाती थीं, चुनान्चे, मन्कूल है कि हाकिमे वक़्त ने अपने बच्चों की तरबियत के लिये आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बारगाह में अपना एक क़ासिद भेजा, क़ासिद ने जब हाकिमे वक़्त की अर्ज़ आप की बारगाह में पेश की तो आप ने खुश्क़ रोटी निकाली और क़ासिद को दिखा कर फ़रमाया : जब तक येह रोटी का टुकड़ा मुयस्सर है, मुझे सुलैमान (हाकिमे वक़्त) से कोई हाज़त नहीं ।”⁽¹⁾

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप को बे मिसाल हाफ़िज़ा भी अता फ़रमाया था चुनान्चे, एक तबीब आंख की बीमारी के लिये कोई ख़ास दवा दिया करता था जिस से लोगों को जल्द शिफ़ा मिल जाती थी । जब उस तबीब का इन्तिक़ाल हो गया तो लोगों को बड़ी

1 ... بغية الوعاة، الخليل بن أحمد، الخ، ٥٥٨/١، رقم: ١١٤٢

परेशानी हुई क्योंकि वोह तबीब किसी खास तरीके से दवा बनाता था और किसी दूसरे को इस का इल्म न था, जब हज़रते सय्यिदुना खलील नह्वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَعْدِي को इस बात का इल्म हुवा तो आप ने लोगों से फ़रमाया : “उस दवा का कोई नुस्खा मा’रूफ़ है ?” लोगों ने अर्ज़ की : जी नहीं, फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने पूछा : “क्या वोह बरतन मौजूद है जिस में वोह दवा बनाया करता था ?” लोगों ने कहा : जी हां वोह मौजूद है। फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने वोह बरतन मंगवाया और उसे सूंघने लगे, यूं आप ने सूंघ सूंघ कर उस दवा के पन्दरह अज्ज़ा मा’लूम कर लिये और उन अज्ज़ा को मंगवा कर दवाई तय्यार की, जब लोगों ने उस दवा को इस्ति’माल किया तो उन्हें उसी तरह फ़ाइदा हुवा जिस तरह पहले होता था। फिर कुछ अर्से बा’द उस तबीब का नुस्खा तहरीरी सूरत में मिल गया, जब उस नुस्खे को हज़रते सय्यिदुना खलील नह्वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَعْدِي के नुस्खे से मिलाया गया तो येह बात सामने आई कि तबीब 16 अज्ज़ा से येह नुस्खा बनाया करता था और मौजूदा दवा में सिवाए एक जुज़ के बाकी पन्दरह अज्ज़ा बिल्कुल मुवाफ़िक़ थे।⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बिला शुबा येह उन की कुव्वते शाम्मा (सूंघने की सलाहिय्यत) और कुव्वते हाफ़िज़ा का ही नतीजा था जिस की बिना पर उन्होंने ने उस दवा के अज्ज़ाए तरकीबिय्या मा’लूम कर लिये, क्योंकि किसी भी चीज़ को महज़ सूंघ कर उस के बारे में वोही बता सकता है जिस के ज़ेहन में पहले से उस चीज़ का

1 ... بغية الوعاة، الخليل بن أحمد، الخ، ٥٥٩/١، رقم: ١١٤٢

मुकम्मल इल्म हो और वोह उस की हकीकत से मुकम्मल तौर पर आगाह हो । **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** तारीखे इस्लाम में ऐसी बे मिसाल सलाहिय्यों वाले कई बुजुर्गाने दीन के वाकिआत मौजूद हैं जिन से हमारा माजी रौशन है और जिन्हें पढ़ कर हमारा सर फ़ख़ से बुलन्द हो जाता है, **اَللّٰهُمَّ** हमें उन मुबारक हस्तियों का फ़ैज़ान नसीब फ़रमाए ।

﴿21﴾ **कुव्वते हाफ़िज़ा ने उस्ताद साहिब को हैबान कब दिया**

सिहाहे सित्ता (हदीसे पाक की छे मशहूर किताबों) में से “तिरमिज़ी शरीफ़” के मुसन्निफ़ हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन ईसा तिरमिज़ी **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** भी अइम्मे हदीस की फ़ेहरिस्त में नुमायां मक़ाम रखते हैं, आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** का हाफ़िज़ा बेहद कवी था, हज़रते सय्यिदुना अबू सा’द इदरीसी **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : “इमाम तिरमिज़ी का कुव्वते हाफ़िज़ा ज़रबुल मसल था ।”⁽¹⁾

एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना इमाम तिरमिज़ी **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** और आप के हदीस के उस्ताद मक्कए मुकर्रमा की जानिब सफ़र कर रहे थे । इमाम तिरमिज़ी **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** ने उस्ताद साहिब की सोहबत को ग़नीमत जाना और उस्ताद साहिब की इम्ला करवाई हुई दो जिल्दें दोहराने का अर्ज़ किया, ताकि कोई ग़लती हो तो वोह दुरुस्त हो जाए, उस्ताद साहिब ने आप की दरख़्वास्त क़बूल फ़रमा ली लेकिन जब

आप ने अपने सामान में वोह दो जिल्दें तलाश कीं तो न मिलीं । अब आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** को उस्ताद साहिब की नाराज़ी और अह़ादीसे करीमा की दोहराई का अनमोल मौक़अ हाथ से जाने का ख़ौफ़ लाहिक् हुवा लिहाज़ा चन्द सफ़ेद काग़ज़ लिये और उस्ताद साहिब की बारगाह में हाज़िर हो गए, उस्ताद साहिब ह़दीसे पाक बयान करते जाते और इमाम तिरमिज़ी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** अपनी याददाश्त में उन अह़ादीस की तस्हीह महफूज़ करते जाते, सिलसिला यूं ही जारी रहा कि उसी दौरान अचानक उस्ताद साहिब की नज़र आप के हाथ में मौजूद ख़ाली सफ़ेद काग़ज़ों पर पड़ी, येह देख कर उस्ताद साहिब ने नाराज़ी का इज़हार फ़रमाया, इमाम तिरमिज़ी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने दोनों जिल्दों के खो जाने का उस्ताद साहिब को बताया और येह भी अर्ज़ की, कि अभी तक जो अह़ादीस आप ने बयान की हैं वोह सब मेरे हाफ़िज़े में महफूज़ हैं । उस्ताद साहिब ने आप का इम्तिहान लेने के लिये अह़ादीस बयान करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया, आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने अल्फ़ाज़ की कमी बेशी के बिगैर वोह तमाम अह़ादीस सुना दीं, उस्ताद साहिब समझे कि आप को पहले ही से ह़दीसों हिफ़ज़ थीं तभी आप ने फ़ौरन सुना दीं साथ ही आप से इस बात का इज़हार भी फ़रमा दिया, हज़रते सय्यिदुना इमाम तिरमिज़ी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْی** ने उस्ताद साहिब को मुतमइन करने के लिये एक मरतबा फिर अपने आप को इम्तिहान के लिये पेश किया और इन्तिहाई अज़िज़ी के साथ अर्ज़ की : आप इस के इलावा मज़ीद अह़ादीसे मुबारका बयान कर के देख लें । लिहाज़ा उस्ताद साहिब ने मज़ीद चालीस ह़दीसों

बयान फ़रमाई और हज़रते सय्यिदुना इमाम तिरमिज़ी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से सुनाने का इरशाद फ़रमाया तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने बिगैर किसी ग़लती के वोह चालीस की चालीस हदीसों सुना दीं।⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना इमाम तिरमिज़ी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की सीरते मुबारका से जहां आप के क़वी हाफ़िज़े का पता चलता है वहीं येह मदनी फूल भी मिलता है कि हमें अपने असातिज़ा का बेहद अदबो एहतिराम करना चाहिये और उन की चाहत और मरज़ी के ख़िलाफ़ काम से गु़रैज़ करना चाहिये, मशहूर मक़ूला है : “बा अदब बा नसीब बे अदब बे नसीब” जो अपने असातिज़ा का अदब करता है और उन की चाहत को पूरा करता है वोह कामयाबी की मन्ज़िलें तै करता है और जो उन का दिल दुखाता है, उन की ग़ीबत करता, उन की बैठने की जगह की बे अदबी करता या बिला वज्ह उन से बुग़ज़ रखता है वोह न सिर्फ़ इल्म की मिठास से महरूम रहता है बल्कि उसे नाकामियों का मुंह देखना पड़ता है। हमारे बड़े बड़े अइम्मा व फ़ुक़हा जिन का चहार सू शोहरा है, जिन का कलाम बतौरे दलील पेश किया जाता है और जिन का नाम बहुत एहतिराम से लिया जाता है उन की सीरत में उस्ताद के अदब का पहलू बहुत नुमायां नज़र आता है।

अब्बाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपने उस्तादों का अदब करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। أَمِينٌ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ।

① ... تذكرة الحفاظ، الطبقة العاشرة، الترمذی الامام الحافظ... الخ، ۲/ ۵۵

﴿22﴾ कुब्बते हाफ़िज़ा की हिफ़ाज़त और कानों का कुप्ले मदीना

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़ुरआ उबैदुल्लाह बिन अब्दुल करीम राजी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : इल्म की जो भी बात मेरे कान सुन लेते हैं मुझे अच्छी तरह याद हो जाती है, इसी लिये बग़दाद के बाज़ार में जब भी जाता हूँ जैसे ही मूसीक़ी की आवाज़ मेरे कानों में पड़ती है तो मैं अपने कानों में उंगलियां डाल लेता हूँ कहीं येह गाने मुझे हिफ़ज़ न हो जाएं।⁽¹⁾

﴿23﴾ अगर येह बात है तो ज़रा सुनाओ ?

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जिन का शुमार इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के शागिर्दों में होता है उन के एक दोस्त सन्हर बयान फ़रमाते हैं : बचपन में हम दोनों किसी मक़ाम से गुज़र रहे थे, करीब ही एक बुजुर्ग किसी मौजूअ पर बयान फ़रमा रहे थे, हम दोनों भी शरीक हो गए, उन्होंने ने काफ़ी तवील बयान फ़रमाया लेकिन जब बयान ख़त्म हुवा तो हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : मुझे पूरा बयान याद हो चुका है, आप की येह बात सुन कर वहां मौजूद एक शख़्स ने कहा : “अगर येह बात है तो ज़रा सुनाओ !”, आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपने हाफ़िज़े की बुन्याद पर मुकम्मल बयान सुना दिया !⁽²⁾

1... تاریخ بغداد، عبيدالله بن عبدالكريم... الخ، ۱۰/۳۳۰

2... تاریخ بغداد، عبدالله بن مبارک، ۱۰/۶۴

﴿24﴾ 120 तफ़ासीख़ और तीन लाख अशआर के हाफ़िज़

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र मुहम्मद बिन क़ासिम अम्बारी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ भी क़ाबिले रश्क कुव्वते हाफ़िज़ा रखने वालों में से एक हैं।⁽¹⁾ हज़रते सय्यिदुना अबू अली क़ाली رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अम्बारी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को कुरआन की ताईद करने वाले तीन लाख अशआर याद थे।⁽²⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़दीम ज़माने में अरब शरीफ़ में बड़े बड़े शुअरा थे जो बेहतरीन अशआर कहा करते थे, कलाम का हुस्न और अन्दाज़े बयां तो अपनी जगह मगर तरह तरह के अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करना और इन से नित नए मअानी का इज़हार करना, उन के अशआर का तुर्रए इम्तियाज़ होता था। अरबी ज़बान का एक ख़ास्सा येह भी है कि इस में एक लफ़्ज़ कई कई मा'ना पर मुश्तमिल होता और किस वक़्त कौन सा मा'ना मुराद है उस का तअय्युन क़राइन के ज़रीए होता है। कुरआने मजीद जो अरब शरीफ़ में नाज़िल हुवा उस के मुख़्तलिफ़ मअानी की ता'यीन के लिये हमारे अइम्मा शुअराए अरब के अशआर को बतौरे इस्तिशहाद पेश करते आए हैं, तीन लाख अशआर का याद

1... سير اعلام النبلاء، ابن الانباری۔۔۔ الخ، ۶۴۹/۱۱

2... تذکرة الحفاظ، الطبقة الحادية عشرة، ابن الانباری۔۔۔ الخ، ۴۲/۳

होना कोई आम बात नहीं थी हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अम्बारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को ऐसे तीन लाख अशआर याद थे जो मअनिये कुरआन के मुअय्यिद (ताईद करने वाले) थे ।

आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के हाफ़िज़े के मुतअल्लिक़ येह भी मिलता है कि आप को एक सौ बीस (120) तफ़ासीर सनदों के साथ हिफ़ज़ थीं । **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को बे पनाह कुव्वते हाफ़िज़े से नवाज़ा था और आप के हाफ़िज़े के हैरत अंगेज़ वाकिआत सुन कर हर एक मुतअस्सिर होता था । हज़रते सय्यिदुना अबुल अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ आप के हाफ़िज़े के मुतअल्लिक़ फ़रमाते थे : हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अम्बारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का कुव्वते हाफ़िज़ा **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानियों में से एक निशानी है ।⁽¹⁾

﴿25﴾ ज़हीन बेटे की बीमारी पर वालिद साहिब की बेचैनी

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अम्बारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के वालिदे मोहतरम भी आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की खुदादाद हाफ़िज़े का ज़िक्र फ़रमाया करते थे । एक बार आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बीमार हो गए तो आप के वालिद बेहद परेशान हुवे । किसी ने इस बेचैनी की वजह मा'लूम की तो किताबों से भरी अलमारियों की तरफ़ इशारा करते हुवे फ़रमाया : “इन अलमारियों में मौजूद किताबें जिस के सीने में महफूज़ हों मैं उस की बीमारी पर पुर सुकून कैसे रह सकता हूँ ?”⁽²⁾

1... طبقات الحنابلة، ٢/٤١، رقم: ٢٠٣

2... الجامع في الحث على حفظ العلم، محمد بن القاسم أبو بكر الأنباري، ص ٣٠١

﴿26﴾ अचानक इम्तिहान में इम्तियाज़ी कामयाबी

हज़रते सय्यिदुना अबू कुरैब मुहम्मद बिन अ़ला हम्दानी قُدِّسَ سِرُّهُ التَّوَرَانِ का शुमार अकाबिर (बड़े) मुहद्दिसीने किराम में होता है, इल्मे हदीस में इम्तियाज़ी मक़ाम रखने की वजह से आप को शैख़ुल मुहद्दिसीन भी कहा जाता है। एक रोज़ आशिक़ाने हदीस आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के घर के पास जम्अ हो गए और इक्तिसाबे इल्मे हदीस के लिये घर में दाख़िले की इजाज़त मांगने लगे, जब हज़रते सय्यिदुना अबू कुरैब हम्दानी قُدِّسَ سِرُّهُ التَّوَرَانِ ने घर की खिड़की से उन्हें मुलाहज़ा फ़रमाया तो उन के ज़ौको शौक़ को जांचने के लिये इरशाद फ़रमाया : तुम में से किस किस को मेरी लिखवाई हुई अह़ादीस याद हैं ? येह सुनते ही तमाम अफ़राद की नज़रें हज़रते सय्यिदुना इब्ने जरीर त़बरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ पर ठहर गई, जब आप से पूछा गया कि क्या आप को हज़रते सय्यिदुना अबू कुरैब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की लिखवाई हुई अह़ादीस याद हैं ? तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इस्बात में जवाब दिया और फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इस तरह हदीस बयान फ़रमाई : फ़ुलां दिन आप ने हमें येह हदीस सुनाई थी, फ़ुलां दिन वोह हदीस सुनाई थी। अल ग़रज़़ दिनों की ता'यीन के साथ आप ने तमाम हदीसों बयान फ़रमा दीं, हज़रते सय्यिदुना इब्ने जरीर त़बरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَوْفِي की बयान कर्दा अह़ादीस से हज़रते सय्यिदुना अबू

कुरैब हम्दानी قَدَسَ سِرُّهُ التَّوَرَانِ का एक मस्अला भी हल हो गया, जिस से आप बेहद खुश हुवे और आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को घर आने की इजाज़त अता फ़रमाई।⁽¹⁾

﴿27﴾ 80 दिन में हिफ़ज़े कुरआन

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र मुहम्मद बिन मुस्लिम शिहाब जोहरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को **عَزَّوَجَلَّ** ने काबिले रशक कुव्वते हाफ़िज़ा अता फ़रमाया था, इसी की बदौलत आप ने सिर्फ़ अस्सी (80) दिन में कुरआने करीम हिफ़ज़ कर लिया था।⁽²⁾

﴿28﴾ कई उलूम का ख़ज़ाना ज़ेहून में महफूज़ था

हज़रते सय्यिदुना लैस رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इमाम जोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की अज़मत बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम जोहरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से बढ़ कर कोई अलिम नहीं देखा, इस लिये कि अगर तुम उन्हें तरगीबो तरहीब से मुतअल्लिक अहादीस बयान करते हुवे सुन लो तो ज़रूर कहोगे कि आप के इलावा कोई और इतनी ख़ूब सूरती से येह रिवायात बयान नहीं कर सकता, अगर तुम उन से अम्बियाए किराम और अहले किताब के मुतअल्लिक रिवायात सुन लो तो तुम्हें कहना पड़ेगा कि सब से उम्दा अन्दाज़े

1 ... معجم الادباء، محمد بن جرير... الخ، ص ۲۲۴

2 ... تذكرة الحفاظ، الطبقة الرابعة، الزهري... الخ، ۸۴/۱

रिवायत तो येही है । और अगर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इल्मुल अन्साब बयान फ़रमाएं तो ज़बान पर येह जुम्ले बे साख़्ता जारी हो जाएं कि अहसन अन्दाज़ में बयान करना तो आप ही का हिस्सा है और अगर कुरआनो हदीस के बारे में कुछ इरशाद फ़रमाएं तो आप की गुफ़्तगू जामेअ तरीन और नए गोशों पर मुश्तमिल होती है ।⁽¹⁾

«29» तमाम जवाबात याद हैं ?

हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को जब इल्मे दीन हासिल करने का शौक पैदा हुआ तो आप जलीलुल क़द्र ताबेई हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बारगाह में जा पहुंचे और इल्मे दीन के अनमोल मोती चुनने में मसरूफ़ हो गए, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ कसरत से हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से सुवाल किया करते थे और दिन ब दिन आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के सुवालात बढ़ते जा रहे थे, एक दिन हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने आप का इम्तिहान लेने के लिये पूछा : “जितने सुवालात आप कर चुके हैं क्या उन सब के जवाबात आप को याद भी हैं ?” आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अर्ज की : जी हां मुझे वोह सब याद हैं । फिर हज़रते सय्यिदुना क़तादा रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उन तमाम सुवालात के जवाबात दोहरा दिये, हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : मुझे मा'लूम नहीं

था कि आप जैसा (ज़हीन और मज़बूत हाफ़िज़े वाला) शख्स भी **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने पैदा फ़रमाया है।⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना क़तादा **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** अपने हाफ़िज़े के बारे में खुद फ़रमाते हैं : जो कुछ मेरे कान सुन लेते हैं मेरा दिल उसे महफूज़ कर लेता है।⁽²⁾

﴿30﴾ हुशैम के हाफ़िज़े में फ़र्क नहीं आ सकता

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम हरबी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ** फ़रमाते हैं : हुफ़ाज़े हदीस चार हैं, हुशैम उन सब के जामेअ हैं। हज़रते सय्यिदुना हुशैम **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : मैं एक मजलिस में सौ हदीसों याद कर लिया करता था अगर उन सौ हदीसों के बारे में सुवाल किया जाता तो ज़रूर मैं जवाब देता। (الحث على حفظ العلم، ص ३१२) इसी लिये हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : “ज़माना किसी का भी हाफ़िज़ा तब्दील कर सकता है लेकिन हुशैम की याददाश्त में कोई फ़र्क नहीं आ सकता।”⁽³⁾

﴿31﴾ आ'ला हज़रत का हैरत अंगेज़ हाफ़िज़ा

आ'ला हज़रत, अज़ीमुल बरकत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** के क़ाबिले क़द्र ख़ुलफ़ा में से एक मुहद्दिसे आ'ज़मे हिन्द हज़रते सय्यिदुना अबू हामिद सय्यिद मुहम्मद

1 ... طبقات كبرى، قتادة بن دعامة السدوسي، ١/٤٢

2 ... حلية الاولياء، قتادة بن دعامة، ٣/٤٩

3 ... سير اعلام النبلاء، هشيم بن بشير... الخ، ٥/٤٢١

किछौछवी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى भी हैं आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى आ'ला हज़रत
 رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के क़वी हाफ़िज़े को बयान करते हुवे फ़रमाते हैं :
 तक्मीले जवाब (जवाब मुकम्मल करने) के लिये जुज़इय्याते फ़िक्ह
 (या'नी फ़िक्ह की किताबों से मस्अलों के जवाबात) की तलाशी में
 जो लोग थक जाते वोह आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّت की ख़िदमत
 में अर्ज करते और हवालाजात त़लब करते तो उसी वक़्त आप फ़रमा
 देते कि “रहुल मुहतार” जिल्द फुलां के फुलां सफ़हे पर फुलां सतर
 (लाइन) में इन अल्फ़ाज़ के साथ जुज़इय्या मौजूद है। “दुर्रे मुख़्तार”
 के फुलां सफ़हे पर फुलां सतर में इबारत येह है। “आलमगीरी” में ब
 कैदे (ب-ث-ث-ث) या'नी किसी कैद के साथ) जिल्द व सफ़हा व सतर येह
 अल्फ़ाज़ मौजूद हैं। “हिन्दिyyा” में “ख़ैरिyyा” में “मबसूत” में
 (फ़िक्ह की मुख़्तलिफ़ किताबों के नाम बता कर) एक एक किताबे
 फ़िक्ह की अस्ल इबारत मअ सफ़हा व सतर बता देते और जब
 किताबों में देखा जाता तो वोही सफ़हा व सतर व इबारत पाते जो
 ज़बाने आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّت ने फ़रमाया था।⁽¹⁾

﴿32﴾ एक रात में दो जिल्दें हाफ़िज़े में महफूज़ कब लीं

ख़लीफ़े आ'ला हज़रत हज़रते मौलाना ज़फ़रुद्दीन बिहारी
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّت के कुव्वते हाफ़िज़ा को
 बयान करते हुवे लिखते हैं : आ'ला हज़रत (हिन्द के एक अ़लाके)
 पीलीभीत में हज़रते वसी अहमद (मुहद्दिसे) सूरती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي के

1हयाते आ'ला हज़रत, 1 / 210 बित्तसरफ़।

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

घर मेहमान थे, एक दिन दौराने गुफ्तगू फ़िक़ह की किताब **عُقُودُ الدَّرِّيَّةِ فِي تَنْفِيحِ الْفَتَاوَى الْحَامِدِيَّةِ** का ज़िक्र हुआ, यह किताब मुहद्दिसे सूरती की लाइब्रेरी में मौजूद थी, किताब का नाम सुनते ही आ'ला हज़रत ने फ़रमाया : “मैं ने (येह किताब) नहीं देखी, (बरेली वापस) जाते हुवे येह किताब मेरे साथ कर दीजियेगा ।” हज़रत मुहद्दिसे सूरती **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने इसे ब खुशी क़बूल किया और किताब ला कर आ'ला हज़रत **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** को पेश कर दी मगर साथ में येह भी फ़रमाया : “जब मुलाहज़ा फ़रमा लें तो भेज दीजियेगा, इस लिये कि आप के यहां तो बहुत किताबें हैं मेरे पास येही गिनती की चन्द किताबें हैं जिन से मैं फ़तावा दिया करता हूं ।” आ'ला हज़रत ने इसे क़बूल फ़रमा लिया, आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की उसी दिन बरेली रवानगी थी मगर एक जां निसार मुरीद की दा'वत की वज्ह से एक दिन मज़ीद क़ियाम करना पड़ा । रात में आ'ला हज़रत **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने “**عُقُودُ الدَّرِّيَّةِ**” का मुतालआ फ़रमाया जब दूसरे दिन बरेली वापस जाने का वक़्त आया तो आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने मुहद्दिसे सूरती **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَى** को येह किताब वापस फ़रमा दी और इरशाद फ़रमाया : “क़स्द (इरादा तो) बरेली ले जाने का था और अगर कल ही जाता तो इस किताब को साथ लेता जाता । लेकिन जब कल जाना न हुवा तो शब में और सुब्ह के वक़्त पूरी किताब देख ली अब ले जाने की ज़रूरत न रही ।” हज़रते मुहद्दिसे सूरती **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَى** ने इन्तिहाई हैरत से फ़रमाया : “बस एक मरतबा देख लेना काफ़ी हो गया ?”

आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “**अल्लाह** तआला के फज़लो करम से उम्मीद है कि दो तीन महीने तक तो जहां की इबारत की ज़रूरत होगी, फ़तावा में लिख दूंगा और मजमून तो إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى उम्र भर के लिये महफूज़ हो गया ।”⁽¹⁾

﴿33﴾ बाबुल इस्लाम सिन्ध के आठ उलमा के नाम बता दिये

आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ के फ़तावाजात का मजमूआ “फ़तावा रज़विय्या” (मुख़र्रजा) जो 33 जिलदों पर मुश्तमिल है इस के एक जवाब से भी आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के कुव्वते हाफ़िज़ा का पता चलता है। सुवाल इस तरह है :

मौलाना अल मुअज़्ज़म व बरादरे मोहतरम मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा ख़ां साहिब أَرْقَمَ اللَّهُ شَأْنَهُمُ، السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ : कोलेज का एक काम आ गया है जिस में ज़रूरत है चन्द अस्मा (नाम) उन उलमाए किराम के लिखे जाने की, जो (बाबुल इस्लाम) सिन्ध के थे या (बाबुल इस्लाम) सिन्ध में आए कम अज़ कम पांच नाम होना चाहिये। अन्साबे समआनी में बा'ज़ अस्मा मिले लेकिन सिर्फ़ नाम, उस की ख़बर न मिली कि उन्होंने ने क्या ख़िदमत अन्जाम दी ? तबकाते हनफ़िय्या की फ़ेहरिस्त में कोई नाम न मिला। आं जनाब बराहे करम आ'ला हज़रत से इस्तिफ़सार फ़रमाएं। मुतक़द्दिमीन या मुतअख़िबरीन उलमाए अहले सुन्नत, मुहद्दिसीन में हों या फ़ुक़हा में। अगर इस क़दर फ़ुरसत न हो तो सिर्फ़ उन किताबों के नाम लिख भेजिये जिन में तलाश करूं। आप (या'नी हुज़ूर मुफ़्तये आ'ज़मे

①हयाते आ'ला हज़रत, 1/213 माखूज़न

हिन्द की खिदमत में नियाज़ नामा इस लिये लिखा कि आप को आ'ला हज़रत की हुजूरी हासिल है। फ़कीर का सलाम व क़दम बोसी फ़रमा दीजिये। मुस्तहिक्के दुआ हूं और बड़ा मोहताज हूं।

अल जवाब :

(1) मौलाना रहमतुल्लाह सिन्धी तलमीज़ (शागिर्द हैं) इमाम इब्ने हुमाम (साहिबे फ़तुल क़दीर के) मुसन्निफ़े मन्सिके कबीर, मन्सिके सगीर व मन्सिके मुतवस्सित् मा'रूफ़ बेह लुबाबुल मनासिक जिस की शर्ह मुल्ला अली क़ारी ने की है *المسلك التقطفي شرح المسك التوسط*

(2) मौलाना मुहम्मद आबिद सिन्धी मदनी मुहद्दिस साहिब “हसरुशशारिद”

(3) मौलाना मुहम्मद हयात सिन्धी शारेहे किताब “अत्तरगीब वत्तरहीब”

(4) मौलाना मुहम्मद हाशिम सिन्धी, येह भी फ़िक़ह में साहिबे तस्नीफ़ हैं।

(5) अल्लामा मुहम्मद इब्नुलहादी सिन्धी मुहश्शी (या'नी हाशिया लिखने वाले) फ़तुल क़दीर व सिहाहे सित्ता व मुस्नदे इमाम अहमद (पर), उस्ताज़ (हैं) अल्लामा मुहम्मद हयात सिन्धी (के) मुतवप्फ़ा 1138 हिजरी

(6) शैख़ निज़ामुद्दीन सिन्धी नज़ीले दिमश्क़ (शाम के शहर दिमश्क़ में आने वाले) तलमीजे (शागिर्दे) जलील व महबूब हज़रते कुदवतुल आरिफ़ीन सय्यिद सिबग़तुल्लाह बरौही

(7) अल्लामा सिन्धी मुसन्निफ़ ग़ायतुत्तहकीक़ जिन से सय्यिद

अल्लामा तहतावी मिसरी ने हाशिया दुर्गे मुख्तार बाबुल इमामत में इस्तिनाद किया। (या'नी इन की इबारत को बतौर दलील पेश किया)
(8) शैख़ मुहम्मद हुसैन अन्सारी सिन्धी अमे (या'नी चचा) शैख़ आबिद सिन्धी (के जो) मुहद्दीसीन व रिजाले असानीड हसरुशशारिद से हैं। इस वक़्त येही नाम ख़याल में आए।⁽¹⁾

﴿34﴾ एक माह में हाफ़िज़े कुरआन

हज़रते जनाब सय्यिद अय्यूब अली साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का बयान है कि एक रोज़ आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया कि बा'ज़ ना वाकिफ़ हज़रात मेरे नाम के आगे हाफ़िज़ लिख दिया करते हैं हालांकि मैं इस लक़ब का अहल नहीं हूँ। सय्यिद अय्यूब अली साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : आ'ला हज़रत ने उसी रोज़ से (कुरआन शरीफ़ का) दौर शुरू कर दिया जिस का वक़्त ग़ालिबन इशा का वुजू फ़रमाने के बा'द से जमाअत काइम होने तक मख़सूस था, रोज़ाना एक पारह याद फ़रमा लिया करते थे यहां तक कि तीसवें रोज़ तीसवां पारह याद फ़रमा लिया। एक मौक़अ पर फ़रमाया : कि मैं ने कलामे पाक बित्तरतीब ब कोशिश याद कर लिया और येह इस लिये कि उन बन्दगाने खुदा का (जो मेरे नाम के आगे हाफ़िज़ लिख दिया करते हैं उन का) कहना ग़लत साबित न हो।⁽²⁾

① फ़तावा रजविय्या, 26/403

② हयाते आ'ला हज़रत, 1/208

﴿35﴾ खलीफ़ा आ'ला हज़रत का हाफिज़ा

आ'ला हज़रत, अज़ीमुल बरकत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के नामवर खलीफ़ा मुफ़स्सिरे कुरआन, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ बेशुमार ख़ूबियों के मालिक थे चुनान्वे, शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की इन सलाहिय्यतों को बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : सदरुल अफ़ज़िल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बेशुमार ख़ूबियों से नवाज़ा था । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ बेहतरीन मुक़र्रिर, बा अमल मुबल्लिग़, मन्झे हुवे मुफ़्ती और पुर असर मुसन्निफ़ के साथ साथ क़ाबिल तरीन मुदर्रिस (या'नी उस्ताद) भी थे । इल्मे हदीस में तो आप मशहूरे आमो ख़ास थे । बड़े बड़े इल्माए किराम इस बात का ए'तिराफ़ किया करते थे कि जिस तरह हदीस की ता'लीम आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ देते हैं उन के कानों ने कभी और कहीं उस की समाअत नहीं की । इस जामेइयत से मुख़्तसर अल्फ़ाज़ बयान फ़रमाते थे कि मफ़हूम ज़ेहन की गहराइयों में उतर जाता था । फुनूने अक्लिय्या की किताबों की पुर मग़ज़ मुदल्लल (या'नी दलाइल से भरपूर) तक्रारीर ज़बानी याद किया करते थे । दर्स के वक़्त अपने सामने फुनूने अक्लिय्या की किताब न रखते थे । तलबा जब इबारत पढ़ चुकते आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ किताब पर तक्रारीर फ़रमाते तो गुमान येह होता था कि शायद आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ही इस किताब के मुसन्निफ़ हैं जो

किताब की गहराइयों और इबारत के रूमजो अस्सार की वज़ाहत फ़रमा रहे हैं । अमीरे अहले सुन्नत मज़ीद फ़रमाते हैं : सदरुल अफ़ज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَاقِل अपनी गूना गूं मसरूफ़िय्यात के बा वुजूद दारुल इफ़ता बड़ी ख़ूबी और बा काइदगी के साथ चलाते, हिन्द और बैरूने हिन्द नीज़ मुरादाबाद के अतराफ़ व अकनाफ़ से बे शुमार इस्तिफ़ता और इस्तिफ़सारात आते और तमाम जवाबात आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى खुद इनायत फ़रमाते । بِفَضْلِهِ تَعَالَى फ़िक़ही जुज़्ज़िय्यात इस क़दर मुस्तहज़र (जेहन में हाज़िर) थे कि जवाबात लिखने के लिये कुतुबहाए फ़िक़ह की तरफ़ मुराजअत की ज़रूरत बहुत कम पेश आती । शहज़ादए सदरुल अफ़ज़िल हज़रते अल्लामा सय्यिद इख़्तिसासुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ السُّبِّين फ़रमाया करते थे कि मीरास व फ़राइज़ के फ़त्वे कसरत से आते मगर हज़रत को जवाब लिखने के लिये किताब देखते हुवे नहीं देखा आज तो एक बतन दो बतन चार बतन के फ़त्वे अगर दारुल इफ़ता में आ जाएं तो घंटों किताबें देखी जाती हैं तब कहीं जा कर फ़त्वे का जवाब लिखा जाता है मगर हज़रते सदरुल अफ़ज़िल رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى का येह हाल था कि बीस बीस इक्कीस इक्कीस बुतून (पेढ़ियों) के फ़त्वे भी दारुल इफ़ता में आ गए मगर हज़रत बिग़ैर किताब देखे जवाब तहरीर फ़रमा देते थे अलबत्ता उंगलियों पर कुछ शुमार करते ज़रूर देखा जाता और आप के फ़त्वे के इस्तिर्दाद (या'नी रद करने) की कभी नौबत नहीं आई ।⁽¹⁾

①तज़क़िए सदरुल अफ़ज़िल, स. 10, 13

﴿36﴾ एक ही दिन में काफ़िया याद फ़रमा ली

सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي** का हाफ़िज़ा बहुत मज़बूत था। हाफ़िज़े की कुव्वत, शौक़ व मेहनत और ज़िहानत की वजह से तमाम तलबा से बेहतर समझे जाते थे। एक मरतबा किताब देखने या सुनने से बरसों तक ऐसी याद रहती जैसे अभी अभी देखी या सुनी है। तीन मरतबा किसी इबारत को पढ़ लेते तो याद हो जाती। एक मरतबा इरादा किया कि “काफ़िया” की इबारत ज़बानी याद की जाए तो फ़ाइदा होगा तो पूरी किताब एक ही दिन में याद कर ली। (काफ़िया इल्मे नह्व की किताब है जो अरबी में है और आलिम कोर्स के निसाब में शामिल है)⁽¹⁾

﴿37﴾ अमीरे अहले सुन्नत का हाफ़िज़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि रज़वी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** को भी **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने बे मिसाल हाफ़िज़ा अता फ़रमाया है जिस के वाक़िआत इस्लामी भाइयों की ज़बानी सुनने को मिलते रहते हैं, बल्कि बज़ाते खुद अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** भी कई दफ़आ इस ने'मते

①तज़क़िरए सदरुशशरीआ, स. 7

खुदावन्दी का इज़हार फ़रमा चुके हैं, चुनान्चे, एक मदनी मुज़ाकरे के दौरान कुछ यूँ इरशाद फ़रमाया :

जब मेरे वालिदे मोहरतम हाजी अब्दुर्रहमान कादिरि **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** को मदीने शरीफ़ का बुलावा आया तो मेरी उम्र डेढ़ या दो बरस थी। चुनान्चे, 1370 हिजरी में उन्होंने ने सफ़रे हज़ इख़्तियार किया। वालिदे मोहरतम **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के सूए अरब ख़ाना होने के वक़्त मुझे बुख़ार था मुझे उस कम्बल का रंग आज भी याद है जिस में लपेट कर मुझे एरपोर्ट लाया गया। वोह सुख़ था।

﴿38﴾ एक बार पढ़ने से याद हो जाता

अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** फ़रमाते हैं : जब मैं स्कूल पढ़ने जाता था तो जो सबक़ एक बार पढ़ लेता तो मुझे याद हो जाता। मुझे अपने साथ पढ़ने वाले उन त़लबा पर बहुत हैरत होती थी जो सबक़ याद करने के लिये रद्दा लगाते और बार बार याद करते थे।

﴿39﴾ पुरानी यादें ताज़ा फ़रमा दीं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी की मजालिस में से एक “मजलिसे इज़दियादे हुब्ब” भी है जिस के तहत उन इस्लामी भाइयों से राबिता किया जाता है जो दा'वते इस्लामी की मदनी तहरीक से कभी वाबस्ता थे मगर घरेलू मसरूफ़िय्यात या किसी मजबूरी वगैरा की वजह से मदनी माहोल से दूर या मदनी

पेशक़श : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

कामों में सुस्त हो गए। ऐसे इस्लामी भाइयों को दोबारा दा'वते इस्लामी में लाने, मदनी कामों में चुस्त करने की कोशिश की जाती है, इसी मजलिस के तहत एक बार मदनी मुज़ाकरे में ऐसे कसीर इस्लामी भाई शरीक हुवे जो दा'वते इस्लामी की इब्तिदा में अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** के साथ थे उन में से कई ऐसे भी थे जो बा'ज वुजूहात की बिना पर बरसों अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** से न मिल सके। मदनी मुज़ाकरे के दौरान जब भी कोई पुराना इस्लामी भाई सुवाल करता तो अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** न सिर्फ़ उसे पहचान लेते बल्कि उन का नाम ले कर उन के साथ गुज़रे बरसों पुराने मदनी काफ़िलों के सफ़र, उन के घर जा कर नेकी की दा'वत देना नीज़ कई खुश गवार वाकिआत बयान फ़रमा कर बरसों की याद ताज़ा फ़रमा देते। एक इस्लामी भाई के साथ दा'वते इस्लामी की इब्तिदा में नेकी की दा'वत के लिये बग़दाद शरीफ़ का सफ़र फ़रमाया था, इसी मदनी मुज़ाकरे के दौरान उन इस्लामी भाई से फ़रमाया : आप के पासपोर्ट पर आप की तारीख़े विलादत फुलां सिन दर्ज है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अस्लाफ़ के हैरत अंगेज़ हाफ़िज़े पर मुश्तमिल वाकिआत पढ़ कर बे पनाह रश्क आता है, यकीनन बुजुर्गाने दीन के खुदादाद हाफ़िज़े ने हमारे माज़ी को रौशन

और ताबनाक बनाया है और आज भी कामयाबी के मुतलाशी के लिये येह वाकिआत मनारए नूर हैं । अज़्म व हौसला, जुरअत व बहादुरी, मेहनत व मशक्कत की आदत, मक्सद पर नज़र होने के साथ साथ इन तमाम वाकिआत में सब से ज़ियादा मुश्तरक (एक जैसी) बात जोहदो तक्वा है, यकीनन तक्वा व परहेज़गारी अपनाने की बरकत से कुव्वते हाफ़िज़ा मज़बूत होता है और इल्म का नूर ज़ेहन तक पहुंच कर महफूज़ होता रहता है । कामयाब तरीन अफ़राद की सीरत पढ़ कर हर शख्स की येह ख़्वाहिश होती है कि “कामयाबी मेरे क़दम चूमे” और हाफ़िज़े की मज़बूती शाहराए कामयाबी पर गामज़न होने के लिये सब से अहम तरीन और बुन्यादी कुव्वत है । अस्लाफ़ के इन वाकिआत को पढ़ कर यकीनन आप के दिल में भी कुव्वते हाफ़िज़ा बढ़ाने की ख़्वाहिश जाग उठी होगी, लिहाज़ा इस नेक ख़्वाहिश की तक्मील के लिये अगला बाब “हाफ़िज़ा कैसे क़वी हो सकता है ?” का मुतालआ कीजिये, इन से हासिल होने वाले मदनी फूलों को अपनी ज़िन्दगी में नाफ़िज़ कीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** आप खुद तेज़ तरीन कुव्वते हाफ़िज़ा पाने में कामयाब हो जाएंगे ।

बाब 2 : हाफ़िज़ा कैसे क़वी हो सकता है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हाफ़िज़े की अहम्मियत समझने और बुजुर्गाने दीन **رَحِمَهُمُ اللَّهُ الْبَرِيّينَ** की सीरत से अज़्म व हौसला पाने के बा’द यकीनन आप भी चाहेंगे कि आप की भी

याददाश्त तेज़ तरीन हो, जो आप याद कर लें वोह कभी भी ज़ेहन से न निकले और ज़रूरत पड़ने पर ज़ेहन में महफूज़ मा'लूमात को इस्ति'माल कर के कामयाब अफ़राद की सफ़ में शामिल हो जाएं। कोई चीज़ हमारे दिमाग़ में किस जगह और किस तरह कितने अर्से तक महफूज़ रहती है येह जानने के लिये इन्सानी याददाश्त के मुख़्तलिफ़ हिस्सों की मा'लूमात होना ज़रूरी है चुनान्वे,

इन्सानी याददाश्त की अक्शाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन्सानी याददाश्त के ए'तिबार से दिमाग़ को तीन हिस्सों में तक्सीम किया गया है। दिमाग़ का वोह पहला हिस्सा जो हमारी आंखों के नज़दीक है जिसे “सेन्सरी मेमरी” (Sensory term memory) कहा जाता है, जब हम अव्वलन कुछ सुनते हैं तो वोह इसी हिस्से में महफूज़ होता है। दूसरा दिमाग़ का दरमियानी हिस्सा है जिसे शोर्ट टर्म मेमरी (Short term memory) का नाम दिया जाता है, पहले हिस्से से मा'लूमात का ज़ख़ीरा इस हिस्से में मुन्तक़िल होता है, जब कि दिमाग़ का तीसरा हिस्सा जो गुद्दी की तरफ़ है इसे “लॉग टर्म मेमरी (Long term memory) के नाम से मौसूम किया जाता है, दिमाग़ के दरमियानी हिस्से से मा'लूमात इस आख़िरी हिस्से में मुन्तक़िल होती है और मा'लूमात की येही किस्म देर पा और मुस्तक़िल होती है। हमारी मा'लूमात का अक्सर हिस्सा दिमाग़ के इस पहले हिस्से में ही रह जाता है और आगे मुन्तक़िल होने से क़ब्ल ही भूल की नज़्र हो जाता है, कुछ हिस्सा शोर्ट

टर्म मेमरी के खाने में आता है मगर याददाश्त के उसूलों पर अमल न करने की बदौलत वोह भी मा'दूम हो जाता है, और यूं हमें याद न रहने की शिकायत पेश आती है ।

इल्म को याद रखने के लिये तीन अहम बातें

दिमाग़ के इन तीनों हिस्सों से भरपूर फ़ाइदा उठाने और अपनी याददाश्त को ढेर पा बनाने के लिये तीन बातों को अमल में लाना चाहिये ।

«1» हाज़िर दिमागी

कुछ पढ़ने या सुनने से क़ब्ल सब से पहले अपने दिमाग़ को हाज़िर कीजिये और कुछ समझने और सीखने के लिये अपने आप को तय्यार कीजिये इस सोच के साथ कि आप को बा'द में इसे दोहराना होगा । ज़िम्मेदारी के साथ और इल्म की जुस्तजू रखते हुवे पढ़ने या सुनने का आगाज़ कीजिये ।

«2» तकरार

मा'लूमात हासिल करने के दौरान अपने मक़सद को सामने रखते हुवे दिलचस्पी बर क़रार रखिये, उक्ताहट का मुज़ाहरा मत कीजिये और जब इल्म का हुसूल हो चुके तो इस हासिल शुदा मा'लूमात के मुतअल्लिक अपने हम ख़याल इस्लामी भाई से गुफ़्तगू कर के इस की तकरार (Repetition) कीजिये ।

पेशक़श : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

﴿3﴾ साबिका मा'लूमात से मुन्सलिक करना

“हासिल होने वाली नई मा'लूमात को पहले से मा'लूम शुदा मा'लूमात के साथ मुन्सलिक कर दें” उमूमन जो इल्म हमें हासिल होता है इस का तअल्लुक किसी न किसी तरह हमारी साबिका मा'लूमात के साथ ज़रूर होता है, लिहाज़ा हमें अपनी साबिका मा'लूमात को इस नई मा'लूमात के साथ जदीद बुन्यादों पर उस्तुवार करना चाहिये, इस से जहां हमारे इल्म में इज़ाफ़ा होगा वहीं याददाश्त में इसे बर करार रखने का ज़रीआ भी बन जाएगा ।

पहली सूरत पर अमल करने की ब दौलत हमारे दिमाग़ का पहला हिस्सा अपना पूरा काम सहीह अन्जाम देगा और सारी मा'लूमात को शोर्ट टर्म मेमरी के हिस्से में मुन्तक़िल कर देगा, दूसरी सूरत पर अमल करने की वजह से मा'लूमात का येह ज़ख़ीरा लॉग टर्म मेमरी के हिस्से में चला जाएगा जब कि तीसरी सूरत अमल में लाने की वजह से इस इल्म को दवाम नसीब होगा और भूल के ख़तरे का ख़ातिमा होगा ।

एक अमली मश्क़

मसलन आप की किसी से मुलाक़ात हुई, आप ने उस का नाम पूछा, उस ने बताया : मेरा नाम “नो'मान” है । उस का दिल खुश करने और बुजुर्गों का ज़िक्रे ख़ैर करने की निय्यत से आप उस का नाम ले कर कहिये : “नो'मान भाई ! आप का नाम तो बहुत अच्छा है हमारे इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का नाम

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

भी “नो’मान” था ।” फिर जब कभी उस से मुलाकात हो तो उस का नाम ले कर पुकारिये यूं उस का नाम हमेशा के लिये याद हो जाएगा । इस मिसाल में इल्म याद रखने की तीनों बातों पर अमल किया गया है । जब नाम पूछा तो आप ने नाम याद रखने के लिये तवज्जोह से सुना । जैसे ही उस ने नाम बताया तो आप ने तकरार करते हुवे उस का नाम लिया, फिर हमेशा याद रखने के लिये तीसरी बात पर अमल करते हुवे अपनी साबिका मा’लूमात के साथ इस बात को मुन्सलिक कर लिया यूं आप को उस मुलाकाती का नाम याद हो गया ।

बाब 3 : हाफिज़े की मजबूती के तरीके

येह बाब (Chapter) हाफिज़े को तेज़ तरीन बनाने और अपनी याददाश्त में अहम बातों को महफूज़ करने के तरीकों पर मुश्तमिल है, इस के चार हिस्से हैं ।

- (1) याद कैसे करें ?
- (2) औरादो वजाइफ़ पढ़ने की आदत बनाइये
- (3) सिद्दहत बख़्श ग़िज़ाएं इस्ति’माल कीजिये
- (4) याददाश्त कमज़ोर करने वाले आ’माल

«1» याद कैसे करें ?

किसी बात को ज़ेहन में महफूज़ करना अहम तरीन भी है और मशक्कत तलब भी, इस के लिये सन्जीदा कोशिश ही कामयाबी

से हम किनार करा सकती है। किसी भी चीज़ को याद करने के लिये चन्द उमूर का लिहाज़ करना बहुत ज़रूरी है लिहाज़ा निहायत तवज्जोह से इन तमाम उमूर का मुतालआ फ़रमाइये आप अपनी ज़िन्दगी में इन उमूर को नाफिज़ कर के हैरत अंगेज़ तब्दीली महसूस करेंगे।

याद करने से पहले क़बिले तवज्जोह उमूर

हमारे रोज़ मर्रा के मा'मूलात में कुछ आदतें ऐसी शामिल हो जाती हैं जो कुव्वते हाफिज़ा के लिये बहुत नुक़सान देह होती हैं लिहाज़ा अच्छी आदतें अपनाना और बुरी आदतें छोड़ना हमारी याददाश्त को क़वी करने के लिये निहायत ज़रूरी है। याद करने से क़ब्ल अगर इन ग्यारह⁽¹¹⁾ उमूर का लिहाज़ रखा जाए तो किसी भी बात को जल्द ज़ेहन नशीन करने में काफ़ी आसानी होगी।

1) अच्छी निय्यत

किसी भी अमल से क़ब्ल अच्छी निय्यत करने का मतलब येह है कि जो अमल किया जा रहा है दिल उस की तरफ़ मुतवज्जेह हो और वोह अमल रिज़ाए इलाही के लिये किया जाए लिहाज़ा याद करने से पहले रिज़ाए इलाही की निय्यत करना और जो इल्म हासिल होगा उसे दूसरों तक पहुंचाने का अज़्म कर लेना बहुत मुफ़ीद है। इस निय्यत की बरकत से जल्द याद होने की क़वी

उम्मीद है जैसा कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : إِنَّمَا يَحْفَظُ الرَّجُلُ عَلَى قَدَرِ نَيْتِهِ “या’नी बन्दा अपनी नियत के मुताबिक ही याद कर पाता है ।”⁽¹⁾

हमारे अस्लाफ़ नियत की दुरुस्ती को आख़िरत की बेहतरी के लिये बहुत ज़रूरी समझते थे चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अली बिन मदीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْ फ़रमाते हैं : जब मैं हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बारगाह से रुख़्सत होने लगा तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : अन् करीब तुम्हें इस इल्म की वज्ह से खासी आज़माइश का सामना होगा, क्यूंकि लोग अपनी हाज़तें ले कर तुम्हारे पास आएंगे लिहाज़ा तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहना और इस तरह की सूरते हाल में भी अपनी नियत अच्छी ही रखना ।⁽²⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारी अच्छी अच्छी नियतें दुन्या व आख़िरत की कामयाबी का सबब हैं जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अबू आसिम नबील رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के इन्तिक़ाल के बा’द हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन यहूया رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को ख़्वाब में आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की ज़ियारत हुई । हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन यहूया رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अर्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी

① ... الجامع لاخلاق الراوى وآداب السامع، ذكر الاسباب التى يستعان...الخ، ص ۴۵۴

② ... الجامع لاخلاق الراوى وآداب السامع، ذكر الاسباب التى يستعان...الخ، ص ۴۵۴

मग़फ़िरत फ़रमा दी, फिर दरयाफ़्त फ़रमाया : दुन्या में मेरे मुतअल्लिक़ किस तरह की गुफ़्तगू होती है ? हज़रते इब्राहीम बिन यहूया **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने अर्ज़ की : “हम जब भी आप का नाम लेते हैं तो आप के ख़िलाफ़ कोई एक जुम्ला भी नहीं कहते ।” येह सुन कर आप ख़ामोश रहे फिर हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन यहूया **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की जानिब मुतवज्जेह हो कर इरशाद फ़रमाया : लोगों को उन की निय्यत के मुताबिक़ ही (अज़्र) दिया जाता है ।⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी भी चीज़ को याद करने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें करने की आदत बनाइये, इस से दुन्या व आख़िरत में कामयाबी पाने का ज़ब्बा जितना ज़ियादा उभरेगा याद करने में उतना ही दिल लगेगा । मुख़लिफ़ कामों में अच्छी अच्छी निय्यतें बढ़ाने के लिये शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** के रिसाले “सवाब बढ़ाने के नुस्ख़े” का मुतालआ कीजिये ।

﴿2﴾ गुनाहों से दूर रहिये

जिस तरह नेकी हाफ़िज़े के लिये तक्विय्यत का बाइस बनती है उसी तरह गुनाह हाफ़िज़े को कमज़ोर करने का सब से बड़ा सबब हैं । येह ही वज्ह है कि हमारे अस्लाफ़ ने गुनाहों को कुव्वते हाफ़िज़ा के लिये मोहलिक तरीन मरज़ और तर्के गुनाह को निस्त्यान का सब से मुजरब और बेहतरीन इलाज क़रार दिया है इस के मुतअल्लिक़ अल्लाह वालों के अक्वाल मुलाहज़ा फ़रमाइये :

① ... الجامع لاخلاق الراوى وآداب السامع، ذكر الاسباب التى يستعان... الخ، ص ۲۵۵

«1» सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं समझता हूँ कि बन्दा गुनाहों की आदत अपनाने की वजह से निस्याने इल्म (या'नी इल्म भूल जाने) का शिकार होता है ।⁽¹⁾

«2» हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन यह्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बारगाह में सुवाल किया : कुव्वते हाफ़िज़ा के लिये मुफ़ीद तरीन चीज़ क्या है ? इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू अब्दुल्लाह ! कुव्वते हाफ़िज़ा के लिये सब से मुफ़ीद तरीन तर्के गुनाह है ।⁽²⁾

«3» हज़रते सय्यिदुना बिशर बिन हारिस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : अगर इल्म को ज़ेहन नशीन करना चाहते हो तो गुनाह छोड़ दो ।⁽³⁾

«4» हज़रते सय्यिदुना अली बिन ख़शरम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने हज़रते सय्यिदुना वकीअ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बारगाह में अर्ज़ की : ऐ अबू सुफ़यान ! कुव्वते हाफ़िज़ा के लिये आप किस चीज़ को मुफ़ीद तरीन समझते हैं ? इरशाद फ़रमाया : तर्के गुनाह कुव्वते हाफ़िज़ा का बेहतरीन मुआविन है ।⁽⁴⁾

① ... اقتضاء العلم العمل للخطيب، باب في التغليظ على ترك العمل بالعلم، ص ٦١، رقم: ٩٦

② ... الجامع في الحث على حفظ العلم، ص ٨٩

③ ... الجامع في الحث على حفظ العلم، ص ٩٠

④ ... الجامع في الحث على حفظ العلم، ص ٩٠

﴿5﴾ हज़रते सय्यिदुना वकीअ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने एक मौक़ए पर फ़रमाया :
गुनाह छोड़ कर कुव्वते हाफ़िज़ा पर मदद हासिल करो ।⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे मुआशरे में गुनाहों का ऐसा दौर दौरा है कि नेक सोहबत न मिलने की वजह से बसा औकात नेकियों पर इस्तिक्ामत नहीं मिलती, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दौरे हाज़िर में दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल किसी ने'मत से कम नहीं जहां गुनाहों की आदत छूट जाती है, नेकियां करने की तौफ़ीक़ मिलती है और सब से बढ़ कर इस्तिक्ामत नसीब होती है । आप भी मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये और मदनी माहोल में होने वाले सुन्नतों भरे इजतिमाआत में शिर्कत, मदनी इन्आमात पर अमल और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ नेक बनने और गुनाहों से नफ़रत करने का ज़ेहन बनेगा और इस की बरकत से हाफ़िज़ा भी मज़बूत होगा ।

﴿3﴾ सिर्फ़ रिज़्के हलाल पर इन्दिस्सा कीजिये

रिज़्के हलाल से परवरिश पाने वाला ज़ेहन वसीअ होता है और पुर सुकून रहता है, जब कि कस्बे हराम से कुव्वते क़ल्ब और कुव्वते नज़र दोनों बुरी तरह मुतअस्सिर होते हैं, बदन और कुव्वते हाफ़िज़ा में बिगाड़ पैदा होता है, न हराम रिज़्क में बरकत होती है और न ही इस की मदद से अच्छे कामों पर मदद मिलती है ।⁽²⁾

1 ... روضة العقلاء لابن حبان، ص ३९

2 ... الجامع فی الحث علی حفظ العلم، ص ९५

लुक़्मए हलाल में बरकत है

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूले करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस शख्स ने हलाल माल कमाया फिर उसे खुद खाया या उस कमाई से लिबास पहना और अपने इलावा **اَبْوَاهُ** عَزَّوَجَلَّ की दीगर मख़्लूक (जैसे अपने अहलो इयाल और दीगर लोगों) को खिलाया और पहनाया तो उस का येह अमल उस के लिये बरकत व पाकीज़गी है ।⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें हमेशा हलाल रोज़ी कमाना, खाना और खिलाना चाहिये और लुक़्मए हलाल की तो क्या ही बात है चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ एक बुजुर्ग رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का कौल नक़ल करते हैं : “मुसलमान जब हलाल खाने का पहला लुक़्मा खाता है, उस के पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं । और जो शख्स तलबे हलाल के लिये रुस्वाई के मक़ाम पर जाता है उस के गुनाह दरख़्त के पत्तों की तरह झड़ते हैं ।”⁽²⁾

① ... الاحسان بترتيب ابن حبان، كتاب الرضاع، باب النفقة، ذكر كتبه الله جلّ وعلا الصدقة

للمنفق... الخ، الجزء: ٦، ٢١٨/٣، حديث: ٣٢٢٢

② ... احياء العلوم، كتاب الحلال والحرام، الباب الاول في فضيلة الحلال... الخ، ١١٢/٢

लुक़्मए ह़राम की नुहूसत

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुजुरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने दुन्या में ह़राम तरीक़े से माल कमाया और उसे ना हक़ जगह खर्च किया तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उसे ज़िल्लत व हक़ारत के घर (या'नी जहन्नम) में दाख़िल कर देगा ।⁽¹⁾

मुकाशफ़तुल कुलूब में है : आदमी के पेट में जब लुक़्मए ह़राम पड़ा तो ज़मीनो आस्मान का हर फ़िरिश्ता उस पर ला'नत करेगा जब तक उस के पेट में रहेगा और अगर इसी हालत में (या'नी पेट में ह़राम लुक़्मे की मौजूदगी में) मौत आ गई तो दाख़िले जहन्नम होगा ।⁽²⁾

﴿4﴾ इल्म पर अमल का जज़्बा पैदा कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़क़त मा'लूमात हासिल कर के उन्हें ज़ेहन में महफूज़ कर लेना मुफ़ीद नहीं होता बल्कि मुफ़ीद तरीन येह है कि इल्म पर अमल करने का जज़्बा भी हो और अमली ज़िन्दगी में इस के असरात भी नज़र आएँ, इस में न सिर्फ़ हमारा बल्कि पूरे मुआशरे का फ़ाइदा है । हमारे अस्लाफ़ का भी येह ही

1 ... شعب الایمان، باب فی قبض الید علی الاموال، ۳/۳۹۶، حدیث: ۵۵۲۷ ملقطاً

2 ... مکاشفة القلوب، الباب الاول فی بیان الخوف، ص ۱۰

तरीका था जैसा कि हज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन इब्राहीम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : हदीस पर अमल कर के हम हिफ़्ज़े हदीस पर मदद हासिल किया करते थे ।⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इल्म पर अमल करने वाले शख्स को **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ऐसा इल्म भी अता फ़रमाता है जिसे वोह नहीं जानता चुनान्चे,

मन्कूल है कि हर चीज़ की ज़कात होती है और इल्म की ज़कात इस पर अमल करना है, तो जो शख्स इल्म की ज़कात अदा करता है **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** उस में ला ज़वाल बरकत अता फ़रमा देता है ।⁽²⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इल्म हासिल करने के साथ साथ उस पर अमल करने से इल्म के हकीकी फ़वाइद हासिल होते हैं । नबिय्ये मुकर्रम, रसूले मोहत्तशम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है : जिस इल्म से नफ़अ हासिल न किया जाए वोह उस ख़ज़ाने की मिस्ल है जिस को **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की राह में खर्च न किया जाए ।⁽³⁾

बे अमल आलिम कल बरोजे क़ियामत भी हसरत में डूबा होगा, जैसा कि सरकारे बे मिसाल, बीबी आमिना के

① ... الجامع في الحث على حفظ العلم، ص ١٠٢

② ... الجامع في الحث على حفظ العلم، ص ١٠٦

③ ... دارمي، المقدمة، باب البلاغ عن رسول الله صلى الله عليه وسلم وتعليم السنن،

١٣٨/١، حديث: ٥٥٦

लाल **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने अलीशान है : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुनिया में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)।⁽¹⁾

इसी तरह हदीस के बुलन्द पाया इमाम हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उयैना **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** इरशाद फ़रमाते हैं : लोगों में सब से बड़ा जाहिल वोह शख्स है जो अपने इल्म पर अमल न करे, और सब से बड़ा अलिम वोह है जो अपने इल्म पर अमल करे और सब से अफ़ज़ल वोह है जो **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** से सब से ज़ियादा डरने वाला हो।⁽²⁾

﴿5﴾ बारगाहे इलाही में दुआ करें

اَللّٰهُ **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में अपने हाफ़िज़े की मज़बूती के लिये दुआ करें कि दुआ मोमिन का हथियार है। येह दुआ इस तरह भी की जा सकती है, **بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ** पढ़ कर रब **عَزَّوَجَلَّ** की हम्द बयान करने और रहमते अलम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पर दुरूदे पाक पढ़ने के बा'द यूँ अर्ज़ करें) ऐ मेरे मालिको मौला **عَزَّوَجَلَّ** ! तेरा आजिज़ बन्दा तेरी बारगाह में हाज़िर है, ऐ **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** ! मैं तेरे

1... تاریخ ابن عساکر، ۱۳۷/۵۱

2... دارمی، المقدمة، باب فی فضل العلم والعلم، ۱/۱۰۷، حدیث: ۳۳۰

दीन का इल्म हासिल करना चाहता हूं लेकिन मेरी याददाश्त मेरा साथ नहीं देती, ऐ हर शै पर कादिर रब **عَزَّوَجَلَّ** ! तू अपनी कुदरते कामिला से मेरे कमज़ोर हाफिज़े को क़वी फ़रमा दे और मुझे भूल जाने की बीमारी से नजात अता फ़रमा ।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

﴿6﴾ हब वक़्त बा वुजू रहिये

बा वुजू रहने के दीनी फ़वाइद भी बे शुमार हैं, मदीने के ताजदार **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ** ने हज़रते सय्यिदुना अनस **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** से फ़रमाया : बेटा अगर तुम हमेशा बा वुजू रहने की इस्तिताअत रखो तो ऐसा ही करो क्यूंकि मलकुल मौत जिस बन्दे की रूह हालते वुजू में कब्ज़ करता है उस के लिये शहादत लिख दी जाती है ।⁽¹⁾

आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْہِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن** फ़रमाते हैं : बा'ज आरिफ़ीन ने फ़रमाया जो हमेशा बा वुजू रहे **اَللّٰهُ** तअ़ाला उसे सात फ़ज़ीलतों से मुशर्रफ़ फ़रमाए : (1) मलाइका उस की सोहबत में रग़बत करें । (2) क़लम उस की नेकियां लिखता रहे । (3) उस के आ'ज़ा तस्बीह करें । (4) उस से तक्बीरे ऊला फ़ौत न हो । (5) जब सोए **اَللّٰهُ** तअ़ाला कुछ फ़िरिशते भेजे कि ज़िन्नो इन्स के शर से उस की हिफ़ाज़त करें । (6) सकराते मौत उस पर आसान हो । (7) जब तक बा वुजू हो अमाने इलाही में रहे ।⁽²⁾

① ... کنز العمال، کتاب الطہارۃ، الباب الثانی فی الوضوء، الفصل الاول فی وجوب

الوضوء فضائلہ، الجزء: ۹، ۵/۱۳۰، حدیث: ۲۶۰۶۱

②फ़तावा रज़विय्या, 1/702

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर वक्त बा वुजू रहने की कोशिश कीजिये। एक फिजियो थेरापिस्ट का कहना है : “मुसलमानों में मायूसी का मरज़ कम पाया जाता है क्योंकि वोह दिन में कई मरतबा हाथ, मुंह और पाउं धोते (या'नी वुजू करते) हैं।” (नमाज़ के अहकाम, सफ़हा-68) बा वुजू रहने का एक फ़ाइदा तो येह है कि हमें सुन्नत पर अमल के साथ साथ खुद ए'तिमादी की दौलत और एहसासे कमतरी से छुटकारा नसीब होगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿7﴾ **मुनज़्ज़म जिन्द्गी गुज़ारिये**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वोह अफ़राद जिन के घरों में बे तरतीबी रहती है या वोह अपनी चीज़ें मुनज़्ज़म अन्दाज़ से नहीं रखते उन में भूलने की आदत ज़ियादा पाई जाती है। इस लिये अगर आप भूलने की आदत का शिकार हैं तो पहले अपने मा'मूलात का जाइज़ा ले कर मदनी पेड में चन्द मदनी फूलों की सूरत में तहरीर फ़रमा लीजिये क्योंकि कामों को तरतीब से तहरीर कर लेना **याददाश्त** को तेज़ करने का बेहतरीन तरीका है। इस के इलावा अपनी अहम चीज़ों जैसे चाबी और दूसरी ज़रूरी अश्या को मख़्सूस जगह पर रखने की आदत डालिये। अगर आप एक बार अपनी ज़रूरी चीज़ें मख़्सूस जगह पर रखना शुरू कर देंगे तो रफ़्ता रफ़्ता आप की आदत बनती

पेशकश : मजलसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

चली जाएगी और आप को ब वक्ते ज़रूरत अपनी चीज़ें तलाश करने के लिये ज़ेहन पर ज़ोर नहीं डालना पड़ेगा और न ही आप को परेशानी होगी । जब आप का ज़ेहन इस किस्म के दबाव से ख़ाली होगा तो कोई भी चीज़ याद करना बेहद आसान हो जाएगा ।

﴿8﴾ नींद का ख़ास ख़याल रखें

मशीन हो या इन्सान अपने काम को जारी रखने और इस में बेहतरी के साथ पाईदारी लाने के लिये कुछ वक्फ़े का मोहताज है । इन्सान जब कोई काम करता है तो उस के तमाम आ'ज़ा किसी न किसी तरह उस के काम में मशगूल होते हैं और दिमाग़ जो अहम तरीन उज़्व है उस का किरदार सब से ज़ियादा होता है । हमारे मा'मूलाते ज़िन्दगी में नींद एक ऐसी ने'मत है जो बदने इन्सानी को सुकून बख़्शती और तवानाई से बहरा वर करती है, जिस के नतीजे में हमारे जिस्म के साथ हमारी दिमागी कुव्वत में सौ फ़ीसद काम करने की सलाहियत पैदा हो जाती है, ग़ालिबन वोही नींद हमारे हाफ़िज़े की कुव्वत बेदार करने में मददगार साबित होगी जिस में मुन्दरिजए ज़ैल उमूर का लिहाज़ रखा गया हो :

(1) सोने और जागने के औकात मुक़र्र कीजिये और नींद के वक़्त में सोने के इलावा हर काम से गुरैज़ कीजिये ।

(2) नींद ख़त्म करने वाली अदविय्यात का इस्ति'माल हरगिज़ मत कीजिये ।

(3) इस बात का ख़ास ख़याल रखिये कि जाए आराम या'नी सोने वाली जगह में किसी किस्म का शोरो गुल न हो और न

वहां किसी किस्म की तेज़ रौशनी हो ताकि नींद से जो मतलूब है वोह हासिल हो ।

(4) सोने के लिये कोई कमरा या मख़्सूस जगह मुक़रर कीजिये और हर जगह सोने से इजतिनाब कीजिये कि ऐसी सूरत में ख़लल वाक़ेअ होने का इम्कान रहेगा जिस से सर दर्द और दोबारा नींद न आने जैसे मसाइल पैदा हो सकते हैं ।

रात की नींद सब से ज़ियादा अहम है लेकिन अगर मुमकिन हो तो दिन में कैलूला करना या'नी कुछ देर आराम करना भी मुफ़ीद है कि इस तरह दिमाग़ को कुछ देर सुकून मिलने के सबब कुव्वते याददाश्त में मज़ीद इज़ाफ़ा होगा ।

﴿9﴾ शुक्र अदा कीजिये

कुव्वते हाफ़िज़ा **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की एक ने'मत है और इस ने'मत को जाइज़ कामों में इस्ति'माल करना ही इस ने'मत का अमलन शुक्र अदा करना है, **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है :

لَيْنْ شَكْرْتُمْ لَا زَيْدَاتْكُمْ

(प १३, अब्राहिम: ८)

तर्जमए कज़ुल ईमान : अगर एहसान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा ।

तो अगर हम क़ौलन व फ़े'लन इस अनमोल ने'मत का शुक्र अदा करेंगे तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** इस में बरकत अता फ़रमाएगा यूं कम कुव्वते हाफ़िज़ा वाले की कुव्वते याददाश्त में इज़ाफ़ा होगा और पहले से क़वी हाफ़िज़ा रखने वाले की याददाश्त में मज़ीद कुव्वत पैदा होगी ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन उमूर को अमली ज़िन्दगी में नाफ़िज़ करने के बा'द आप अपने ज़ेहन को खुद पुर सुकून महसूस करेंगे और इसी सुकून व इतमीनान की ब दौलत कोई भी चीज़ ज़ेहन नशीन करना निहायत आसान हो जाएगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

याद करते हुवे क़बिले लिहाज़ उमूर

बा'ज औकात ऐसा होता है कि किसी चीज़ का याद करना निहायत ज़रूरी होता है लेकिन हृद दरजा कोशिश के बा वुजूद एक लफ़्ज़ भी ज़ेहन नशीन करना मुश्किल तरीन हो जाता है और याद न करने की वजह से नाकामी का भयानक साया हमारे पीछे लग जाता है जिस की वजह से तरक्की की जानिब उठने वाले क़दम किसी भी तरह आगे नहीं बढ़ पाते । किसी बात के ज़ेहन नशीन न होने में दर अस्ल चन्द चीज़ें रुकावट बनती हैं अगर इन का इज़ाला कर दिया जाए तो याद करने में काफ़ी आसानी पैदा हो जाती है । किसी भी चीज़ को याद करने के दौरान इन आठ उमूर का खुसूसी खयाल रखिये ।

﴿1﴾ जो चीज़ याद करना चाहें उसे बग़ौब सुनें

अहम तरीन गुफ़्तगू में ज़ेहनी तौर पर शरीक होने के बजाए सिर्फ़ जिस्मानी तौर पर शरीक होना ग़ाइब दिमागी कहलाता है । ग़ाइब दिमागी इन्सान का वोह मरज़ है जो इन्सानी सलाहिय्यतों को दीमक की तरह चाट कर आहिस्ता आहिस्ता लकड़ी की तरह

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

बोसीदा और ना काबिले इस्ति'माल बना देता है। इसी लिये अल्लाह वाले बग़ैर सुनने की तरगीब दिलाया करते थे चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना हसन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : हुजूरे कल्बी (मुकम्मल तवज्जोह) से बग़ैर सुन, क्यूंकि जब दिल हाज़िर होता है तो कही जाने वाली तमाम बातें समझता है लेकिन जब दिल गाइब होता है तो कुछ भी समझ नहीं आता।⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इसी लिये हाज़िर दिमागी और मुकम्मल तवज्जोह से सुनना निहायत ज़रूरी है। येह ही वज्ह है कि किसी बात को याद रखने के लिये “मुकम्मल तवज्जोह” को अगर सब से अहम तरीन अन्सर करार दिया जाए तो कुछ ग़लत न होगा। किसी बात को सुनते वक़्त या किसी तहरीर को पढ़ते वक़्त अगर पूरी तवज्जोह न हो तो उस बात के ज़ेहन से जल्द निकल जाने का बहुत इमकान है और ग़लत मफ़हूम ज़ेहन में महफूज़ होने का भी एहतिमाल है। इसी तरह किसी चीज़ को याददाश्त में महफूज़ करने के लिये “याद” करना भी कामिल तवज्जोह के जुमरे में आता है और येह अमल भी मतलूबा चीज़ ज़ेहन नशीन करने में मददगार साबित होता है।

❁❁ अच्छी तरह समझ कर याद करें

जब भी कुछ सुनें या मुतालाआ करें तो इस बात को मद्दे नज़र रख कर सुनिये या पढ़िये कि अगर येह सब कुछ मुझे बयान करने का कहा जाए या किसी को समझाने या बताने की हाज़त पेश आए

तो मैं ब हुस्नो खूबी बयान कर सकूँ। इस के लिये कम अज़ कम अपने आप से ही हम कलाम हो कर बयान करें ताकि बात अच्छी तरह समझ आ जाए और याददाश्त में भी मुस्तक़िल महफूज़ हो जाए। येह ही वोह वाहिद मे'यार है जो हमारे फ़ेहम और समझ की सलाहियत को हम पर वाज़ेह करेगा नीज़ "हमारे अन्दर किसी को समझाने की कितनी कुव्वत है ?" इस बात का भी पता चलेगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

﴿3﴾ बुलन्द आवाज़ से याद कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किताब का मुतालआ करने वाले के लिये मुनासिब है कि इतनी बुलन्द आवाज़ से पढ़े कि खुद सुन ले चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन बक्कार رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं अपने रजिस्टर में (मौजूद रिवायतों को ज़ेहन नशीन करने के लिये) ग़ौरो फ़ि़क़र करने में मशगूल था, बुलन्द आवाज़ से पढ़ने के बजाए दिल ही दिल में दोहरा रहा था, इतने में मेरे वालिद साहिब तशरीफ़ लाए और मुझे मुखातब कर के इरशाद फ़रमाया : इस रजिस्टर में जितनी भी रिवायतें हैं वोह सिर्फ़ आप की आंख के ज़रीए दिल तक नहीं पहुंच पाएंगी, लिहाज़ा जब भी कोई रिवायत ज़ेहन नशीन करना चाहो तो पहले ग़ौर से समझो फिर बुलन्द आवाज़

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

से याद करो क्योंकि इस तरह आंख और कान दोनों ही के ज़रीए वोह बात दिल में उतर कर महफूज़ हो जाएगी ।⁽¹⁾

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** फ़रमाते हैं : सिर्फ़ आंखों से नहीं ज़बान से भी पढ़िये कि इस तरह याद रखना ज़ियादा आसान है ।⁽²⁾ लिहाज़ा दिल ही दिल में पढ़ने के बजाए आवाज़ से पढ़िये, लेकिन येह भी ख़याल रहे कि बुलन्द आवाज़ से पढ़ने में किसी दूसरे को तकलीफ़ न हो ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿4﴾ याद करने के लिये वक़्त का इन्तिखाब

किसी भी काम के लिये सब से ज़ियादा अहम्मियत मुनासिब वक़्त के इन्तिखाब को हासिल है, लिहाज़ा याद करने के लिये भी आप अपने जदवल (Time Table) में मुनासिब वक़्त का इन्तिखाब कीजिये । हमारे अस्लाफ़े किराम **رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام** किसी भी चीज़ को याद करने के लिये रात के वक़्त का इन्तिखाब फ़रमाया करते थे चुनान्वे,

(1) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं : मैं ने रात को तीन हिस्सों में तक्सीम कर रखा है, एक हिस्सा नमाज़ पढ़ते हुवे, दूसरा हिस्सा आराम में जब कि रात का तीसरा हिस्सा ह़दीसे रसूल याद करते हुवे गुज़ारता हूं ।⁽³⁾

① ... الجامع في البحث على حفظ العلم، ص ٤٢

②इल्मो हिकमत के 125 मदनी फूल, स. 75

③ ... الجامع في البحث على حفظ العلم، ص ٤٥

(2) हज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन उवैस رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : जब भी कुछ याद करना चाहो तो जल्द सो जाया करो फिर सहरी के वक़्त उठ कर चराग़ रौशन करो और याद करने में मशगूल हो जाओ, येह अमल करने से إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ निस्नान का मरज़ क़रीब भी नहीं आएगा ।⁽¹⁾

(3) हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन फुरात رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : हम अपने असातिज़ा से कुव्वते हाफ़िज़ा बढ़ाने वाली चीज़ों का तज़क़िरा सुनते ही रहते थे, तमाम असातिज़ा इस बात पर मुत्तफ़िक् थे कि कुव्वते हाफ़िज़ा के लिये सब से मुफ़ीद तरीन चीज़ किसी चीज़ को बार बार देखना है और रात को याद करना दिन में याद करने से ज़ियादा बेहतर है ।⁽²⁾

(4) हज़रते सय्यिदुना मुन्ज़िर رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपने बेटे हज़रते नो'मान बिन मुन्ज़िर رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से इरशाद फ़रमाया : बेटा ! मुझे पसन्द है कि रात में तुम फ़न्ने अदब का मुतालआ करो, क्यूंकि कि दिन में दिल मशगूल होता है जब कि रात में पुर सुकून होता है, जब भी रात में कोई चीज़ याद करोगे तो

① ... الجامع لاخللاق الراوى وآداب السامع، ماينبغى للطالب ان يوظفه، ص ٢٦٠،

② ... الجامع فى الحث على حفظ العلم، ص ٤٤

तुम्हारे दिल में नक़्श हो जाएगी।⁽¹⁾ लिहाज़ा रात के पुर सुकून वक़्त में याद करना निहायत मुफ़ीद है और बुजुर्गाने दीन **رَحِمَهُمُ اللَّهُ الْهَيِّين** की सीरत पर अमल की निय्यत हो तो जल्द याद हो जाने की क़वी उम्मीद है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बच्चों को सोते हुवे कुछ न कुछ याद करवाएं

साइन्सी तहक़ीक़ के मुताबिक़ छोटी उम्र में सोने से क़बल जो भी याद किया जाए वोह बहुत जल्द ज़ेहन नशीन हो जाता है लिहाज़ा बच्चे नींद से पहले जो कुछ सीखते और याद करते हैं उस के मुस्बत नताइज सामने आते हैं जैसा कि हज़रते सय्यिदुना सहल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : “मेरी उम्र तीन साल थी और मैं रात को उठ कर अपने मामूं हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन सव्वार **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** को तन्हाई में नमाज़ पढ़ते देखता था। एक दिन मेरे मामूं ने मुझे से पूछा : “क्या तू उस **عَزَّوَجَلَّ** को याद नहीं करता जिस ने तुझे पैदा किया ?” मैं ने पूछा : “मैं उसे किस तरह याद करूं ?” उन्होंने ने फ़रमाया : “जब तुम बिस्तर पर लेटने लगो तो तीन बार ज़बान को हरकत दिये बिगैर महज़ दिल में येह कलिमात कहो : “**اللَّهُ مَعِيَ، اللَّهُ نَاطِرُ الرَّأْيِ، اللَّهُ شَهِدِي**” **عَزَّوَجَلَّ** मुझे देख रहा है, **عَزَّوَجَلَّ** मेरे साथ है,

① ... الجامع لاخلق الراوى وآداب السامع، ماينبغي للمطالب ان يوظفه، ص ٢٦٠

मेरा गवाह है ।” आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** इरशाद फ़रमाते हैं : “मैं ने चन्द रातें येह कलिमात पढ़े फिर उन्हें बताया तो आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने फ़रमाया : “हर रात सात मरतबा पढ़ो ।” मैं ने उन्हें पढ़ा फिर बताया तो आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने फ़रमाया : “हर रात ग्यारह मरतबा येह कलिमात पढ़ो ।” मैं ने इसी तरह पढ़ा, तो मैं ने उस की लज़्ज़त अपने दिल में महसूस की । जब एक साल गुज़र गया तो मेरे मामूं ने मुझ से फ़रमाया : “मैं ने जो कुछ तुम्हें सिखाया है उसे याद रखो और क़ब्र में जाने तक हमेशा पढ़ते रहना, तुम्हें दुनिया व आख़िरत में नफ़अ देगा । “मैं ने कई साल तक ऐसा किया तो अपने अन्दर उस की लज़्ज़त को महसूस किया । फिर एक दिन मेरे मामूं ने फ़रमाया : “ऐ सहल ! **عَزَّوَجَلَّ** जिस शख्स के साथ हो, उसे देखता हो और उस का गवाह हो, वोह उस की ना फ़रमानी कैसे कर सकता है ? गुनाह से बचो ।”(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बचपन ही से अगर **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की महबूबत, इसके माहे रिसालत **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**, फ़िक्रे आख़िरत, गुनाहों से नफ़रत और नेकियों में रग़बत दिलाने वाली नसीहतें बच्चों को ज़ेहन नशीन करा दी जाएं तो येह उन की दुनिया व आख़िरत के लिये बहुत ही मुफ़ीद होंगी लिहाज़ा बच्चों को सोने से पहले शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** की तहरीर

① ... الرسالة القشيرية، أبو محمد سهل بن عبد الله التستري، ص ۳۹

कर्दा बच्चों की सच्ची कहानियां⁽¹⁾ सुनाई जाएं तो न सिर्फ मा'लूमात का ढेरों खज़ाना उन के ज़ेहन में महफूज़ होता रहेगा बल्कि इस में मौजूद महकते महकते मदनी फूल उन की सलाहियत और क़ाबिलियत को महकाने और दुन्या व आख़िरत में उन्हें नुमायां मक़ाम दिलाने में कारगर साबित होंगे ।

﴿5﴾ पुर सुकून कैफ़ियत में याद कीजिये

मेहनत व मशक्कत यकीनन कामयाबी का जीना है लेकिन कामयाबी का सफ़र हमें अपने जिस्म पर सुवार हो कर ही तै करना होता है लिहाज़ा जिस्म को इतना न थकाएं कि उक्ताहट होने लगे क्योंकि उक्ताहट वाली तबीअत से याद करने में यकीनन वक़्त ही की बरबादी है, लिहाज़ा याद करते हुवे अपने ज़ेहन को फुज़ूल फ़ि़क्रों और बेहूदा सोचों से बचाते हुवे मुकम्मल तौर पर पुर सुकून रखने की कोशिश कीजिये ।

﴿6﴾ याद करने के लिये मुतासिब जगह का इन्तिखाब कीजिये

याद करने के लिये ऐसी जगह का इन्तिखाब कीजिये जहां शोरो गुल न हो और न ही वोह आमदो रफ़्त की जगह हो बल्कि पुर सुकून मक़ाम हो और गर्मी सर्दी के ए'तिबार से भी मो'तदिल हो, अगर इन चीज़ों का ख़याल न रखा जाए तो अगर्चे मुतालआ करना

①अब तक अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** की तहरीर कर्दा बच्चों की सच्ची कहानियों पर मुश्तमिल चार रिसाले शाएअ़ हो चुके हैं :

(1) नूर वाला चेहरा (2) फ़िरऔन का ख़्वाब (3) बेटा हो तो ऐसा (4) झूठा चोर

पेशक़श : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

और इस के निकत ज़ेहन में महफूज़ रखना मुमकिन हैं मगर ऐसा मुतालआ ज़िन्दगी भर याददाश्त में महफूज़ नहीं रह सकेगा ।

﴿7﴾ थोड़ा मुतालआ मगर इस्तिक़ामत के साथ

बा'ज औकात याद करने वाला मवाद ज़ियादा होता है ऐसी सूरत में सब का सब याद कर लेना भी मुमकिन नहीं होता, इसी तरह कभी किसी किताब का मुकम्मल मुतालआ कर के उस के मज़ामीन ज़ेहन में महफूज़ रखना भी मतलूब होता है तो इस तरह के मवाद को याददाश्त में बर करार रखने के लिये रोज़ाना थोड़ा थोड़ा मुतालआ करना फिर इस्तिक़ामत के साथ इसे जारी रखना याददाश्त के लिये अहम तरीन है, इस के लिये चन्द मदनी फूल पेशे खिदमत हैं :

❀.....हज़रते सय्यिदुना हम्माद बिन सुलैमान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपने एक शागिर्द से इरशाद फ़रमाया : रोज़ाना तीन मसाइल याद करो और इस में मज़ीद इज़ाफ़ा न करो । इसी तरह हज़रते सय्यिदुना ख़तीब बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : दर अस्ल दिल भी जिस्म का एक हिस्सा है कुछ चीज़ों का बोझ तो उठा लेता है और कुछ चीज़ों का बोझ उठाने से अज़िज़ रहता है ।⁽¹⁾

❀.....जिस तरह बा'ज लोग ढेर सारा वज़न उठा लेते हैं और बा'ज

मा'मूली सा वज़्म भी नहीं उठा पाते। बा'ज़ लोग कई कई मील पैदल चल लेते हैं और कुछ लोग एक मील चल कर ही थक जाते हैं। येही हाल कुव्वते हाफ़िज़ा का भी है कि बा'ज़ लोगों को चन्द सेकन्ड में कई वरक़ याद हो जाते हैं जब कि कुछ लोगों को घन्टों याद करते रहने के बा वुजूद एक लफ़्ज़ भी याद नहीं होता। लिहाज़ा बन्दा पहले अपनी तबीअत पहचाने कि एक वक़्त में कितना याद कर सकता है फिर उस ही के मुताबिक़ याद करे।⁽¹⁾

❁.....हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : तालिबे इल्म अपनी कुदरत से ज़ियादा चीज़ें याद न करे, बल्कि थोड़ी सी याद करने पर इक्तिफ़ा करे यूँ उस की याददाश्त भी मज़बूत होगी और उस का यकीन भी मुस्तहक़म होगा।⁽²⁾

❁.....हज़रते सय्यिदुना शुअबा **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : मैं हज़रते सय्यिदुना क़तादा **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की बारगाह में हाज़िर हो कर दो हदीसों का सुवाल करता, आप दो हदीसों बयान फ़रमा कर इरशाद फ़रमाते : मज़ीद बयान कर दूँ ? मैं अर्ज़ करता : नहीं, जब तक मैं इन बयान कर्दा अहादीस को याद न कर लूँ।⁽³⁾

❁.....हज़रते सय्यिदुना इमाम जोहरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** फ़रमाते हैं :

① ... الجامع في الحث على حفظ العلم، ص ١٨١

② ... الجامع في الحث على حفظ العلم، ص ١٨٦

③ ... الجامع في الحث على حفظ العلم، ص ١٨٦

अगर तुम ज़बरदस्ती कर के इल्म पर क़ाबू पाने की कोशिश करोगे तो येह तुम पर हावी हो जाएगा, लिहाज़ा कई दिन और रातों में रफ़्ता रफ़्ता इल्म हासिल करो तब तुम्हें कामयाबी हासिल होगी ।⁽¹⁾

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿8﴾ याददाश्त को तहरीरी सूत्र दीजिये

दौराने मुतालआ बारहा ऐसी बातें आती हैं जो हमारे लिये बिल्कुल नई होती हैं और हम उन्हें अपनी याददाश्त का हिस्सा बनाना चाहते हैं, उस के लिये एक अलग रजिस्टर बनाना और मुख़्तसर अल्फ़ाज़ लिख कर सफ़हा नम्बर के साथ इस बात को महफूज़ कर लेना भी फ़ाइदा मन्द है, इसी तरह किताब के इब्तिदाई औराक़ जो उमूमन ख़ाली होते हैं उन पर भी येह नोटिस बनाए जा सकते हैं नीज़ लिख लेने से इल्म महफूज़ भी हो जाता है चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं :⁽²⁾ ”يا'नी इल्म को लिख कर कैद कर लो ।“

हमारे बुजुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللَّهُ الْأُمِّيَّينَ मुफ़ीद बातें और अहम तरीन निकात लिख कर महफूज़ फ़रमाया करते येही वज्ह है कि हज़रते सय्यिदुना अ़साम बिन यूसुफ़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक दीनार (सोने के सिक्के) के इवज़ क़लम ख़रीदा ।⁽³⁾

① ... الجامع فی الحث علی حفظ العلم، ص ۱۸۷

② ... نواذر الاصول، الاصل الخامس والعشرون، ۲۶۵/۱

③राहे इल्म, स. 79

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लिख लेने से बात जल्द याद भी हो जाती है जैसा कि हज़रते सय्यिदुना खलील बिन अहमद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَحَد फ़रमाते हैं : मैं ने जो कुछ सुना, लिख लिया, जो कुछ लिखा वोह याद कर लिया, जो कुछ याद किया उस से फ़ाइदा उठाया है ।⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याददाश्त को तहरीरी सूरत देने से जहां हमारी मा'लूमात महफूज़ हो जाती है वहीं लिखने की मश्क़ भी होती रहती है और येह तहरीरी इम्तिहान में इम्तियाज़ी कामयाबी दिलाने के लिये बेहद मुआविन साबित होती है लिहाज़ा मुतालआ करते हुवे या करने के बा'द कोशिश कीजिये कि हासिले मुतालआ के नोट्स (Notes) बना लिये जाएं, إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ येह अमली मश्क़ आप की इल्मी तरक्की में कई गुना मुफ़ीद साबित होगी ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

कान पर क़लम रखो !

हज़रते सय्यिदुना जैद बिन साबित رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ कहते हैं कि एक रोज़ मैं हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की बारगाह में हाज़िर हुवा तो मैं ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सामने एक कातिब को देखा । नबिये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : क़लम को अपने कान पर रखो कि येह (अमल) लिखने वाले को (भूला) हुवा मज़मून याद दिलाने वाला है ।⁽²⁾

1 ... جامع بيان العلم وفضله، باب ذكر كراهية كتابة العلم بالصحف، ص ٨٠

2 ... ترمذی، کتاب الاستئذان، باب ماجاء فی تتریب الكتاب، ٣/٣٢٤، حدیث: ٢٤٢٣

हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ इस हदीसे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : अगर कातिब क़लम को कान से लगाए रखे तो उसे वोह मक्सद याद रहेगा जो उसे लिखना है। बेहतर येह है कि क़लम दाहिने कान पर रखे **अल्लाह** तआला ने हर चीज़ में कोई तासीर रखी है, क़लम कान में लगाने की येह तासीर है कि उसे मजमून याद रहता है।⁽¹⁾

याद कर लेने के बा'द क़ाबिले लिहाज़ उमूर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कोशिश, लगन और मेहनत के साथ कोई भी चीज़ याद होती है लेकिन ज़रूरत पड़ने पर अगर वोह मवाद (data) ज़ेहन से उतर जाए तो बेहद अफ़सोस भी होता है। किसी बात को याद करना उतना मुश्किल नहीं जितना उसे अपने ज़ेहन में महफूज़ रखना मुश्किल है। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** दर्जे ज़ैल मदनी फूलों पर अमल बेहद मुफ़ीद साबित होगा।

«1» तेज़ तर नज़रे सान्नी की आदत बनाएं

याददाश्त में किसी बात को महफूज़ रखने का एक तरीक़ा येह भी है कि मुतालाआ करने के बा'द तमाम मुतालाए को इब्तिदा से इन्तिहा तक सर सरी नज़र से देखा जाए और उस का एक खुलासा अपने ज़ेहन में नक़्श कर लिया जाए, येह अमल हासिले मुतालाआ

①मिरआतुल मनाजीह, 6/334

को दवाम बख़्शेगा। इस के लिये अपना एहतिसाब करना भी फ़ाइदे मन्द है, येह आदत बनाइये कि किसी भी चीज़ को पढ़ने के बाद अपना एहतिसाब कीजिये कि “मुझे इस मुतालए से क्या हासिल हुवा और कौन सा मवाद ज़ेहन नशीन हुवा और कौन सा नहीं ?”

«2» अपनी मा'लूमात को गुफ़्तगू का हिस्सा बनाइये

सन्जीदा और पुर वकार लोगों की इल्म से माला माल बातें इस लिये पसन्द की जाती हैं कि वोह हमेशा अपने मुतालए को गुफ़्तगू का हिस्सा बना कर बात को मुअस्सिर बना देते हैं, इन की हर बात से इल्मो हिक्मत के मदनी फूल हासिल होते हैं और उन के मुतालए का असर उन के अफ़आलो किरदार से भी नुमायां होता है। लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि जो मुतालआ करें उसे अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ अपने घर वालों और दोस्तों से बयान करें इस तरह भी मा'लूमात का ज़ख़ीरा तबील मुद्दत तक हमारे दिमाग़ में महफूज़ रहेगा।

«3» तक़राब से तक़रीब आती है

मशहूर मकूल्ला है : “مَاتَكَرَّرَتْ تَقَرَّرَ” या 'नी जिस बात की तक़रा की जाती है वोह दिल में क़रार पकड़ लेती है।”⁽¹⁾ लिहाज़ा जो कुछ पढ़ें उस की दोहराई (Repetition) करते रहिये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

1 ... عمدة القارى، كتاب المساقاة، باب بيع الخطب والكلام، ٩٠/٩، تحت الحديث: ٢٣٤٥

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان भी अहदीसे मुबारका की तकरार फ़रमाया करते थे चुनान्वे, हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “हम बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर हदीस शरीफ़ सुना करते थे जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपनी किसी हाज़त के सबब तशरीफ़ ले जाते तो हम हदीस की तकरार शुरूअ कर देते, फिर जब हम वहां से उठते तो ऐसा महसूस होता कि वोह तमाम की तमाम अहदीस हमारे दिल (की ज़मीन) में बो दी गई हैं।”⁽¹⁾ इसी तरह किसी मवाद को फ़क़त याद कर लेना काफ़ी न समझिये बल्कि वक़्तन फ़ वक़्तन इस की दोहराई की तरकीब फ़रमाइये। हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام भी इसी तर्ज़ को अपनाते थे जैसा कि हज़रते ख़तीब बग़दादी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : याद की हुई चीज़ों को बार बार दोहरा कर ही याद रखा जा सकता है। हज़रते सय्यिदुना इब्ने शिहाब ज़ोहरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से मरवी है इल्म दो सबब से जाता रहता है (1) निस्यान का तारी होना और (2) तकरार न करना। हज़रते सय्यिदुना ख़तीब बग़दादी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : सीखने वाले को चाहिये कि अपने किसी हम दरजा की रफ़ाक़त इख़्तियार करे और वोह एक दूसरे से सबक़ की दोहराई करें। दोहराई का बेहतरीन वक़्त “रात” है।⁽²⁾

1 ... مسند ابی یعلیٰ، مسند انس بن مالک، 3/392، حدیث: 3044

2 ... الفقیه والمتفقہ، باب آداب التدریس، 2/265، رقم: 953

बुजुर्गाने दीन رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّيِّئِينَ की बड़ी ता'दाद रात के वक़्त दोहराई किया करती थी। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अबू मूसा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मेरे वालिद (हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) नमाज़े इशा के बा'द हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास हाज़िर हुवे तो उन्होंने ने पूछा : ऐ अबू मूसा ! तुम्हें इस वक़्त किस बात ने यहां भेजा ? आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने जवाब दिया : मैं इस लिये हाज़िर हुवा हूं कि हम फ़िक़ह की तक़रार करें। हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : हम रात देर तक तक़रार करते रहे। मैं ने कहा : नफ़्ल नमाज़ अदा कर लें ? तो हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : हम नफ़्ल नमाज़ ही में है (या'नी इल्म हासिल करना नफ़्ल नमाज़ ही की मिस्ल है) रावी फ़रमाते हैं : पस वोह दोनों फ़ज़्र तक तक़रार करते रहे।⁽¹⁾

﴿4﴾ इल्मी महाफ़िल में शिर्कत की आदत डालिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इल्मी महाफ़िल में शिर्कत की आदत डालिये इस की बरकत से जहां इल्म में पुख़्तगी आएगी वहीं मा'लूमात का बेश कीमत ख़ज़ाना हाथ आएगा चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह मो'तज़ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : जो उलमा के मुज़ाकरे में कसरत से शिर्कत करता है, तो जितना वोह जानता

1... الفقيه والمتفقه، باب ما جاء في المذاكرة بالفقهاء، ٢/ ٢٦٤، رقم: ٩٥٣

है उसे (दोहराए जाने की वजह से) नहीं भूलता और जिन बातों को नहीं जानता, तो इन इल्मी मुजाकरों की बरकत से उसे जानने का मौक़अ मुयस्सर आता है ।⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह मो'तज़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के इस क़ौल से “मदनी मुजाकरों” की अहम्मियत ब ख़ूबी वाज़ेह़ हो जाती है। शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ मदनी मुजाकरों में इल्मे दीन के रंग बिरंगे मदनी फूल इरशाद फ़रमाते हैं, अपने तज़रिबात की रौशनी में पेचीदा मसाइल का हल बताते हैं और इल्मो हिक़मत के मदनी फूल इरशाद फ़रमा कर सामेईन के इल्म में इज़ाफ़ा फ़रमाते हैं। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ के येह मदनी मुजाकरे सिर्फ़ आम लोगों के लिये ही फ़ाइदे मन्द नहीं बल्कि उलमा के लिये भी यक्सां मुफ़ीद हैं, क्यूंकि इन मदनी मुजाकरों की बरकत से अपने इल्म पर अमल करने, इसे दूसरों तक पहुंचाने और मज़ीद मुतालआ करने का ज़ब्ज़ा पैदा होता है, जो बात पहले से मा'लूम है उस की दोहराई की तरकीब बनती है और मा'लूम न होने की सूरत में मज़ीद इल्मे दीन हासिल करने की सअ़ादत नसीब होती है, इन मदनी मुजाकरों में शिर्कत दुन्या व आख़िरत संवारने का बेहतरीन ज़रीआ है लिहाज़ा हमें भी मदनी मुजाकरों में शिर्कत करनी चाहिये और दूसरों को भी शिर्कत की तरगीब दिलानी चाहिये ।

① ... الجامع لاخلاق الراوى وآداب السامع، المذاكرة مع الشيوخ وذوى الاسنان، ص ॢॢ

हर वक्त सीखते रहना चाहिये

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رضي الله تعالى عنه फ़रमाते हैं : आदमी उस वक्त तक आलिम रहता है जब तक सीखता रहे, और जब इल्म हासिल करना तर्क कर दे, खुद को मज़ीद हुसूले इल्म से बे नियाज़ गुमान करने लगे और जितना सीख चुका उसी पर इक्तिफ़ा करने लगे तो उसे मुस्तक़िबल में जहालत का सामना करना पड़ेगा ।⁽¹⁾

﴿5﴾ आंखें बन्द कर के याददाश्त पर जोर दें

लंडन में होने वाली एक तहक़ीक़ से येह बात सामने आई है कि आंखें बन्द कर के याददाश्त पर जोर देने से ज़ेहन में महफूज़ मा'लूमात मुस्तहज़र हो जाती है । इस बात को साबित करने के लिये तहक़ीक़ करने वालों ने चन्द अफ़राद का इन्तिखाब किया और उन्हें कुछ मनाज़िर दिखाए जिस के बा'द उन तमाम अफ़राद से उन मनाज़िर के मुतअल्लिक़ चन्द सुवालात किये गए, दुरुस्त जवाबात देने वाले वोही थे कि जिन्होंने आंखें बन्द कर के सोचा था जब कि आंखें बन्द किये बिग़ैर सोचने वालों ने ग़लत जवाबात दिये । इस से मा'लूम हुवा कि किसी बात को याद करने के लिये आंखें बन्द कर के याददाश्त पर जोर देना मुफ़ीद है ।

1 ... الفقيه والمتفقه، باب ذكر شروط من يصلح للفتوى، 334/2، رقم: 1054

﴿6﴾ दिमागी वरज़िश की आदत डालिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दिमागी कारकदर्दगी और ज़ेहनी सलाहिय्यतों को बढ़ाने के लिये अपने दिमाग़ को सोच बिचार का आदी बनाने और पेचीदा बातों को हल करने के लिये ज़ेहनी सलाहिय्यत सर्फ़ करने को दिमागी वरज़िश कहते हैं। याद की हुई बातों को मुस्तहज़र रखने और ब वक़्ते ज़रूरत इस्ति'माल करने के लिये येह वरज़िश बेहद मुफ़ीद है अगर याददाश्त में महफूज़ मा'लूमात को इस तरह की वरज़िशों से तरो ताज़ा न रखा जाए तो मेहनत से याद की हुई मा'लूमात के जंग आलूद होने का ख़तरा रहता है लिहाज़ा वक़्तन फ़ वक़्तन ज़ेहनी वरज़िश के लिये मदनी कसोटी और ज़ेहनी आजमाइश कुव्वते हाफ़िज़ा बढ़ाने का मुफ़ीद तरीन ज़रीआ हैं। दुन्या भर में ऐसे कई बे ढंगे और अज़ीबो ग़रीब खेल राज़ हैं जो ब ज़ाहिर ज़ेहनी सलाहिय्यत बढ़ाने और क़ाबिलिय्यत में इज़ाफ़े के हवाले से काफ़ी शोहरत रखते हैं लेकिन येह वक़्ती ज़ेहनी वरज़िश और सलाहिय्यत बढ़ाने का महज़ गुमान बहुत बड़े उख़रवी नुक़सान का सबब बन सकता है। यकीनन एक मुसलमान को दुन्यवी फ़ाइदे से बढ़ कर उख़रवी कामयाबी ज़ियादा अज़ीज़ होती है लिहाज़ा बा अमल मुसलमान गुनाहों में ख़ैर तलाश करने को बे वुकूफ़ी समझता है क्यूंकि वोह जानता है ख़ालिक् की ना फ़रमानी कर के भलाई की उम्मीद रखना अक्लमन्दी नहीं है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकतों

के तो क्या कहने ! मदनी माहोल ऐसे कई मवाकेअ फ़राहम करता है जिस में ज़ेहनी आजमाइश होती है और सवाब का ख़ज़ाना भी हाथ आता है, मदनी मुज़ाकरों में शिर्कत यकीनन ज़ेहनी आजमाइश की आदत बनाने का एक बेहतरीन ज़रीआ है। मदनी माहोल में इस्लामी किताबों का मुतालआ, फिर इस मुतालए से हासिल होने वाले मदनी फूलों पर न सिर्फ़ खुद अमल करना बल्कि इनफ़िरादी कोशिश और मदनी काफ़िलों में सफ़र के ज़रीए दीगर इस्लामी भाइयों को भी अमल की तरगीब दिलाना, मदनी इन्आमात के रिसाले पुर करना, इन में मौजूद मदनी इन्आमात पर ग़ौरो फ़िक्र करना, जिन पर अमल नहीं उन को भी अपने आ'माल में शामिल करने की मन्सूबा बन्दी करना, दो घन्टे मदनी (तन्जीमी) कामों में सर्फ़ करना और सोच बिचार के ज़रीए इसे फ़ाइदे मन्द बनाना, मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में शिर्कत करना और दिन भर की मसरूफ़िय्यात का एक जदवल बनाना वगैरा, बिला शुबा इन तमाम कामों में हमारे दिमाग़ का बड़ा अहम किरदार होता है और मुन्दरिजए बाला उमूर के ज़रीए जब दिमाग़ पर बोझ पड़ता है इस अमल से दिमागी वरज़िश होती है और दिमाग़ की काबिलिय्यात में कई गुना इज़ाफ़ा होता है, मज़ीद येह कि सवाब का बेश कीमत ख़ज़ाना भी हाथ आता है। आप भी दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर अपनी सलाहिय्यातों को बढ़ाने और आख़िरत को बेहतर बनाने के लिये कमर बस्ता हो जाइये।

अगर कोशिश करे इन्सान.....

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यकीनन कुव्वते हाफ़िज़ा **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की अताकर्दा ने'मत है लेकिन अगर किसी का हाफ़िज़ा कमज़ोर हो तो उसे दिल बरदाश्ता नहीं होना चाहिये बल्कि मेहनत और लगन के साथ मक्सद पाने के लिये भरपूर कोशिश करनी चाहिये, क्योंकि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** किसी की मेहनत को कभी ज़ाएअ नहीं फ़रमाता लिहाज़ा हमें कोशिश करते रहना चाहिये और मुआमला **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के सिपुर्द कर देना चाहिये, न जाने कहां और किस वक़्त हमारी मेहनत रंग ले आए और हम पर करम हो जाए। तारीख़ में ऐसे कई वाकिआत मिलते हैं जिस के ज़रीए इस हकीक़त का ब ख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है, इन्ही में से एक वाकिआ मुलाहज़ा फ़रमाइये चुनान्वे,

हज़रते सय्यिदुना सा'दुद्दीन मसऊद बिन उमर तफ़्ताज़ानी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** जिन की किताबें दर्से निज़ामी (अलिम कोर्स) के निसाब में शामिल हैं। आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** काज़ी अज़ुदुद्दीन अब्दुरहमान शीराज़ी के हल्क़ए दर्स में सब से ज़ियादा कुन्द ज़ेहन थे, बल्कि कुन्द ज़ेहनी में आप की मिसाल दी जाती थी। इस के बा वुजूद आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने हिम्मत न हारी बल्कि किसी की बात को ख़ातिर में लाए बिगैर अपने अस्बाक़ पढ़ने और याद रखने के लिये कोशिश और मेहनत जारी रखी। एक दिन आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** सबक़ याद

करने में मसरूफ़ थे कि एक अजनबी शख्स ने आ कर कहा :
 सा'दुद्दीन ! उठो, हम सैरो तफ़रीह करने चलते हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने
 ने फ़रमाया : “मुझे सैरो तफ़रीह के लिये पैदा नहीं किया गया,
 (नीज़ मेरी हालत ऐसी है कि) मुतालए के बा वुजूद मुझे कुछ समझ
 नहीं आता, मैं भला किस तरह सैर को जा सकता हूँ ?” यह सुन कर
 वोह शख्स चला गया लेकिन कुछ देर बा'द फिर लौट आया और
 सैरो तफ़रीह के लिये चलने को कहा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने अपना
 साबिका जवाब दोहराया और उसे चलता किया। वोह फिर चला
 गया लेकिन कुछ देर बा'द दोबारा लौट आया और अब की बार
 कहने लगा : “आप को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم याद फ़रमा
 रहे हैं।” यह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के बदन पर कपकपी तारी
 हो गई और नंगे पाउं ही महबूबे रब्बे अकबर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के
 दीदार के लिये दौड़ पड़े हत्ता कि शहर से बाहर एक मक़ाम पर पहुंचे
 जहां नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक घने दरख़्त के साए में
 जल्वा फ़रमा थे। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सा'दुद्दीन तफ़्ताज़ानी
 رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ को देख कर मुस्कुराते हुवे इरशाद फ़रमाया : हमारे बार
 बार बुलाने पर आप नहीं आए ? आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने इन्तिहाई
 अज़िज़ाना लहजे में अर्ज़ की : “या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم
 मुझे मा'लूम नहीं था कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم याद फ़रमा रहे हैं
 और आप तो मेरी कुन्द ज़ेहनी और कमज़ोर याददाश्त से ब ख़ूबी
 आगाह हैं, मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अपने मरज़ से

शिफ़ा का तलबगार हूं।” हज़रते सा’दुद्दीन तफ़्ताज़ानी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की फ़रयाद सुन कर दरयाए रहमत जोश में आया ! नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “अपना मुंह खोलो।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने मुंह खोला तो सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपना लुआबे दहन आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के मुंह में डाल दिया, आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के लिये दुआ फ़रमाई और कामयाबी की बिशारत अता फ़रमा कर घर लौट जाने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। दूसरे दिन जब आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ काज़ी अज़ुदुद्दीन के दर्स में हाज़िर हुवे तो दौराने सबक आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उस्ताद साहिब के दर्स में कुछ इल्मी सुवालात किये (जो मा’नवी ए’तिबार से बारीक बीनी और गहरी सोच का नतीजा थे) दर्स में शरीक तलबा इन सुवालात की गहराई तक न पहुंच सके और फ़ुज़ूल व बे मा’ना समझ कर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बातों से सर्फ़े नज़र करने लगे, मगर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعालَى عَلَيْهِ के उस्ताद काज़ी अज़ुदुद्दीन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जो ब जाते ख़ुद मैदाने इल्म के शहसुवार थे, हज़रते सा’दुद्दीन तफ़्ताज़ानी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की इल्मी बातें सुन कर अशकबार हो गए और आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को मुखातब कर के इरशाद फ़रमाया : “ऐ सा’दुद्दीन ! आज तुम वोह नहीं हो जो कल थे।” फिर हज़रते सय्यिदुना सा’दुद्दीन तफ़्ताज़ानी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने तमाम वाकिआ उस्ताद साहिब की बारगाह में बयान कर दिया।⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** हम मुसलमान हैं और हमारा येह ए'तिकाद है कि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** हर चीज़ पर कादिर है वोह जिस को जैसे चाहे, जिस तरह चाहे, भलाई व सुख़ रूई अता फ़रमा सकता है, अगर हम सिर्फ़ ज़ाहिरी अस्बाब और दुन्यावी मुआमलात देख कर मेहनत और कुछ पाने की लगन से पीछे हटेंगे तो अपनी नाकामी व नामुरादी का सबब हम खुद होंगे। हम से सिर्फ़ जिद्दो जहद और मुसलसल कोशिश का मुतालबा किया गया है और इसी पर **اَلलّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** अपनी रहमत से कामरानी व कामयाबी अता फ़रमाता है, हमें सिर्फ़ अपने रब **عَزَّوَجَلَّ** पर भरोसा करते हुवे कोशिश जारी रखनी चाहिये और किसी की बात पर हरगिज़ हरगिज़ रन्जीदा व ग़मगीन नहीं होना चाहिये, बिला शुबा मुसलमान का अपने रब **عَزَّوَجَلَّ** पर भरोसा करना भी उस की कामयाबियों के राज़ में से एक राज़ है, **اَلलّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** फ़रमाता है :

وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ط

(प: २८, الطلاق: ३)

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : और जो **اَلलّٰهُ** पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है।

याद रखिये ! इस्तिक़ामत के साथ की जाने वाली कोशिश हमेशा रंग लाती है आप ने कई बार देखा होगा कि च्यूटी कैसी पुर अज़्म हो कर अपने मक्सद की जानिब क़दम बढ़ाते हुवे बुलन्दी पर चढ़ती है लेकिन बा'ज़ औकात वोह मन्ज़िल से बिल्कुल क़रीब पहुंच कर गिर जाती है फिर भी उस की कोशिश में ज़रा बराबर कमी नहीं आती और एक मरतबा फिर वोह नए सिरे से सफ़र शुरू

करती है अगर्चे वोह हज़ार मरतबा भी ऐन मन्ज़िल पर पहुंच कर गिर जाए लेकिन उस के अज़मे जवां पर बुढ़ापा तारी नहीं होता, मुसलसल कोशिश सेंकड़ों मरतबा नाकाम होने के बा वुजूद उसे थकने नहीं देती और आखिरे कार मा'मूली जसामत रखने वाली च्यूटी पै दर पै नाकामियों के बा वुजूद महज़ लगन और मुसलसल कोशिश से अपना हदफ़ पा ही लेती है लिहाज़ा च्यूटी से सबक़ हासिल कीजिये, हिम्मत मत हारिये, नाउम्मीदी छोड़िये, मेहनत करने के लिये कमरबस्ता हो जाइये, मुसलसल कोशिश जारी रखिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** इस की बरकत से हाफ़िज़ा क़वी होगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इलाज में तबतीब

हज़रते अल्लामा सय्यिद अब्दुल ग़नी नाबुलुसी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : मरजे निस्यान ख़त्म करने वाली अदविय्यात जो कुरआन शरीफ़ की आयात, अह़ादीसे नबविय्या और सालिहीन के कलाम से माख़ूज हैं, वोह उन तमाम दवाओं पर मुक़द्दम हैं जो महसूस दवाएं तिब्ब की किताबों में मज़कूर हैं और बन्दे के लिये येही मुनासिब है कि वोह सब से पहले अपने निस्यान का इलाज मा'नवी और इल्हामी चीज़ों के ज़रीए करे जो कुरआनो हदीस में वारिद हुई हैं और तिब्ब की किताबों में मज़कूर महसूस दवाओं से इलाज को मुअख़्ख़र करे और अगर वोह औरादे इलाहिय्या पर अमल करने के बा'द कुतुबे तिब्ब में मज़कूर

पेशक़श : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

दवाओं का इस्ति'माल करता है तो येह अमल शरई आदाब बजा लाने के ए'तिबार से बहुत अच्छा है, मक्सूद पाने के लिये सब से ज़ियादा फ़ाइदे मन्द है, (इस तरतीब से इलाज करना) **اَللّٰهُمَّ** **عَزَّوَجَلَّ** से शिफ़ा हासिल करने, जिस्म को लाहिक़ होने वाले आफ़ात को ज़ाइल करने के लिये बेहतरीन अमल है।⁽¹⁾

﴿2﴾ औ़रादो वज़ाइफ़ पढ़ने की आदत बनाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुव्वते याददाश्त बढ़ाने में जहां सिद्दहत बख़्शा ग़िज़ाएं बहुत मुअस्सिर हैं, वहीं औ़रादो वज़ाइफ़ पढ़ने की अपनी बरकतें हैं, इन की ब दौलत न सिर्फ़ हाफ़िज़ा मज़बूत होता है बल्कि सवाब का ज़ख़ीरा भी इकठ्ठा होता है, दिल में रूहानिय्यत पैदा होती और यादे इलाही **عَزَّوَجَلَّ** की तौफ़ीक़ नसीब होती है।

हज़रते सय्यिदुना इकरमा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं कि जो मुसलमान तिलावते कुरआन का अ़दी हो उस पर **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** येह हालत (या'नी बुढ़ापे में भूल जाने की बीमारी) त़ारी न होगी।⁽²⁾

“नमाज़े तहज्जुद अदा करना और तिलावते कुरआने पाक करना हाफ़िज़ा मज़बूत करने के अस्बाब में सरे फ़ेहरिस्त हैं। कहा गया है कि कुरआने पाक को देख कर पढ़ने से ज़ियादा कोई और चीज़ कुव्वते हाफ़िज़ा को तेज़ नहीं करती।⁽³⁾

① ...الكشف والبيان، ص २१

② ...नूरुल इरफ़ान, पारह 17, हज़. तह़तुल आयत : 5 ③ ...राहे इल्म, स. 85

कुछ औरादो वज़ाइफ़ यहां ज़िक्र किये गए हैं :

❁.....पांचों नमाज़ों के बा'द सर पर दाहिना (या'नी सीधा) हाथ रख कर ग्यारह मरतबा “يَا قُوَّتِي” पढ़ो ।⁽¹⁾

❁.....हर नमाज़ के बा'द येह वज़ीफ़ा पढ़ना चाहिये :

(2) أَمَنْتُ بِاللّهِ الْوَاحِدِ الْأَحَدِ الْحَقِّ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَكَفَرْتُ بِمَا سِوَاهُ-

❁.....याददाश्त में बेहतरी के लिये 41 दिन तक रोज़ाना 21 मरतबा “يَا عَزِيزُ” पानी पर पढ़ कर निहार मुंह पियें, إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ हाफ़िज़ा रौशन हो जाएगा ।

❁.....“يَا قُوَّتِي” अगर जुमुआ की दूसरी साअत में बहुत पढ़ेगा إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ निस्नान (या'नी भूलने का मरज़) जाता रहेगा ।⁽³⁾

❁.....सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदो सलाम की कसरत कीजिये कि इस के नतीजे में सवाब के साथ बेहतर याददाश्त का तोहफ़ा भी नसीब होगा जैसा कि नबिय्ये अकरम नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब

❶.....जन्नती ज़ेवर, स. 605

❷.....राहे इल्म, स. 86

❸.....मदनी पंज सूरह, स. 253

तुम किसी चीज़ को भूल जाओ तो मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ो वोह चीज़ **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** तुम्हें याद आ जाएगी ।⁽¹⁾ खुसूसन इस दुरूदे पाक का विर्द करे :

”اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ الْكَامِلِ وَعَلَىٰ اٰلِهِ
كَمَا لَا نِهَآيَةَ لِّكَمَالِكَ وَعَدَدُ كَمَالِهِ“

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** इस दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत नक़ल फ़रमाते हैं : अगर किसी शख़्स को निस्यान या'नी भूल जाने की बीमारी हो तो वोह मग़रिब और इशा के दरमियान इस दुरूदे पाक को कसरत से पढ़े, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** हाफ़िज़ा क़वी हो जाएगा ।⁽²⁾

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَى مُحَمَّدٍ

❀.....शीशे के बरतन में अगर मुश्क (एक किस्म की खुशबू) से सूरए फ़ातिहा को लिख दिया जाए और उस बरतन को अर्कें गुलाब से भर कर कुन्द ज़ेहन शख़्स जिसे कुछ याद नहीं रहता उस को सात दिन तक पिलाया जाए तो उस के दिमाग़ की कमज़ोरी ज़ाइल हो जाएगी और जो कुछ वोह सुनेगा उसे याद रहेगा ।⁽³⁾

❶ ... القول البدیع، الباب الخامس فی الصلاة علیه فی اوقات مخصوصة، ص ۲۷

❷मदनी पंज सूरह, स. 169

❸ ... تفسیر روح البیان، پ ۱۵، الاسراء، تحت الاية: ۸۲، ۵/ ۹۴

❀.....हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन मूसा अजील رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने कुव्वते हाफ़िज़ा के लिये हर नमाज़ के बा'द दस मरतबा येह दुआ पढ़ने का इरशाद फ़रमाया है :

فَقَهْمُنَا سُلَيْمِينَ ۖ وَكَلَّا اَنْبِيَا حُكَمَا وَعِلْمًا وَسَخَّرْنَا مَعَ دَاوُدَ الْجَبَالَ يُسَبِّحُونَ وَالطَّيْرُ ۖ وَكُنَّا فَاعِلِينَ ۝
يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا رَبُّ مُوسَى وَهَارُونَ وَيَا رَبُّ اِبْرَاهِيْمَ وَيَا رَبُّ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِ
وَعَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ اَلرِّمْنِي الْفَهْمَ وَاَرْفُقْنِي الْعِلْمَ وَالْحِكْمَةَ وَالْعَقْلَ بِرَحْمَتِكَ
يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ (1)

❀..... رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا (प १६, ط ११३)..... हर फ़र्ज (नमाज़) के फ़ौरन बा'द येह आयत ग्यारह बार अव्वलो आखिर तीन बार दुरुद शरीफ़ पढ़ कर दोनों हाथों की हथेलियों पर दम कर के तमाम सर पर फेरें ।

❀.....इस दुआ की कसरत किया करें :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ نَفْسِيْ مُطِيْعَةً تُؤْمِنُ بِلِقَائِكَ
وَتَرْضَىٰ بِقَضَائِكَ اَللّٰهُمَّ اَرْفُقْنِيْ فَهْمَ النَّبِيِّيْنَ وَحِفْظَ الْمُرْسَلِيْنَ وَالْبَاحِكَةَ الْمُتَقَرِّبِيْنَ
اَللّٰهُمَّ عِبْرَ لِسَانِيْ بِذِكْرِكَ وَقَلْبِيْ بِخَشْيَتِكَ وَسِرِّيْ بِطَاعَتِكَ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَعَلَى اٰلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا - (2)

1 ... المستطرف، الباب الرابع في العلم والادب - الخ، १/ २०

2 ... الرحمة في الطب والحكمة للسيوطي، ص २५९

❁.....आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ “निस्यान का मुजरब (या'नी आजमाया हुवा) इलाज क्या है ?” के जवाब में इरशाद फ़रमाते हैं : अल जवाब : दफ़् निस्यान को 17 बार सूरए “**اَلْمُنشَرُ**” हर शब सोते वक़्त पढ़ कर सीने पर दम करना, और सुब्ह 17 बार पानी पर दम कर के क़दरे पीना, और चीनी की रिकाबी (थाली) पर येह हुरूफ़ “**ا ه ظ م ف ش ذ**” लिख कर पिलाना नाफ़ेअ है। और चालीस रोज़ सफ़ेद चीनी पर मुश्क व ज़ा'फ़रान व गुलाब से लिख कर आबे ताज़ा (ताज़ा पानी) से महव कर के पियें। तस्मिया इस के बा'द

فَسَهِّلْ يَا اَللهُ كُلَّ صَعْبٍ بِحُرْمَةِ سَيِّدِ الْاَبْرَارِ سَهِّلْ - يَامُعِي الدِّينِ اَجِبْ،
يَا جَبْرَائِيلُ بِحَقِّي يَا بَدُوءُ - وَالسَّلَامُ -⁽¹⁾

❁.....जो इस शे'र को कसरत से पढ़ेगा उस का हाफ़िज़ा क़वी होगा, उस का भूल का मरज़ जाता रहेगा, उसे सच्चाई हासिल होगी, उस के सच्चे होने की उसे ताईद मिलेगी और उसे इताअत व फ़रमां बरदारी भी नसीब होगी।

وَيَا مُؤْمِنَاهُ بِنِ اَمَانًا مُسْلِمًا وَسَتَرًا عَيْنًا يَامُهِينُ مُسْبَلًا
या'नी ऐ अमान देने वाले ! मुझे सलामती वाली अमान अता फ़रमा और ऐ हिफ़ाज़त फ़रमाने वाले ! मेरे तमाम उयूब की पर्दापोशी फ़रमा।⁽²⁾

❶.....फ़तावा रज़विय्या, 26/606

❷... الكشف والبيان، ص २६

رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ۝ وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ۝ وَاحْلُلْ عُقْدًا مِّنْ لِّسَانِي ۝ لِيَقْضُوا قَوَالِي ۝ (1) ❀

इन आयाते मुबारका का विर्द करे, खुसूसन कुछ याद करने या पढ़ने से कब्बल ।

❀.....शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ नक़ल फ़रमाते हैं : दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

”اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ“

तर्जमा : “ऐ **اَللّٰهُ** हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले ! (2)

(अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

1 ... १२, १५: २४-२५

2 ... المستطرف، الباب الرابع في العلم، الخ، १/ २०

निस्यान का इलाज आयाते क़ुरआनी से

(۱) هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ
مُتَشَبِهَاتٌ فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ
وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللَّهُ وَالرَّسُخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ
عِنْدَ رَبِّنَا وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أُولَ الْأَنْبِيَاءِ ۖ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا
وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ۝ رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا
رَيْبَ فِيهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْوَعْدَ ۝ (۱)

हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ाहिद तमीमी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : इन आयात की ख़ासियत है कि येह याददाश्त को बढ़ाती हैं और मरजे निस्यान का ख़ातिमा करती हैं ।

तशरीक़ अमल

सब्ज़ बरतन में ज़ा'फ़रान और अर्क़े गुलाब से इन आयात को लिख लीजिये फिर किसी जारी नहर के पानी से धो कर जुमुआ के दिन सूरज तुलूअ होने से पहले निहार मुंह पी लीजिये, सात दिन तक बिला नागा येह अमल कीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** मरजे निस्यान का ख़ातिमा होगा और याददाश्त क़वी होगी मगर इन दिनों हर किस्म के गोश्त से इजतिनाब कीजिये । (2)

1 ... ۳, آل عمران: ۹

2 ... الكشف والبيان، ص ۳۵-۳۶

(२) وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٦﴾ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِهِ هُمْ بِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٧﴾ وَإِذَا يُتْلَى عَلَيْهِمْ قَالُوا آمَنَّا بِهِ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ﴿٥٨﴾ أُولَٰئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرُهُمْ مَرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا وَيَنْدَرُونَ بِالْحَسَنِ السَّيِّئَةِ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٥٩﴾ وَإِذَا سَمِعُوا اللَّعْنَاءَ عَرَضُوا عَنْهُ وَقَالُوا لَنَّا أَعْمَالُ وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ سَلِّمْ عَلَيْكُمْ لَا تَبْتَغِ الْجَاهِلِينَ ﴿٦٠﴾^(१)

رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ॥ हज़रते अब्दुल ग़नी नाबुलुसी

फ़रमाते हैं : येह आयात हिक्मत से भरपूर कलाम और किसी बात के मुश्किल और बारीक मअानी को याददाश्त में महफूज़ करने और इन के हकीकी फ़ेहम तक रसाई हासिल करने के लिये इक्सीर हैं ।

तशरीक़ अमल

इस्लामी महीने की इब्तिदा में आने वाली पहली जुमा'रात, जुमुआ और हफ़्ते का रोज़ा रखे और इन आयात को कांच के बरतन में लिख कर किसी जारी नहर के पानी से धो लीजिये । इन तीन दिनों की रातों में फ़ज्र का वक़्त शुरू होने से पहले येह पानी पी लीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** बरकतों और भलाइयों से माला माल असरात का जुहूर होगा ।^(२)

(३) وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مَوْحَاً مِنْ أَمْرِنَا ۚ مَا كُنْتَ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ وَلَا الْإِيمَانُ وَلَكِنْ جَعَلْنَاهُ نُورًا نَهْدِي بِهِ مَنْ نَشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا ۚ وَإِنَّكَ لَتَهْدِي إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥١﴾
صِرَاطُ اللَّهِ الَّذِي لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ أَلَا إِلَى اللَّهِ تَصِيرُ الْأُمُورُ ﴿٥٢﴾^(३)

हज़रते अल्लामा सय्यिद अब्दुल ग़नी नाबुलुसी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : इस आयत की बरकत से निस्यान का खातिमा और कुव्वते याददाश्त में इज़ाफ़ा होता है, जहालत की जुल्मत इल्म के नूर से काफ़ूर होती है, ग़फ़लत के पर्दे चाक होते हैं और बेदारी नसीब होती है ।

तहरीक़ अमल

कांच के बरतन में ज़ा'फ़रान और गुलाब के पानी से इन आयात को लिख लीजिये और फिर (ख़ालिस) शहद के ज़रीए तहरीर कर्दा आयात को मिटा कर तीन जुमुआ तक फ़ज्र की नमाज़ के बा'द तीन घूंट में इस पानी को पी लीजिये, إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ इस की बरकत से हाफिज़ा क़वी हो जाएगा ।⁽¹⁾

(۴) وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ ۝ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ ۝ وَمَا يَبْطِئُ عَنْ
الْهَوَىٰ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ۝ عَلَيْهِ سَدِيدُ الْقَوَىٰ ۝ ذُو مِرَّةٍ فَاسْتَوَىٰ ۝
وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلَىٰ ۝ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ ۝ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ۝
فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ۝ مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ ۝ أَفَتَسْمُرُونَ عَلَىٰ
مَآيَرٍ ۝ وَلَقَدْ رَأَوْا نَزْلَةَ أَهْوَىٰ ۝ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَىٰ ۝ عِنْدَ هَاجِئَةٍ
الْبَاوِئِ ۝ إِذْ يُخَشِى السِّدْرَةَ مَا يُخَشِىٰ ۝ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَىٰ ۝ لَقَدْ رَأَىٰ
مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَىٰ ۝⁽²⁾

हज़रते अल्लामा सय्यिद अब्दुल ग़नी नाबुलुसी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

फ़रमाते हैं : इन आयात की बरकत से ज़ेहन क़वी होता, क़ल्ब की सफ़ाई होती है और निस्स्यान जाइल होता है ।

तरीक़ा अमल

कांच के बरतन में मुश्क और गुलाब के पानी से इस आयते करीमा को लिखिये, फिर ज़म ज़म शरीफ़ के पानी या सुलवान (बैतुल मुक़द़स के क़रीब एक बस्ती के) चश्मे के पानी से धो लीजिये और बराबर सात रोज़ तक बा'दे नमाज़े फ़त्र निहार मुंह पी लीजिये, إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ हाफिज़ा क़वी होगा ।⁽¹⁾

निस्स्यान का इलाज़ हदीसे मुबारक़ा से

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक रोज़ हम बारगाहे रिसालत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में हाज़िर थे कि हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم हाज़िरे बारगाह हुवे और हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से यूँ अर्ज़ की : मेरे मां बाप आप पर कुरबान, कुरआन शरीफ़ मेरे सीने में महफूज़ नहीं रहता और कोशिश के बा वुजूद मैं इसे याद नहीं रख पाता । येह सुन कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : ऐ अबल हसन ! क्या मैं तुम्हें ऐसे कलिमात न सिखाऊं जिन से न सिर्फ़

तुम्हें फ़ाइदा हो बल्कि जिसे तुम येह कलिमात सिखा दो, वोह भी इस से फ़ाइदा हासिल करे और जो तुम याद करो वोह तुम्हारे सीने में महफूज़ हो जाए । हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा **كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ** ने अर्ज़ की : क्यूं नहीं या रसूलल्लाह ! ज़रूर सिखाइये ।

हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने फ़रमाया : जब जुमुआ की रात आए तो अगर हो सके तो तुम रात के तीसरे (या'नी आखिरी) पहर में उठो कि बेशक उस वक़्त फ़िरिश्ते हाज़िर होते हैं और उस वक़्त दुआ क़बूल होती है । बेशक मेरे भाई या'कूब **(عَلَى نَبِينَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام)** ने अपने बेटों से फ़रमाया था कि अज़ क़रीब मैं अपने रब **عَزَّوَجَلَّ** से तुम्हारे लिये मग़फ़िरत त़लब करूंगा, यहां तक कि जुमुआ की रात आ जाए । फिर अगर तुम से येह न हो सके तो आधी रात में उठो और अगर येह भी न हो सके तो रात के इब्तिदाई हिस्से में खड़े हो जाओ और चार रकअत नमाज़ पढ़ो, पहली रकअत में सूरए फ़ातिहा के बा'द सूरए **يَس** की तिलावत करो, दूसरी रकअत में सूरए फ़ातिहा के बा'द **حَمْدُ الدُّحَان** की तिलावत करो, तीसरी रकअत में फ़ातिहा और **أَلَمْ تَنْزِيلِ السَّجْدَةِ** और चौथी रकअत में सूरए फ़ातिहा और **تَبَارَكَ الَّذِي** की क़िराअत करो । फिर जब तशहहुद (या'नी अत्तहिyyात व दुरूद शरीफ़ वगैरा के बा'द सलाम फेर चुको तो

नमाज़) से फ़ारिग़ होने के बा'द **اَللّٰهُمَّ** की ख़ूब हम्दो सना करो, और निहायत अच्छे अन्दाज़ से मुझ पर और दीगर अम्बिया पर दुरूद भेजो, मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिये और अपने उन वफ़ात शुदा मोमिन भाइयों के लिये दुआए मग़फ़िरत करो और फिर आख़िर में येह दुआ मांगो :

اَللّٰهُمَّ ارْحَنِيْ بِتَرْكِ الْمَعَاصِيْ اَبَدًا مَا اُبْقِيْتَنِيْ، وَاَرْحَنِيْ اَنْ اَتَكَلَّفَ
مَا لَا يُعِيْنُنِيْ، وَاَرْفُقْنِيْ حُسْنَ النَّظَرِ فِيمَا يُرْضِيْكَ عَنِّيْ، اَللّٰهُمَّ بِدِيْعِ السَّلَوَاتِ
وَالْاَرْضِ ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ وَالْعِرَّةِ الَّتِي لَا تُرَامُ، اَسْأَلُكَ يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمَنُ بِجَلَالِكَ
وَنُورِ وَجْهِكَ اَنْ تُلْزِمَ قَلْبِيْ حِفْظَ كِتَابِكَ كَمَا عَلَّمْتَنِيْ، وَاَرْفُقْنِيْ اَنْ اَتَلَوُّهُ عَلَى
السَّوْحِ الَّذِي يُرْضِيْكَ عَنِّيْ، اَللّٰهُمَّ بِدِيْعِ السَّلَوَاتِ وَالْاَرْضِ ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ
وَالْعِرَّةِ الَّتِي لَا تُرَامُ، اَسْأَلُكَ يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمَنُ بِجَلَالِكَ وَنُورِ وَجْهِكَ اَنْ تُنَوِّرَ بِكِتَابِكَ
بَصَرِيْ، وَاَنْ تُطْلِقَ بِهِ لِسَانِيْ، وَاَنْ تُفَرِّجَ بِهِ عَنْ قَلْبِيْ، وَاَنْ تُشْمَرْ بِهِ صَدْرِيْ،
وَاَنْ تَغْسِلَ بِهِ بَدَنِيْ، فَاِنَّهُ لَا يُعِيْنُنِيْ عَلَى الْحَقِّ غَيْرُكَ وَلَا يُؤْتِيْهِ اِلَّا اَنْتَ، وَلَا حَوْلَ
وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

ऐ अबल हसन ! तीन, पांच, या सात जुमुआ इस पर अमल करो, **اَللّٰهُمَّ** के हुक्म से तुम्हारी दुआएं क़बूल होंगी, उस ज़ात की क़सम जिस ने मुझे हक़ के साथ मबऊस फ़रमाया इस दुआ ने किसी मोमिन से ख़ता नहीं की। (या'नी जिस ने येह दुआ पढ़ी उसे ज़रूर फ़ाइदा हुवा)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : **أَبَااٰه** عَزَّوَجَلَّ की क़सम पांच या सात हफ़्ते न गुज़रे थे कि हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم एक बार फिर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवे और (मज़कूरा वज़ीफ़े की बरकतें बयान करते हुवे) अर्ज़ करने लगे : या रसूलल्लाह ! मैं पहले चार आयात भी याद नहीं कर सकता था, वोह भी भूल जाता था और अब तक़रीबन चालीस आयात याद कर लेता हूं, जब मैं इन आयात को पढ़ता हूं तो यूं महसूस होता है कि कुरआन शरीफ़ मेरे सामने है, मैं इस से पहले हदीसे पाक सुनता था फिर जब दोहराता तो याद न रहती थी और अब मैं अह़ादीस सुनता हूं फिर जब बयान करता हूं तो एक हर्फ़ भी मुझ से नहीं छूटता, इस पर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : ऐ अबल हसन ! रब्बे का'बा की क़सम तुम मोमिन हो ।⁽¹⁾

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿3﴾ **सिहहह़त बख़्श ग़िज़ाएं इस्ति'माल कीजिये**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह एक हकीक़त है कि मुख़्तलिफ़ नौइय्यत की ग़िज़ाएं इन्सानी बदन पर तरह़ तरह़ के असरात मुरत्तब करती हैं, बा'ज़ ग़िज़ाएं जिस्म को कुव्वत बख़्शती

1 ... तर्मिज़ी, किताब الدعوات, احاديث شتى, باب فى دعاء الحفظ, 332/5, حديث: 3581

हैं जब कि बा'ज नुक़्सान का बाइस भी बन जाती हैं। एक सिद्दहतमन्द दिमाग़ और इस की कुव्वते याददाश्त में ग़िज़ाओं का भी बड़ा किरदार है। हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي बेहद ज़हीन और वसीअ इल्म के मालिक थे मगर इस के बा वुजूद आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हाफ़िज़ा क़वी करने वाली चीज़ें तनावुल फ़रमाते थे।⁽¹⁾

अहक़ामे इस्लाम की इताअत हो या कुरआन की आयात व हदीसे रसूल को याद करने का मुअ़मला हो, या ख़िदमते दीन के लिये बयान व तदरीस का काम सर अन्जाम देना हो, उन तमाम मुअ़मलात में कुव्वते याददाश्त का बड़ा अमल दख़ल है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

तबीब से मशवरा ज़रूरी है

हाफ़िज़ा क़वी करने वाली ग़िज़ाई अश्या या किसी के बताए हुवे या किसी किताब में लिखे हुवे इलाज को अमल में लाने के मुतअल्लिक़ शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ का अताक़र्दा मदनी फूल ज़ेहन में रखना बहुत ज़रूरी है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ इरशाद फ़रमाते हैं : येह बात हमेशा के लिये याद रखिये कि किसी भी शख़्स के बताए हुवे या किताबों में लिखे हुवे बल्कि अहदीसे मुबारका में बयान कर्दा इलाज भी माहिर तबीब के मश्वरे के बिग़ैर

नहीं करने चाहियें।⁽¹⁾ जैल में दिमागी कुव्वत बढ़ाने वाली कुछ अश्या का ज़िक्र किया गया है। चुनान्चे,

शैख़ुल इस्लाम इमाम इब्राहीम ज़रनूजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي

फ़रमाते हैं :

❀.....मिस्वाक करना, शहद का इस्ति'माल रखना, गूंद मअ़ शकर इस्ति'माल करना, निहार मुंह 21 दाने किश्मिश खाना भी हाफ़िज़े को क़वी करता है और इन्सान को बहुत से अमराज़ से शिफ़ा देता है, नीज़ इन चीज़ों को खाना भी कुव्वते हाफ़िज़ा को क़वी करता है जो कि बलग़म और दीगर रूतूबात को कम करती हैं।⁽²⁾

❀.....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद अब्दुल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं मैं ने हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को फ़रमाते सुना : नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अक्सर कहू शरीफ़ तनावुल फ़रमाया करते थे, मैं ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आप कसरत से कहू शरीफ़ तनावुल फ़रमाते हैं तो नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : बेशक कहू दिमाग़ को बढ़ाता और अक्ल में इज़ाफ़ा करता है।⁽³⁾

❶.....मेशी के 50 मदनी फूल, स. 1

❷.....राहे इल्म, स. 87

❸... أخلاق النبي وآدابه، نكر اكله للفرع... الخ، ص 126، حديث: 131

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अतार कादरी रज़वी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** ने बच्चों की सच्ची कहानियों के रिसाले बनाम “बेटा हो तो ऐसा” में सिद्धत बख़्श ग़िज़ाओं का भी ज़िक्र फ़रमाया है, उन में से सिर्फ़ मुक़व्विये दिमाग़ ग़िज़ाओं का यहां ज़िक्र किया गया है चुनान्चे,

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** फ़रमाते हैं : रोज़ाना रात को सात दाने बादाम और 21 दाने किशिमश या'नी सूखे हुवे अंगूर (छोटे बड़े कोई से भी हों) पानी में भिगो दीजिये और येह दोनों चीज़ें सुब्ह दूध के साथ और अच्छी तरह चबा कर खा लीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** दर्दे सर दूर होगा, कुव्वते हाफ़िज़ा के लिये भी येह नुस्खा मुफ़ीद है ।

❀.....पिस्ता दिलो दिमाग़ को कुव्वत बख़्शता है । बदन को मोटा और गुर्दे की कमज़ोरी को दूर करता है । ज़ेहन और हाफ़िज़ा मज़बूत करता है ।

❀....काजू जिस्म को ग़िज़ाइयत और दिमाग़ को ताक़त देता है । बदन को मोटा करता है । निहार मुंह शहद के साथ काजू खाना दाफ़ेए निस्यान (या'नी भूलने की बीमारी दूर करने वाला) है ।

अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** मूंगफली के फ़वाइद बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : “मूंगफली अपने फ़वाइद में काजू और

अख़रोट वगैरा से कम नहीं है ।”(1) लिहाज़ा अगर काजू दस्तयाब न हों तो मूंगफली के ज़रीए भी इन फ़वाइद को हासिल किया जा सकता है ।

❁.....हज़रते सय्यिदुना इमाम जोहरी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : शहद का इस्ति'माल करो क्यूंकि येह कुव्वते हाफ़िज़ा के लिये मुफ़ीद तरीन है ।(2)

❁.....हज़रते सय्यिदुना इमाम जोहरी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : जिस को अहादीसे मुबारका याद करने का शौक हो वोह (मुनासिब मिक्दार में) मुनक्का खाए ।(3)

मुनक्के के हैबत अंगेज़ फ़वाइद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सूखे हुवे छोटे अंगूर किश्मिश और सूखे हुवे बड़े अंगूर मुनक्का कहलाते हैं । शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** नक़ल फ़रमाते हैं : **اَللّٰهُ** के महबूब, दानाए गुयूब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने हिक्मत निशान है : इसे खाओ येह (मुनक्का) बेहतरीन खाना है, (मुनक्का) आ'साब (या'नी नसों और पठ्ठों) को मज़बूत करता, कमज़ोरी को दूर करता, गुस्से को ठन्डा करता, बलग़म को

❶.....बेटा हो तो ऐसा, स. 35-37 मुल्लतक़तन

❷ ... الجامع لاخلاق الراوى وآداب السامع، المآكل المستحب...الخ، ص ۲۵۸

❸ ... الجامع لاخلاق الراوى وآداب السامع، المآكل المستحب...الخ، ص ۲۵۸

दूर करता चेहरे की रंगत निखारता और मुंह को खुशबूदार करता है ।
हज़रते मौला अली كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ की रिवायत कर्दा हदीस में
येह भी है कि (मुनक्का) कमजोरी दूर करता, मिज़ाज को खुशगवार
बनाता, सांस को खुशबूदार करता और गुम को दूर करता है ।⁽¹⁾

मुनक्का दवा भी है और गिज़ा भी, इस को चाहें तो यूंही या
चाहें तो छिलका उतार कर मुनासिब मिक्दार में खा लीजिये, मुनक्के
बीज समेत भी खा सकते हैं बल्कि इमाम जोहरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ
फ़रमाते हैं : “मुनक्के के बीज मे’दे की इस्लाह करते हैं ।” मुनक्के
चन्द घन्टे पानी में भिगो कर रख दीजिये फिर इस का छिलका उतार
कर गूदा निकाल लीजिये । मुनक्के का गूदा फेफड़ों के लिये इक्सीर
और पुरानी खांसी के लिये मुफ़ीद है । गुर्दा और मसाना के दर्द को
मिटाता, जिगर और तिल्ली को ताक़त देता, पेट को नर्म करता,
मे’दा मजबूत करता और हाज़िमा दुरुस्त करता है ।

सुख़ मुनक्के

हज़रते मौलाए काइनात, अलिय्युल मुर्तज़ा शरे खुदा
كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ से मरवी है : जो रोज़ाना सुख़ मुनक्के 21
अदद खा लिया करे वोह उन तमाम अमराज़ से महफूज़ रहेगा
जिन से ख़ौफ़ज़दा है ।⁽²⁾

1 ... كنز العمال، كتاب الطب... الخ، الزبيبي، الجزء: ١٠، ١٨/٥، حديث: ٢٨٢٢١

2फैज़ाने सुन्नत, स. 794 मुल्लक़तन

❀.....एक शख्स ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم की बारगाह में कमज़ोर हाफ़िज़े की शिकायत की तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : गाए का दूध इस्ति'माल करो, क्यूंकि इस से दिल बहादुर और निस्स्यान दूर होता है ।⁽¹⁾

❀.....हज़रते सय्यिदुना हम्माद बिन सलमह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “मैं हज़रते सय्यिदुना इयास बिन मुआविय्या رَحِمَهُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ की बारगाह में हाज़िर हुवा, आप رَحِمَهُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़ालूदा तनावुल फ़रमा रहे थे । फ़रमाया : “क़रीब हो जाओ और खाओ, अगर कोई चीज़ अक्ल में इज़ाफ़ा कर सकती है तो वोह येही है ।”⁽²⁾

दौरे रिसालत का फ़ालूदा

हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बारगाहे रिसालत में फ़ालूदा ले कर हाज़िर हुवे तो रहमते कौनैन, दुखी दिलों के चैन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस में से कुछ तनावुल फ़रमाया और फिर इस्तिफ़सार फ़रमाया : ऐ अबू अब्दुल्लाह ! येह क्या है ? हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मेरे मां-बाप आप पर कुरबान ! हम घी और शहद को देगची में डाल कर आग पर रख देते हैं, जब

❶ ... الجامع لأخلاق الراوى وآداب السامع، الماכל المستحب...الخ، ص ۴۸

❷ ... التذكرة الحمونية، الباب السادس والاربعون، الفصل الخامس فى اوصاف الاطعمة، ۹/ ۲۳

वोह उबलने लगता है तो हम गन्दुम का आटा उबलते हुवे घी और शहद में डाल देते हैं और उसे लकड़ी से हिलाते रहते हैं हत्ता कि वोह पक कर ऐसा हो जाता है जैसा आप ﷺ मुलाहज़ा फ़रमा रहे हैं । तो रहमते आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : बेशक येह बहुत अच्छा खाना है ।⁽¹⁾

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

✽.....अगर दिमाग़ कमज़ोर हो तो बादाम के साथ अन्जीर मिला कर खाने से चन्द दिनों में दिमाग़ की कमज़ोरी ख़त्म हो जाती है ।

✽.....खुशबू (इत्र लगाने) से हाफ़िज़ा क़वी होता है ।⁽²⁾ इमाम शा'बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : अच्छी खुशबू से अक्ल में इज़ाफ़ा होता है । एक कौल येह भी है कि अच्छी खुशबू लगाने वाले की अक्ल में इज़ाफ़ा होता है और साफ़ सुथरे कपड़े पहनने वाले के दुख दर्द में कमी आती है ।⁽³⁾

✽.....हज़रते सय्यिदुना फ़कीह अबू लैस समरक़न्दी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : कहू शरीफ़ खाने से हाफ़िज़ा क़वी होता है ।⁽⁴⁾

① ... معجم كبير، يوسف بن عبد الله... الخ، ١٣، ١٢/١٠٨، حديث: ٣٤٠

② ... بستان العارفين، الباب الثامن والثمانون في الامتناع عما يضر بالبدن... الخ، ص ٩١

③ ... محاضرات الابداء، محبة الطيب والحث على تناوله، ٣/٣٤٣

④ ... بستان العارفين، الباب الثامن والثمانون في الامتناع عما يضر بالبدن... الخ، ص ٩١

❀.....हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं :

लोबिया खाने से अक्ल में इज़ाफ़ा होता है ।⁽¹⁾

❀.....हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं :

गोश्त खाने से हाफ़िज़ा मज़बूत होता है ।⁽²⁾

❀.....जवान मुर्ग का गोश्त खाने से अक्ल में इज़ाफ़ा और रंग साफ़ होता है ।⁽³⁾

❀.....माहिरीन के मुताबिक़ मछली खाना भी याददाश्त बढ़ाने का सबब है ।

मछली और कुव्वते हाफ़िज़ा

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ अपने रिसाले “मछली के अज़ाइबात” में एक सुवाल “क्या मछली का इस्ति’माल कुव्वते हाफ़िज़ा पर भी असर अन्दाज़ होता है ?” के जवाब में फ़रमाते हैं : जी हां । खुसूसन मछली का तेल और फलों का इस्ति’माल कुव्वते हाफ़िज़ा के लिये मुफ़ीद है । माहिरीन की तहकीक़ के मुताबिक़ फलों, सब्ज़ियों और मछली में विटामिन सी और फ़्लेवो नोईड्ज़ (Flavonoids) पाए जाते हैं जो

❶ ... سير اعلام النبلاء، الامام الشافعي... الخ، ٨/ ٢٠٠

❷ ... مواهب اللدنية، المقصد الثالث، الفصل الثالث، النوع الاول في عيشه... الخ، ٢/ ١٢٨

❸ ... المستطرف، الباب الثاني والستون في ذكر الدواب والوحوش... الخ، ٢/ ٢٠١

जिस्म में सोज़िश नहीं होने देते नीज़ इन में पाए जाने वाले “ओमेगाश्री” दिमाग़ की बैरूनी तेह को सोज़िश से बचाते हैं जिस की वजह से याददाश्त भी मुतअस्सिर नहीं होती। माहिरीन ने 65 साल से ज़ाइद उम्र के 8085 मर्द व ख़वातीन को उन के खाने पीने की अश्या, तर्ज़े ज़िन्दगी, याददाश्त, ग़िज़ाओं और सिद्दहत के बारे में सुवाल नामे फ़राहम कर के 4 साल तक इन की तहक़ीक़ की जिस के दौरान मा’लूम हुवा कि फ़ल, सब्ज़ियां और मछली का तेल ज़ियादा इस्ति’माल करने वालों की याददाश्त दूसरों से बेहतर होती है। एक तबीब का कहना है : हिन्द की रियासत “केराला” के एक साहिब ने बैरूने मुल्क मुझे बताया कि केराला के लोग रियाज़ी (जिस में हिसाब, अल जिबरा और ज्योमेटरी वगैरा शामिल होता है) साइन्स और दुन्या के दीगर मुश्किल तरीन उलूम में काफ़ी बा कमाल होते हैं। मैं ने इस कमाल की वजह पूछी तो कहने लगे : मछली और मछली के सर का इस्ति’माल।⁽¹⁾

मछली के सर की यख़नी और कुव्वते हाफ़िज़ा

अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** मज़ीद फ़रमाते हैं : मछली के सर की यख़नी (सूप) फ़ालिज, लक्वा, इरकुन्सिा (या’नी लंगड़ी का दर्द जो कि चड्डे से ले कर पाउं के टख़ने तक पहुंचता है) आ’साबी कमज़ोरी, पछें की कमज़ोरी, क़ब्ल अज़ वक़्त बुढ़ापा,

①मछली के अज़ाइबात, स. 41

जोड़ों का पुराना दर्द, जिस्मानी और आ'साबी खिचाव और कुव्वते हाफ़िज़ा बढ़ाने के लिये निहायत मुफ़ीद है। ऐसे लोग जो अपनी याददाश्त बिल्कुल खो चुके हों या जिन की याददाश्त ख़त्म होने के करीब हो वोह ख़्वाह जवान हों या बूढ़े येह यख़नी (सूप) ज़रूर इस्ति'माल करें। अगर गर्मी के मौसिम में ना मुवाफ़िक़ महसूस करें तो सर्दियों में इस्ति'माल करें। अगर आप को बयान कर्दा तमाम बीमारियों में से कोई मरज़ नहीं तब भी अगर कुछ अर्से मछली के सर का सूप इस्ति'माल फ़रमाएंगे तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इन बीमारियों से तहफ़फ़ुज़ हासिल होगा।⁽¹⁾

बर्हमी बूटी

बर्हमी बूटी (Indian penny Wort) कमज़ोर दिमाग़ को मज़बूत करती है, निस्नान को ख़त्म करने के लिये इस बूटी को शरबत के तौर पर या सफूफ़ बना के इस्ति'माल करना बेहद मुफ़ीद है। इलाइची दाना एक माशा, मग़ज़ बादाम 10 अदद, मग़ज़ कद्दू शरीफ़ 6 माशे, मिर्च सियाह 7 अदद के साथ 4 माशे बर्हमी बूटी मिला कर बतौरै ठन्डाई इस्ति'माल किया जाए तो दर्दे सर दूर होने के साथ साथ आंखों की बीनाई में भी इज़ाफ़ा होगा और हाफ़िज़ा भी क़वी होगा।⁽²⁾

①मछली के अज़ाइबात, स. 41

② ... کتاب المفردات، ص 122، خواص المفردات، 3/195

❀.....बादाम नव अदद, सफ़ेद मिर्च पांच अदद, मुनक्का सात अदद (मुनक्के के दाने निकाल दिये जाएं) बादाम और मुनक्के को रात को भिगो दिया जाए और सुबह बादाम के छिलके उतार कर तीनों अश्या को खरल (एक किस्म की पथ्थर की कूंडी जो दवाएं पीसने और हल करने के काम आती है) में अच्छी तरह घिस कर इस की चटनी बना ली जाए और इसे इस्ति'माल किया जाए। मुसलसल इस्ति'माल करें फिर इस के हैरत अंगेज़ फ़वाइद को मुलाहज़ा करें, कम अज़ कम एक माह लगातार इस्ति'माल करना चाहिये और बच्चों के लिये इस की मिक्दार कुछ कम कर लें, अगर किसी को मिर्च नुक्सान देती हों तो मिर्च निकाल दी जाए बाकी ब दस्तूर इस्ति'माल करें।

❀.....फलों में संगतरा भी **عَرْجُلُ** का बेश कीमती तोहफ़ा है, संगतरे के मुसलसल इस्ति'माल से ज़ेहन और हाफ़िज़ा क़वी होता है बीनाई में भी इज़ाफ़ा होता है और येह खून साफ़ करता है। ज़ेहनी और तख़लीकी काम करने वाले अफ़राद के लिये संगतरा कुदरत का बेहतरीन तोहफ़ा है, इस का मिज़ाज सर्द तर है इस लिये गर्म मिज़ाज के लोगों के लिये बहुत मुफ़ीद है येह जल्द हज़्म हो जाता है और भूक भी ख़ूब लगाता है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह बात भी पेशे नज़र रहे कि दौराने मुतालआ या कुछ याद करते हुवे न ही ज़ियादा भूक हो न ही मुकम्मल पेट भरा हो क्यूंकि भूक की शिद्दत के बाइस भी याद नहीं होता और जब पेट मुकम्मल भरा हो तब भी कोई बात ज़ेहन में महफूज़ करना दुश्वार हो जाता है। इस लिये अगर मो'तदिल ग़िज़ा

का सहारा लिया जाए तो बेहद मुफ़ीद है जिसे दा'वते इस्लामी की इस्तिलाह में "पेट का कुफ़ले मदीना" कहा जाता है। शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** "फ़ैज़ाने सुन्नत" के तीसरे बाब "पेट का कुफ़ले मदीना" में फ़रमाते हैं : "अपने पेट को ह़राम ग़िज़ा से बचाना और ह़लाल ख़ूराक भी भूक से कम खाना "पेट का कुफ़ले मदीना" लगाना है।"⁽¹⁾

कुन्दुर खाइये हाफ़िज़ा मज़बूत बनाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! निस्नान ख़त्म करने वाली ग़िज़ाई अश्या में से एक कुन्दुर भी है। अरबी में कुन्दुर, उर्दू में सलाई का गून्द और अंग्रेज़ी में **OLIBANUM** के नाम से जाना जाता है। येह एक कांटेदार दरख़्त का गून्द है, जितना पुराना होता है उसी क़दर सुख़् हो जाता है, बेहतर वोह है जो ताज़ा और नर्म हो नीज़ बाहर से सफ़ेद और पीला हो। इस गून्द के जहां बे शुमार फ़वाइद हैं वहीं येह निस्नान के लिये भी बेहद मुफ़ीद है। रोज़ाना तीन माशा की मिक्दार में खाने से निस्नान का मरज़ जाता रहता है।⁽²⁾ ज़ैल में कुन्दुर के फ़वाइद से मुतअल्लिक़ रिवायात नक्ल की जाती हैं :

इल्मो हिक्मत के मदनी फूल कैसे याद रखें

मन्कूल है कि बनी इस्राईल ने हज़रते सय्यिदुना मूसा **عَلَيْ نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** से अर्ज़ की : हम आप से बहुत सी बातें सुनते

1.....फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 643

2... کتاب المفردات، ص ۳۷۳

हैं, उन्हें अच्छी तरह समझ भी लेते हैं लेकिन जब आप की बारगाह से रुख़्सत होते हैं तो “इल्मो हिक्मत के मदनी फूल” भूल जाते हैं, आप **عَزَّوَجَلَّ** **اَللّٰهُ** عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने हमारे लिये दुआ कीजिये कि वोह हमें मरजे निस्यान से शिफ़ा अता फ़रमाए । हज़रते सय्यिदुना मूसा **عَلَيْ نَبِينَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने **عَزَّوَجَلَّ** **اَللّٰهُ** से इल्तिजा की तो **عَزَّوَجَلَّ** **اَللّٰهُ** ने वही फ़रमाई कि आप अपने उम्मतियों को हुक्म दें कि वोह लुबान (कुन्दुर) खाएं । चुनान्चे, बनी इस्राईल ने लुबान या'नी कुन्दुर खाया तो उन का मरजे निस्यान ख़त्म हो गया ।⁽¹⁾

रसूलुल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने आलीशान है : लुबान (कुन्दुर) खाना कुव्वते याददाश्त बढ़ाता, निस्यान ख़त्म करता और बलग़म काफ़ूर करता है ।⁽²⁾

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ** से किसी ने निस्यान की शिकायत की तो आप **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया : कुन्दुर इस्ति'माल करो, (इस तरह कि) रात को पानी में डाल कर सुबह निहार मुंह उस पानी को पियो, येह निस्यान के लिये बहुत मुफ़ीद है ।⁽³⁾

① ...العلاج بالاغذية والاعشاب في بلاد المغرب، باب ما جاء في علاج البلغم... الخ، ص ٢١

② ...العلاج بالاغذية والاعشاب في بلاد المغرب، باب ما جاء في علاج البلغم... الخ، ص ٢١

③ ...الجامع لا خلاق الراوى وأدب السامع، المکمل المستحب... الخ، ص ٢٥٨

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : एक मिस्क़ाल शकर (या'नी साढ़े चार माशे, 4 ग्राम 374 मिली ग्राम) और एक मिस्क़ाल कुन्दुर का सफूफ़ बना कर सात दिन तक निहार मुंह खाओ, येह पेशाब और निस्नान की बीमारी के लिये बेहतरीन चीज़ है।⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : एक शख्स हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم की बारगाह में हाज़िर हुवा और अपने निस्नान की शिकायत करने लगा। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : लुबान (कुन्दुर) खाओ बेशक येह दिल मज़बूत करता और निस्नान का ख़ातिमा करता है।⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल मलिक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरशाद फ़रमाते हैं : लुबान (कुन्दुर) खाओ कि येह बलग़म ख़त्म करता है और हर वोह चीज़ जो बलग़म ख़त्म करती है उस से निस्नान का ख़ातिमा होता है और हाफ़िज़ा क़वी होता है।⁽³⁾

याददाश्त क़वी करने वाली ग़िज़ाओं का इन्तिखाब कीजिये

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र मुहम्मद बिन ज़करिय्या राजी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ नक़ल फ़रमाते हैं : जिस को निस्नान का मरज़ लाहिक़ हो उस के लिये राई के दाने खाना फ़ाइदे मन्द है।

①... الجامع لاخلق الراوى وآداب السامع، المآكل المستحب... الخ، ص ۴۵۸، رقم: ۱۷۹۱

②... كنز العمال، كتاب الفضائل، باب فضائل الحيوانات والنبات والجمال، الجزء: ۱۴، ۸۳/۷، حديث: ۳۸۳۱۶

③... العلاج بالاغذية والاعشاب في بلاد المغرب، باب ما جفى علاج البلغم... الخ، ص ۲۱

ज़ियादा प्याज़ खाने की आदत बनाना अक्ल में कमी लाता है और भूल की बीमारी पैदा करता है। निस्त्यान के मरीज़ को चाहिये कि वोह छोटे, कम चरबी और खुश्क (तासीर वाले) परन्दों जैसे चिड़या, चन्डोल (एक खुश आवाज़ परन्दा) और इस जैसे दीगर छोटे परन्दों का गोश्त खाए और शहद वाला पानी इस्ति'माल करे।⁽¹⁾

कलोन्जी और शहद से निस्त्यान का इलाज

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र मुन्कदिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हर सुब्ह कलोन्जी शहद के साथ खाया करते थे और येह बलगम के इलाज के लिये सब से बेहतरीन चीज़ है।⁽²⁾

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



अश्क़ार ने हाफ़िज़ा क़वी फ़रमा दिया



हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : एक दिन नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : क्या येह नहीं हो सकता कि तुम में से कोई शख्स अपना कपड़ा फैलाए यहां तक कि मैं अपना येह कलाम पूरा कर लूं, तो वोह (उस कपड़े को) अपने सीने से लगाए फिर कभी जो वोह मेरा कोई कलाम भूल जाए ! (या'नी फिर वोह कभी मेरा कोई कलाम नहीं भूल सकेगा) येह सुन कर मैं ने कम्बल फैला दिया। मुझ पर उस के

1... الحلاوی فی الطب، الباب الرابع فی قوی الدماغ... الخ، ۱/ ۵۵ ملقطاً

2... العلاج بالاغذية والاعشاب فی بلاد المغرب، باب ما جاء فی علاج البلغم... الخ، ص ۴۱

सिवा और कोई कपड़ा न था। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपना कलाम पूरा फ़रमा लिया तो मैं ने वोह कम्बल समेट कर अपने सीने से लगा लिया। उस ज़ात की क़सम जिस ने हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का हक़ के साथ भेजा मैं उस दिन के बा'द हुजूर का कोई फ़रमान नहीं भूला।⁽¹⁾

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكُوفِي इस हदीसे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : एक दिन दरयाए अ़ता मौजज़न था लोगों को कुव्वते हाफ़िज़ा तक्सीम फ़रमा रहे थे, फ़रमाया कोई है जो अपना कपड़ा बिछाए हम एक दुआ पढ़ते हैं जब वोह दुआ ख़त्म हो जाए तो येह ही कपड़ा अपने सीने से लगा ले إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى उस का हाफ़िज़ा बहुत ही क़वी हो जाएगा। ख़याल रहे कि थोड़ी चीज़ हाथ फैला कर ली जाती है मगर बड़े सख़ी की बड़ी अ़ता चादर फैला कर समेटी जाती है यहां चादर फैलाने का हुक्म दिया गया मा'लूम होता है अ़ता बड़ी है। ख़याल रहे कि कुव्वते हाफ़िज़ा इन्सान की एक सिफ़त है जो कुदरती तौर पर लोगों को अ़ता होती है कोई क़वी हाफ़िज़े वाला होता है कोई ज़ईफ़ हाफ़िज़े वाला, इस हदीस से मा'लूम होता है कि हुजूर सिफ़ाते इन्सानिय्या भी अ़ता फ़रमाते हैं ब हुक्मे परवर दगार

मालिक हैं ख़ज़ानए कुदरत के जो जिस को चाहें दे डालें
दी ख़ुल्द जनाबे रबीआ को बिगड़ी लाखों की बनाई है

1 ... मुसलम, किताब फ़ुज़ालि अल-सुहाब, बाब मिन् फ़ुज़ालि अयि हरिरे, स १३५, हदीथ: १५९, मल्लतु

इस से मा'लूम हो रहा है कि हज़रते अबू हुदैरा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) कोई दुनियावी बात भूलें तो भूलें मेरा कलाम कभी न भूलेंगे। थोड़ा आगे मज़ीद इरशाद फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि हुज़ूर صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का हर उज़्व हर अदा **अल्लाह** के ख़ज़ानों का दरवाज़ा है किसी को दम कर के ने'मते बख़्श दें, किसी को नज़र से, किसी को हाथ से, किसी को ज़बान शरीफ़ से, यूं ही हर जगह हुज़ूर (صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) का दरवाज़ा अ़ता है जहां रह कर भिकारी अपना हाथ फैला दे वहां ही अ़ता हो जाती है। सूरज का नूर ही ख़ास जगह में नहीं जहां भी मौजूद हो हिजाब से निकल आओ नूर पा जाओगे। आ'ला हज़रत (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) ने फ़रमाया :

मंगता का हाथ उठते ही दाता की दैन थी दूरी क़बूलो अ़र्ज में बस हाथ भर की है मौलाना हसन रज़ा ख़ान साहिब قُدِّسَ سِرُّهُ फ़रमाते हैं :

जहां हाथ फैला दे मंगता भिकारी वोह ही दर है दाता की दौलत सरा का⁽¹⁾

दूसरी रिवायत में है हज़रते सय्यिदुना अबू हुदैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बारगाहे रिसालत में ख़ुद अ़र्ज की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मैं आप से अहादीस सुनता हूं मगर भूल जाता हूं ? इरशाद फ़रमाया : अबू हुदैरा ! अपनी चादर फैलाओ।⁽²⁾

1मिरआतुल मनाजीह, 8/204

2 ... بخاری، کتاب العلم، باب حفظ العلم، ۲۲/۱، حدیث: ۱۱۹

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह भी मा'लूम हुवा **अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ ने मदनी सरकार जनाबे अहमदे मुख्तार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बे शुमार इख्तियारात से नवाजा है। माद्दी चीजें अता फ़रमाने की तो कई रिवायात हैं ! हमारे मीठे मीठे आका, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुव्वते हाफ़िज़ा जैसी नज़र न आने वाली शै भी हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इनायत फ़रमा दी।

मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं

दो जहां की ने 'मते' हैं उन के ख़ाली हाथ में

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

निस्थान दूर करना सरकार का मो'जिज़ा है

दो अलम के ताजदार, जनाबे अहमदे मुख्तार عَزَّوَجَلَّ को **अल्लाह** ने बे शुमार मो'जिज़ात से नवाजा, उन्ही में से आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक मो'जिज़ा निस्थान दूर फ़रमाना भी है, चुनान्चे, क़वी हाफ़िज़ा हासिल करने की निय्यत से सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان बारगाहे रिसालत में हाज़िर होते और मरजे निस्थान से शिफ़ा पा कर अज़ीम याददाश्त के मालिक बन जाते।

इस के बा'द मैं कभी कोई चीज़ नहीं भूला

हज़रते सय्यिदुना उस्मान बिन अबिल आस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक रोज़ मैं ने बारगाहे रिसालत में अपनी कमज़ोर

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

याददाश्त के सबब कुरआने मजीद याद न होने की शिकायत की । सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “येह शैतान (की वजह से) है जिसे ख़न्ज़ब कहा जाता है, ऐ इस्मान ! मेरे करीब आओ ।” जब मैं करीब आया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मेरे मुंह में अपना लुआबे दहन डाला और अपना दस्ते मुबारक मेरे सीने पर रखा जिस की ठन्डक मैं ने सीने में महसूस की, फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ शैतान ! इस्मान के सीने से निकल जा ।” उस दिन के बा’द मैं कभी कोई चीज़ नहीं भूला ।⁽¹⁾

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की भी क्या शान है ! कि न सिर्फ़ बातिनी मरज़ की वुजूहात से वाकिफ़ हैं बल्कि उस के इलाज फ़रमाने पर भी कादिर हैं, येह आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ाहिरी हयात के साथ ही ख़ास नहीं है बल्कि आज भी अगर कोई सिद्के दिल से अपने आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में इस्तिगासा पेश करे और मरजे निस्त्यान से शिफ़ा त़लब करे तो **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** उस की मुराद पूरी होगी बल्कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की बारगाह में अगर कोई अपने आ’माले सालिहा, इताअते रसूल व इश्के मुस्तफ़ा के सबब मक्बूल हो तो करीम आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ खुद ही करम फ़रमा देते हैं, जैसा कि :

① ... دلائل النبوة لابی نعیم، الفصل الرابع والعشرون۔ الخ، ص ۲۷۷، رقم ۳۹۶

कुन्द ज़ेहनी ख़त्म हो गई

शारेहे अक़ाइदे नस्फ़िया हज़रते सय्यिदुना सा'दुद्दीन मसऊद बिन उमर तफ़्ताज़ानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ काज़ी अज़ुद्दीन अब्दुरहमान शीराज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के हल्क़ाए दर्स में सब से ज़ियादा कुन्द ज़ेहन कहलाते थे । इस के बा वुजूद आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हिम्मत न हारी बल्कि किसी की बात को ख़ातिर में लाए बिग़ैर अपने अस्बाक़ को पढ़ने और याद रखने के लिये कोशिश और मेहनत जारी रखी । एक बार सरकारे मदीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ऐसा करम फ़रमाया कि कुन्द ज़ेहनी ख़त्म हो गई और **اَللّٰہ** عَزَّوَجَلَّ ने बे मिसाल हाफ़िज़ा अता फ़रमा दिया । (तफ़सीली वाकिआ सफ़हा 119 पर मुलाहज़ा फ़रमाइये)⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! लगन सच्ची हो तो एक दिन मेहनत रंग ले ही आती है । इस हिकायत में ऐसे इस्लामी भाइयों के लिये मदनी फूल हैं जो कुन्द ज़ेहनी की वजह से दिल बरदाश्ता हो कर मेहनत करना छोड़ देते हैं और येह ज़ेहन बना लेते हैं कि मैं कुछ नहीं कर सकता, हालांकि उन्हें ऐसा नहीं सोचना चाहिये क्यूंकि इन्सान मेहनत करे, निर्यत अच्छी हो, लगन सच्ची हो तो मेहनत बेकार नहीं जाती लिहाज़ा ऐसे इस्लामी भाई दिल

1 ... شذرات الذهب، سنة احدى وتسعين وسبعمائة، 4/ 48

बरदाश्ता न हों बल्कि मेहनत व लगन से कोशिश शुरू कर दें
 إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ करम हो ही जाएगा । **अल्लाह** ने जिन्हें अच्छी
 याददाश्त और कुव्वते हाफ़िज़ा से नवाज़ा है उन्हें कुन्द ज़ेहन तलबा
 का मज़ाक़ नहीं उड़ाना चाहिये, बल्कि अपने आप को **अल्लाह**
عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी से डराना चाहिये, क्योंकि कुन्द ज़ेहन का मज़ाक़
 उड़ाना उस की दिल आज़ारी का बाइस और जहन्नम में ले जाने
 वाला काम है येह भी मुमकिन है कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** मज़ाक़ उड़ाने
 वाले ज़हीन को कुन्द ज़ेहन और कुन्द ज़ेहन को आ'ला कुव्वते
 हाफ़िज़ा अता फ़रमा दे ।

तबर्क़ात से हाफ़िज़ा क़वी कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के बरगुज़ीदा
 और नेक बन्दे या'नी अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام व औलियाए
 उज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام बड़ी बरकत वाले होते हैं, दिन रात इबादात व
 रियाज़ात करने, इताअते इलाही में मसरूफ़ रहने, **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के
 बन्दों को हिदायत पर लाने और नेकी की दा'वत आ़म करने के
 सबब **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उन्हें बे शुमार बरकतों से नवाज़ता है, फिर उन
 की इस्ति'माल शुदा अश्या और उन से मन्सूब चीज़ों से भी बरकतों
 का जुहूर होता है जिस से आ़म लोग भी मुस्तफ़ीज़ होते हैं । कुरआनो
 हदीस में इस के बे शुमार दलाइल मज़कूर हैं, हज़रते सय्यिदुना

यूसुफ़ عَلَى نَبِينَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की मुबारक क़मीस की बरकत से सय्यिदुना या'क़ूब عَلَى نَبِينَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की बीनाई लौट आने वाला वाकिअ⁽¹⁾, ताबूते सकीना जिस में अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की इस्ति'माल शुदा चीजें थीं, इस की बरकत से बनी इस्राईल को मिलने वाली जंगी फ़तूहात⁽²⁾ और प्यारे आका صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के जुब्बए मुबारका की बरकत से बीमारों को मिलने वाली शिफ़ा⁽³⁾ इसी सिलसिले की कड़ियां हैं लिहाज़ा अगर कभी किसी बुजुर्ग का कोई तबरूक मुयस्सर आए तो इस के ज़रीए भी निस्थान का इलाज किया जा सकता है और बिला शुबा इस की बरकत से कुव्वते हाफ़िज़ा नसीब हो जाता है, जैसा कि

शेरे खुदा के क़वी हाफ़िज़े का राज़

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से किसी ने सुवाल किया कि आप के इस क़दर क़वी हाफ़िज़े का सबब क्या है ? इरशाद फ़रमाया : जब मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को (ज़ाहिरी पर्दा फ़रमाने के बा'द) गुस्ल दिया तो जो पानी आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हल्क़ए चश्म में जम्अ हो गया था, मैं ने उसे पी लिया था, इसी की बरकत से मेरा हाफ़िज़ा क़वी है ।⁽⁴⁾

② ... प: २, البقرة: २४८

① ... प: १३, يوسف: ११

③ ... مسلم, کتاب اللباس والزينة, باب تحريم استعمال إماء الذهب, ص ११४, حديث: १०

④ ... مسند احمد, مسند عبد الله بن عباس --- الخ, १/ ५६३, حديث: २४०३ مأخوذ,

شواهد النبوة, ص १३८ واللفظ له

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़मज़म शरीफ़ भी दीगर पानियों की मिस्ल एक पानी है मगर चूँकि येह हज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَى نَبِينَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के मुबारक क़दमों की रगड़ के सबब ज़मीन से निकला था लिहाज़ा आप की ज़ाते मुबारका की वजह से येह पानी बरकत वाला हो गया, ज़मज़म शरीफ़ की जहां बे शुमार बरकतें हैं वहीं इस की बरकत से दुआएं भी क़बूल होती हैं चुनान्चे,

इमाम ज़हबी जैसे हाफ़िज़े की तमन्ना

हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ शिहाबुद्दीन अहमद बिन हज़र अस्क़लानी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने जब ज़म ज़म शरीफ़ नौश फ़रमाया तो इस के बा'द बारगाहे इलाही में दुआ गो हुवे : “ऐ **اَللّٰهُ** ! رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मुझे हज़रते सय्यिदुना इमाम शम्सुद्दीन अहमद ज़हबी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जैसा क़वी हाफ़िज़ा अता फ़रमा ।”⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ इब्ने हज़र अस्क़लानी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की क़बूलिय्यते दुआ की दलील आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की कई कई जिल्दों पर मुश्तमिल तसानीफ़ हैं । लिहाज़ा ज़म ज़म शरीफ़ को पीते वक़्त दुआ मांग कर भी अपनी याददाश्त को मज़बूत किया जा सकता है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

① ... میزان الاعتدال، ترجمة الامام الذهبي، شهرته العلمية ومنزلته بين الحفاظ، ١/٤

निगाहे वली की तारीफ़ क़ुर्वते हाफ़िज़ा के लिये इक़शीर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तबीब दो तरह के होते हैं, एक वोह जो सिर्फ़ जिस्मानी मरज़ का अदवियात वगैरा के ज़रीए इलाज करता है, जिसे आम इस्तिलाह में डॉक्टर या हकीम कहा जाता है, जब कि एक तबीब वोह है जो जिस्मानी अमराज़ के साथ साथ बातिनी और क़ल्बी अमराज़ का अपनी रूहानियत के ज़रीए इलाज करता है और येह खास्सा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام व औलियाए उज़्ज़ाम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام का है।

तबीबों के तबीब अब्बुह عَزَّوَجَلَّ के हबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने बिगैर किसी आलए ओपरेशन के कई मरीजों के इलाज फ़रमाए, जैसे आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने दस्ते मुबारक से हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अतीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पाउं की टूटी हुई हड्डी को जोड़ दिया⁽¹⁾, लुआबे दहन से हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की दुखती आंख का इलाज फ़रमा दिया⁽²⁾, इसी तरह हज़रते सय्यिदुना क़तादा बिन नो'मान अन्सारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ग़ज़वए उहुद में तीर से ज़ख़मी हो कर निकल जाने वाली आंख को हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने अपने दस्ते

1 ... بخاری، کتاب المغازی، باب قتل ابی رافع۔ الخ، ۳/۳، حدیث: ۳۰۳۹

2 ... مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل علی۔ الخ، ص ۱۳۱، حدیث: ۳۵

मुबारक से आंख के हल्के में रख दिया और फिर अपनी मुस्तजाब दुआ के ज़रीए उन की आंख का इलाज फ़रमा दिया ।⁽¹⁾

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मरीजों को शिफ़ायाब करना नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का मो'जिज़ा है और जो चीज़ नबी से बतौर मो'जिज़ा सादिर हो वोह वली से बतौर करामत सादिर हुई है जैसा कि इमाम जलालुद्दीन अब्दुरहमान सुयूती رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ नक्ल फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना शैख़ अफ़ीफ़ुद्दीन अब्दुल्लाह याफ़ेई عَيْنِي رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “औलिया पर अहवाल पेश किये जाते हैं जिस में वोह आस्मानों और ज़मीन में काइम **عَزَّوَجَلَّ** की बादशाही को मुलाहज़ा फ़रमाते हैं और वोह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को ब हालते हयात इस तरह देखते हैं जिस तरह सरकारे दो अलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने (मे'राज शरीफ़ की रात) हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को उन की क़ब्र में ज़िन्दा मुलाहज़ा फ़रमाया था ।” मज़ीद फ़रमाते हैं : “और येह बात मा'लूम है कि जिस बात का सुदूर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की ज़ात से जाइज़ है, उसी बात का औलियाए किराम की ज़ात से सादिर होना जाइज़ है मगर किसी दा'वे की शर्त के बिगैर ।” मज़ीद फ़रमाते हैं : “कोई जाहिल ही इस बात का इन्कार करेगा ।”⁽²⁾ मा'लूम हुवा जो काम **عَزَّوَجَلَّ**

① ... مواهب اللدنيه، المقصد الاول، غزوة احد، ۲/۳۳۲

② ... الحاوی للفتاوی، کتاب البعث، انباء الانکباء بحیة الانبیاء، ۲/۱۸۱

की अता से नबी عَلَيْهِ السَّلَام कर सकते हैं वोही खिलाफे आदत काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अता से नबी عَلَيْهِ السَّلَام के तुफैल औलियाए किराम رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَام भी कर सकते हैं। लिहाजा **अल्लाह** वालों की सोहबत और उन की निगाहे फैज जहां दीगर अमराज के लिये मुफ़ीद है वहीं मरजे निस्यान के इलाज के लिये भी इकसीर है, चुनान्चे,

बलिख्ये कामिल की नज़रे इनायत से निस्यान दूर हो गया

हज़रते अल्लामा अब्दुल अज़ीज पिरहारवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي बचपन में बहुत कुन्द ज़ेहन थे। इन्तिहाई कोशिश के बा वुजूद अपना सबक याद नहीं होता था, एक दिन निहायत रन्जीदा हो कर एक कोने में जा कर बैठ गए और ज़ारो क़ितार रोने लगे, इसी दौरान (आप के पीरो मुर्शिद) हज़रते सय्यिदुना शाह जमालुल्लाह चिश्ती मुल्तानी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की नज़र उन पर पड़ी तो कमाले शफ़क़त फ़रमाते हुवे उन से पूछा : “अब्दुल अज़ीज क्यूं रन्जीदा हो ?” अर्ज की : “हुज़ूर कोशिश के बा वुजूद सबक याद नहीं होता।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “हमारे पास आओ और हमारे सामने सबक पढ़ो।” हज़रते अल्लामा पिरहारवी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हुक्म की बजा आवरी करते हुवे आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के सामने बैठ गए और अपना सबक पढ़ना शुरू किया, इसी दौरान हज़रते सय्यिदुना शाह जमालुल्लाह चिश्ती मुल्तानी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उन पर ऐसी नज़रे इनायत डाली कि निस्यान का मरज जाता रहा और फिर येह आलम हो गया कि इस के बा'द जो किताब एक मरतबा पढ़ते कभी न भूलते। बल्कि मुश्किल से मुश्किल किताब पढ़ कर उस के

मज़ामीन बिला तकल्लुफ़ बयान फ़रमा दिया करते थे । आहिस्ता आहिस्ता उन की ज़हानत व फ़तानत और कुव्वते हाफ़िज़ा का दूर दूर तक चर्चा फैल गया ।⁽¹⁾

येह मेरे मुर्शिद का फैज़ है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते अल्लामा अब्दुल अज़ीज़ पिरहारवी **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** अपने पीरो मुर्शिद की बरकत से मिलने वाली इस अज़ीम ने'मत को कभी न भूले । आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** को जो तरक्की मिली इसे अपने मुर्शिद का सदका ही जाना । इरशाद फ़रमाते हैं : “येह फ़कीर अपनी फ़ेहमो फ़िरासत पर फ़ख़्र नहीं करता लेकिन **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की हिक्मत और उस के बे मिसाल फ़ज़ल पर हैरान होता है कि उस ने इस अज़िज़ के ज़ेहन में उलूमे दकीका (या'नी मुश्किल उलूम) की मुख़्तलिफ़ अक्साम पढ़े बिगैर मुन्कशिफ़ फ़रमा दीं जब कि येह अज़िज़ बचपन में कुन्द ज़ेहन मशहूर था ।” मज़ीद फ़रमाते हैं : मैं क्या हूं ? येह (जो कुछ भी मुझ में कमाल है) महज़ **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की मदद और उस के फ़ज़ले खास की ब दौलत है, इस के बा'द हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** और मेरे पीरो मुर्शिद का फैज़ान है ।”⁽²⁾

①अहवाल व आसार अल्लामा अब्दुल अज़ीज़ पिरहारवी, स. 27 बित्तसरुफ़

②अहवाल व आसार अल्लामा अब्दुल अज़ीज़ पिरहारवी, स. 27 बित्तसरुफ़

उठो ! मैं ने तुम्हें ज़हीन किया

सिलसिलए क़ादिरिया रज़विय्या के मशहूर बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना जमालुल औलिया क़ादिरि عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي का हाफ़िज़ा पैदाइशी तौर पर काफ़ी कमज़ोर था, इसी लिये मद्रसे के त़लबा आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का मज़ाक़ उड़ाया करते थे, जब येह सिलसिला मज़ीद बढ़ा और त़लबा के रवय्ये में ज़र्ज़ बराबर तब्दीली नहीं आई तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ दिल बरदाश्ता हो कर जंगल की जानिब निकल गए जब आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को गाइब हुवे तीन दिन गुज़र गए तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के उस्ताज़ अल्लामा क़ाज़ी ज़िया ज़ियाउद्दीन क़ादिरि عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को फ़िक्र लाहिक् हुई, वोह आप की तलाश में निकले और ढूँडते हुवे उसी जंगल में पहुंच गए, क्या देखते हैं कि हज़रते सय्यिदुना जमालुल औलिया क़ादिरि عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ एक ग़ार में छुपे बैठे हैं। क़ाज़ी ज़िया رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने क़रीब जा कर मद्रसा छोड़ कर आने की वज्ह मा'लूम की तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ वज्ह बयान करते हुवे कहने लगे : “त़लबा मेरी कुन्द ज़ेहनी पर हंसत हैं।” क़ाज़ी ज़िया رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने जब येह सुना तो जोश में आ कर इरशाद फ़रमाया : “उठो ! मैं ने तुम्हें ज़हीन कर दिया।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी ज़िया رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की मुबारक ज़बान से निकलने वाले येह कलिमात बारगाहे इलाही में मक्बूल हुवे और आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने ज़हानत और कुव्वते हाफ़िज़ा की ब दौलत फ़िक्ह, उसूले फ़िक्ह और उलूमे अरबिय्या में महारत हासिल की और अब आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का कुव्वते हाफ़िज़ा शोहरत का सबब

①तारीख़े मशाइख़े क़ादिरिया, 2/90 माख़ूज़न

बना। सारी ज़िन्दगी दर्सी तदरीस में मशगूल रहे और अ़वामो ख़वास की इल्मी प्यास को बुझाया। हज़रते अ़ल्लामा मीर सय्यिद मुहम्मद कालपवी तिरमिज़ी अल हसनी अबुल उ़लाई क़ादिरि, साहिबे मुनाज़िरए रशीदिय्या अ़लिमे कबीर हज़रते मौलाना मुहम्मद रशीद उ़स्मानी जौनपुरी और हज़रते सय्यिदुना मुल्ला जीवन के उस्ताद अ़ल्लामा लुत्फ़ुल्लाह कोरवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا का शुमार आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के शागिर्दों में होता है। हज़रते सय्यिदुना जमालुल औलिया क़ादिरि عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِيُّ सिलसिलए अ़लिय्या क़ादिरिय्या के मशाइख़ में से हैं।

ख़ानए दिल को ज़िया दे रूए ईमां को जमाल

शह ज़िया मौला जमालुल औलिया के वासिते

बच्चों पर तन्कीद न करें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह एक हकीकत है कि हर बच्चे की याददाश्त और ज़ेहनी सलाहिय्यत जुदा जुदा होती है, बा'ज़ बच्चे बे पनाह ज़हीन होते हैं जब कि कुछ बहुत ही कुन्द ज़ेहन होते हैं और कुछ बच्चे मुतवस्सित दरजे के होते हैं। मां-बाप और उस्ताद को चाहिये कि कभी भी बच्चों की कमज़ोरियों पर तन्ज़ों के तीर न बरसाएं, क्यूंकि इस तरह उन के अन्दर एहसासे कमतरी पैदा होगा और कुछ करने से क़ब्ल ही हिम्मत हार जाएंगे। अपने आप को ख़ामियों से भरपूर तसव्वुर करेंगे। चूंकि बच्चे छोटे ज़ेहन और नाजुक दिल होते हैं इसी लिये हर बात पर जल्द यकीन कर लेते हैं, जो बात

पेशक़श : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

बचपन से उन के दिल में डाल दी जाए वोह पथ्थर पर लकीर की तरह उन के ज़ेहन में बैठ जाती है, तो अगर हम बच्चों को **नाकाम और ना लाइक** कहेंगे तो येह बात उन के दिमाग में आसेब की तरह चिमट जाएगी और येही ख़याल उन्हें मायूसी की दल दल में फंसा कर मुआशरे का बेकार फ़र्द बना देगा लिहाज़ा बच्चों की हौसला अफ़ज़ाई कीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** आप की मा'मूली सी थपकी और दिलजूई शाहराहे कामयाबी पर गामज़न करने के लिये बहुत कार आमद साबित होगी ।

कूँवते हाफ़िज़ा बढ़ाने वाले काम

❀.....हज़रते सय्यिदुना उक़्बा बिन अमिर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं :
रसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : तुम मेहंदी से ख़िज़ाब करो, येह इस्लाम का ख़िज़ाब है, अक्ल में इज़ाफ़ा करता है, नज़र को जिला बख़्शता है, दर्दे सर दूर करता है, मोमिन को जीनत देता है । तुम्हें चाहिये कि ज़र्द रंग (का ख़िज़ाब) इख़्तियार करो कि येह ईमान का ख़िज़ाब है ।⁽¹⁾

❀.....हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي** फ़रमाते हैं : जिस तरह अक्लमन्दों के साथ मैल

जोल रखने से अक़ल में इज़ाफ़ा होता है इसी तरह कमज़ोर अक़ल वालों से मैल जोल रखना अक़ल को कमज़ोर कर देता है।⁽¹⁾

❀.....हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : चार चीज़ें अक़ल को बढ़ाती हैं

(1) फुज़ूल गोई से बचना (2) मिस्वाक करना (3) सालिहीन की सोहबत इख़्तियार करना (4) उलमा की मजलिस में हाज़िर होना।⁽²⁾

हज़रते अल्लामा मुहम्मद बिन मुहम्मद हुसैनी जुबैदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي इस की शर्ह में फ़रमाते हैं : फुज़ूल गोई से मुराद ऐसी लाया'नी गुफ़्तगू है जिस का कोई मक़सद न हो। इस की मज़म्मत में कई रिवायात हैं जिन को इमाम इब्ने अबिदुनिया ने “किताबुस्सम्त” में जम्अ फ़रमाया है। मक़ूला है कि يَتْرَكِ الْفُضُولُ تَكْنُلُ الْعُقُولُ या'नी फुज़ूल गोई छोड़ने से अक़ल की तक्मील होती है। मिस्वाक की अहम्मियत में हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास और हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) की रिवायत में है : “मिस्वाक बलग़म ख़त्म करती और अक़ल को बढ़ाती है।”

सालिहीन और उलमा की सोहबत इख़्तियार करने के मुतअल्लिक हज़रते सय्यिदुना अबू जुहैफ़ा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) से मरवी है कि “उलमा के साथ मिल कर बैठो, बड़ों से सुवाल करो और दानाओं के साथ मुलाक़ात रखो।” हज़रते सय्यिदुना अनस बिन

1 ... احیاء العلوم، کتاب آداب الکسب، الخ، الباب الخامس، ۱۰۸/۲

2 ... احیاء العلوم، کتاب آداب الاکل، الباب الرابع فی آداب الضیافة، ۲/۲

मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि “इलमा की मजलिस में हाज़िर रहो आस्मानों में जाने जाओगे और उम्र रसीदा मुसलमानों की इज़्ज़त करो जन्नत में मेरा पड़ोस पाओगे ।”(1)

❀.....हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुहम्मद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अपने वालिद से रिवायत फ़रमाते हैं : “दोपहर में सोना अक्ल में इज़ाफ़ा करता है ।”(2)

❀ निस्थान पैदा करने वाले अशबाब से बचिये ❀

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो जुम्ले हम कसरत से बोलते या सुनते हैं इन में से एक जुम्ला “मैं भूल गया या भूल जाता हूँ” भी है, दर अस्ल येह जुम्ला हमारी ग़ैर मुनज़्ज़म जिन्दगी को वाजेह करता है और इस का हर हर लफ़्ज़ हमारी मायूसी में कई गुना इज़ाफ़ा करता है, इसी जुम्ले में अपनी ख़ामी का ए'तिराफ़ होता है जो हमें दिन में कई मरतबा करना पड़ता है । “भूल या निस्थान” इन्सानी दिमाग़ (Human brain) से तअल्लुक रखने वाला एक मरज़ है जो दर अस्ल दिमाग़ के पिछले हिस्से में किसी एक या मुकम्मल दिमागी फ़े'ल की ख़राबी के सबब पैदा होता है । दिमाग़ की येह ख़राबी अक्सर सर्दी और रूतूबत की वजह से पैदा होती है और बा'ज़ औकात दिमाग़ पर वरम आने की सूरत में भी याददाश्त कमज़ोर

❶ ... اتحاف السادة المتقين، كتاب آداب الاكل، الباب الرابع في آداب الضيافة، ٢٩٠/٥ ملتقطاً

❷ ... أحكام المرجان في احكام الجنان، الباب التاسع بعد المائة... الخ، ص ١٢٦

हो जाती है। सर्दी, रतूबत या दिमाग़ पर आने वाले वरम की वजह से न तो माज़ी की बातें याद रहती हैं और न ही हाल में अन्जाम पाने वाले उमूर याददाश्त में महफूज़ हो पाते हैं।⁽¹⁾

जिस तरह दीगर बीमारियां किसी न किसी सबब के नतीजे में पैदा होती हैं ऐसे ही “भूल” के पैदा होने के भी कई अस्बाब हैं जिन का खातिमा हमारी याददाश्त को लाहिक़ होने वाले इस मोहलिक मरज़ से नजात दिला सकता है, लिहाज़ा दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों से इन तमाम अस्बाब और इस के तहत आने वाली तफ़सीलात का मुतालाआ कीजिये :

❦ ❶ गुनाहों से हाफिज़ा कमज़ोर होता है ❦

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिन वुजूहात की बिना पर निस्यान का मरज़ पैदा होता है उन में सरे फ़ेहरिस्त “गुनाह” है। गुनाहों की नुहूसत हमारे ज़ाहिरो बातिन दोनों ही के लिये निहायत तबाह कुन है बिल खुसूस निस्यान को तक्विyyत देने वाला सब से बड़ा सबब गुनाह ही है इस वजह से कहा जाता है कि गुनाहों से हाफिज़ा कमज़ोर होता है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब गुनाहों की नुहूसत के सबब रोज़ी कम हो जाए, बलाओं का हुजूम रहे, उम्र घटती चली जाए, इबादत से महरूमि रहे, अक्ल में फुतूर पैदा हो जाए, बन्दा

❶ ... القانون في الطب، الكتاب الثالث، الفن الاول في امراض الراس، فصل في فساد النكر،

लोगों की नज़र में ज़लीलो ख़्बार हो कर रह जाए, ने'मते छिन जाएं, हर वक़्त परेशानी घेरे रखे, ला इलाज बीमारी में मुब्तला हो जाए, चेहरे से ईमान का नूर ख़त्म हो जाने की वजह से बे रौनक हो जाए तो इन गुनाहों की वजह से पैदा होने वाली नुहूसतों के सबब किसी बात का याद करना या रखना क्यूं कर मुमकिन हो सकता है ? वैसे तो तमाम ही गुनाह कुव्वते हाफ़िज़ा कमज़ोर करते और निस्यान को तक्विय्यत पहुंचाते हैं लेकिन कुछ गुनाह वोह हैं जो हाफ़िज़े को बहुत जल्द कमज़ोर कर देते हैं जिन में से चन्द येह हैं :

आलाते हाफ़िज़ा से किये जाने वाले गुनाह

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़बान, आंख और कान किसी भी चीज़ को याददाश्त में महफूज़ करने के लिये आले (Instrument) का काम करते हैं, यकीनन इन में जितनी कमज़ोरी पैदा होगी हाफ़िज़ा उतना ही कमज़ोर होगा और निस्यान का मरज़ बढ़ता चला जाएगा लिहाज़ा हाफ़िज़े को निस्यान जैसी बीमारी से महफूज़ रखने के लिये आंख, कान और ज़बान को गुनाहों से बचाना बेहद ज़रूरी है । हाफ़िज़े के तीनों आलात से होने वाले जिन गुनाहों से निस्यान का मरज़ पैदा होता है उस की तफ़सील कुछ यूं है :

(1) बद निगाही : निस्यान का सब से बड़ा सबब

बद निगाही निस्यान का सब से बड़ा सबब है चूंकि बद निगाही की वजह से दिल में शहवत उभरती है लिहाज़ा बद निगाही

से हमेशा बचते रहने ही में आफ़ियत है। **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के ख़ौफ़ से बद निगाही न करने वाले को हलावते ईमानी नसीब होती है, चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने अपने रब **عَزَّوَجَلَّ** से रिवायत करते हुवे फ़रमाया : “बद निगाही शैतान के तीरों में से ज़हर में बुझा हुवा एक तीर है, जो इसे (या’नी बद निगाही को) मेरे ख़ौफ़ से छोड़ देगा मैं उसे ऐसा ईमान अता फ़रमाऊंगा जिस की मिठास वोह अपने दिल में महसूस करेगा।”⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बद निगाही के साथ साथ फुज़ूल निगाही से भी बचना और हया से अक्सर नज़रें नीची रखना दा’वते इस्लामी के मदनी माहोल में “**आंखों का कुफ़ले मदीना**” कहलाता है। लिहाज़ा **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की रिज़ा पाने और अपने हाफ़िज़े को बचाने के लिये आंखों का कुफ़ले मदीना लगाना मुफ़ीद तरीन है। हज़रते अल्लामा इब्राहीम बिन मुहम्मद शाफ़ेई **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكُوفَى** ने क़लाइदुल इक़यान में हाफ़िज़े की कमज़ोरी का सबब इन चीज़ों को क़रार दिया है। (1) अपनी या किसी और की शर्मगाह को देखना (2) मय्यित के चेहरे की तरफ़ देखना (3) सूली पर लटके हुवे शख़्स को देखना (4) खड़े पानी को देखना और उस में पेशाब करना।⁽²⁾

1... معجم كبير، مسند عبد الله بن مسعود، ١٠/٤٣، حديث: ١٠٣٦٢

2... قلائد العقيان، ص ٣٧، ملقطاً

(2) ज़बान का ग़लत इस्ति'माल श्री निख्यान पैदा करता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़बान भी कुव्वते हाफ़िज़ा तक मा'लूमात पहुंचाने और ज़ेहन में पैदा होने वाले खयालात को ज़ाहिर करने वाला एक अनमोल और कीमती आला है । चूंकि गुफ़्तगू में हमारी दिमागी तवानाई खर्च होती है लिहाज़ा जितनी ज़ियादा ज़बान चलेगी उतना ही दिमाग़ पर जोर पड़ेगा । फुज़ूल गोई और बेजा तब्सेरा करने की आदत में बे पनाह ग़ीबतों, बे शुमार तोहमतों और बा'ज़ औकात तो कुफ़्रिय्यात में पड़ जाने का अन्देशा होता है लिहाज़ा अफ़िय्यत इसी में है कि अपनी ज़बान को फुज़ूल गोई से बचाने की आदत बनाइये ताकि इस की बरकत से दिमाग़ की तवानाई महफूज़ रहे और कुव्वते हाफ़िज़ा को नुक़सान न पहुंचे । ख़ामोशी की आदत बनाने के लिये बुख़ारी शरीफ़ की हदीसे पाक को हिफ़ज़ कर लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** काफ़ी सहूलत रहेगी चुनान्चे, मदीने के सुल्तान, सरकारे दो जहान, रहमते अलमिय्यान **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने इब्रत निशान है : **مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيُكَلِّمْ خَيْرًا أَوْ لِيَصْمُتْ** : **عَزَّوَجَلَّ** और आख़िरत पर ईमान रखता हो उसे चाहिये कि अच्छी बात करे या ख़ामोश रहे ।⁽¹⁾

1 ... بخاری، کتاب الادب، باب من كان یؤمن بالله... الخ، ۱۰۵/۴، حدیث: ۲۰۱۹

(3) सुन कर याद कर लेना भी एक ने'मत है लेकिन...

हाफ़िज़े का तीसरा आला कुव्वते समाअत (Listening Power) है। सुन कर याद कर लेना भी **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की बे शमार ने'मतों में से एक ने'मत है, वोह लोग जो बीनाई की ने'मत से महरूम होते हैं उन की कुव्वते समाअत बेहद तेज़ होती है जिस की ब दौलत वोह हिफ़्ज़े कुरआन की सआदत भी हासिल कर लेते हैं और दुन्या के दीगर ता'लीमी मैदान में इसी ने'मत की ब दौलत नुमायां और इम्तियाज़ी मक़ाम हासिल कर लेते हैं। अगर हम अच्छी बातें सुन कर याद करने की आदत को पुख़्ता कर लें तो हम ता'लीमी इदारे में हों या दर्सी बयान में शामिल हों हमारा कोई भी लम्हा फुज़ूल जाएअ नहीं होगा और हमारी मा'लूमात में भी ख़ातिर ख़्वाह इजाफ़ा होगा लेकिन अगर हम कुव्वते समाअत की इस ने'मत को फ़क़त फुज़ूल, बेकार और गुनाहों भरी गुफ़्तगू और गाने बाजे सुनने में सर्फ़ करें तो यकीनन इन फुज़ूलिय्यात और खुराफ़ात की नुहूसत से हमारा हाफ़िज़ा बहुत बुरी तरह मुतअस्सिर होगा लिहाज़ा कानों से होने वाले गुनाहों से तौबा कर लीजिये, **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की बरकत से आप की कुव्वते समाअत भी क़वी होगी और हाफ़िज़ा मज़बूत होगा।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

पेशक़श : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

गाने बाजे सुनने से अक्ल जाइल हो जाती है

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल फ़त्ताह हुसैनी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ गाने बाजे की तबाहकारियों के मुतअल्लिक एक बुजुर्ग का कौल नक्ल फ़रमाते हैं : गाने बजाने से परहेज़ करो, क्यूंकि गाना मुरव्वत को साक़ित करता है, बे हया बना देता है, बे शर्मी का इस से आगाज़ होता है, शहवत ज़ियादा होती है, नीज़ येह शराब का नाइब है, अक्ल को जाइल करता है, नशे की हालत लाता है और औरतों का इस से परहेज़ करना बहर हाल ज़रूरी है, क्यूंकि येह ज़िना की तरफ़ बुलाता है ।⁽¹⁾

निस्स्यान पैदा करने वाले चब्द गुनाह

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! चन्द गुनाह ऐसे हैं जो ख़ास तौर पर निस्स्यान का सबब बनते हैं : (1) जमाअत के साथ नमाज़ में सुस्ती (2) बदकारी (3) झूट (4) खुलफ़ाए राशिदीन (हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'जम, हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी, हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ को बुरा भला कहना (5) गुनाहों और **اَبْلَاغ** की ना फ़रमानियों वाले काम करना (6) शराब पीना

(4) निस्स्यान पैदा करने वाली ग़िज़ाएं

जिस तरह ग़िज़ाएं कुव्वते हाफ़िज़ा बढ़ाती हैं इसी तरह कुछ ग़िज़ाएं वोह भी हैं जो निस्स्यान का मरज़ पैदा करती हैं, उन ग़िज़ाओं

①दौलते बे ज़वाल, स. 99

की तफ़्सील यह है : (1) सब्ज़ धन्या खाना (2) खट्टे सेब खाना (3) चूहे का बचा हुआ खाना चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْفِي फ़रमाते हैं : चूहे का बचा हुआ खाने से निस्स्यान पैदा होता है ।⁽¹⁾ (4) ज़ियादा दूध पीना (5) लोबिया ज़ियादा खाना (6) मुस्तक़िल सूखा गोश्त खाना । (7) ठन्डा पानी ब कसरत पीना (8) ठन्डी चीज़ें जैसे दूध, सिरका और तमाम खट्टी चीज़ें खाना (9) ठन्डे मेवे ब कसरत खाना (10) घास खाना (11) बकरी के एक साल के बच्चे का गोश्त खाना, इसी तरह बूढ़ी बकरी का गोश्त खाना (12) बहुत ज़ियादा मोटे (चर्बी वाले) जानवर का गोश्त खाना (या'नी चर्बी ज़ियादा खाना) (13) कच्ची प्याज़ खाना (14) नीम उबला (Half boil) अन्डा खाना ।⁽²⁾

(5) निस्स्यान पैदा करने वाली आदतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कामयाबी और नाकामी का तमाम तर दारो मदार हमारी आदतों पर होता है, अच्छी आदतें हमें कामयाबी से हमकिनार करती हैं और ख़राब आदतें हमारी नाकामी का सबब बन जाती हैं । दर हकीक़त ख़राब और मा'यूब आदात का असर हमारी याददाश्त पर पड़ता है जिस की वजह से हमें नाकामी का मुंह देखना पड़ता है और बा'ज़ औकात तो हम कामयाबी के क़रीब पहुंचने के बा वुजूद नाकाम हो जाते हैं । जो आदतें निस्स्यान का सबब बनती हैं उन की तफ़्सील पेशे ख़िदमत है :

1... ارشاد الساری، کتاب الذبائح الخ، اذا وقعت الفارة الخ، ۱۲/۳۴۰، تحت الحديث: ۵۵۴۰

2... قلائد العقیان، ص ۲-۱۱، الكشف والبیان، ص ۲۴-۳۲، ملقطاً

﴿१﴾ किस तरह, कितना और कब सोने से निश्चयान पैदा होता है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي ने तीन बातें ज़िक्र फ़रमाई हैं :

(१) नंगे जिस्म सोना । (فلائد العقیان، ص २) (२) ब कसरत नौंद करना (३) चाश्त के वक़्त सोना ।^(१)

सोने जागने की सुन्नतें और आदाब

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ किताब “सुन्नतें और आदाब, स. 33” से सोने जागने की सुन्नतें और आदाब पेशे ख़िदमत हैं : (१) सोने से पहले बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ कर बिस्तर को तीन बार झाड़ लें ताकि कोई मूजी शै या कीड़ा वगैरा हो तो निकल जाए । (२) सोने से पहले येह दुआ पढ़ लेना सुन्नत है। **تَرْجَمَا : اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰ** ऐ **اَللّٰهُمَّ** मैं तेरे नाम के साथ ही मरता हूं और जीता हूं (या'नी सोता और जागता हूं)^(२) (३) उलटा या'नी पेट के बल न सोएं । हज़रते सय्यिदुना अबू हु़रैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को पेट के बल लेते हुवे देखा तो फ़रमाया : “इस तरह लेटने को **اَللّٰهُمَّ** पसन्द

१ ... الكشف والبيان، ص २८

२ ... بخاری، کتاب الدعوات، باب ما یقول اذا نام، ۱۹۲/۲، حدیث: ۳۱۱۲

नहीं फ़रमाता ।”(1) (4) दाईं करवट लेटना सुन्नत है । हुज़ूर ताजदारे मदीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** जब अपनी ख़्वाब गाह पर तशरीफ़ ले जाते तो अपना सीधा हाथ मुबारक सीधे रुख़्सार शरीफ़ के नीचे रख कर लेटते ।(2) (5) कुरआने मजीद के आदाब में से येह भी है कि इस की तरफ़ पीठ न की जाए न पाउं फैलाए जाएं, न पाउं को इस से ऊंचा करें, न येह कि खुद ऊंची जगह पर हो और कुरआने मजीद नीचे हो ।(3) हां अगर कुरआने पाक और मुक़द्दस तुग़रे वग़ैरा ऊंची जगह हों तो उस सम्त पाउं करने में मुज़ाइफ़ा नहीं ।(4) (6) कभी चटाई पर सोएं तो कभी बिस्तर पर कभी फ़र्शे ज़मीन पर ही सो जाएं । (7) जागने के बा’द येह दुआ पढ़ें :

التَّحْمِيدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ **तर्जमा :** तमाम ता’रीफ़ें **اَللّٰهُمَّ** के लिये हैं जिस ने हमें मारने के बा’द ज़िन्दा किया और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है ।(5)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّيْ اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

- ① ... ابن ماجه، كتاب الادب، باب النهي عن الاضطجاع... الخ، ٢/١٢٢، حديث: ٣٤٢٣
- ② ... الشَّامِلُ الْمُحْمَدِيَّة، كتاب الشَّامِلُ، باب ماجاء في صفة نوم رسول الله... الخ، ص ١٥٤، حديث: ٢٢٢
- ③बहारे शरीअत, 3/496
- ④ ... فتاوى هندية، كتاب الكراهية، الباب الخامس في آداب المسجد... الخ، ٥/٣٢٢ ماخوذا
- ⑤ ... بخارى، كتاب الدعوات، باب مايقول اذا نائم، ٢/١٩٢، حديث: ٣١٢

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

(2) चलने में बे एहतियाती से भी निस्स्यान पैदा होता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दीगर कई अफ़्आल की तरह चलने में बे एहतियाती से भी निस्स्यान में मुब्तला होने का ख़तरा रहता है। चुनान्चे, मुलाहज़ा फ़रमाइये :

(1) दो औरतों के दरमियान चलना (2) दो ऐसे ऊंटों के दरमियान चलना जिन में से एक ऊंट को दूसरे ऊंट की रस्सी के साथ बांधा हुआ हो (या'नी ऊंटों की क़ितार के दरमियान चलना) (3) रास्ते के दरमियान चलना (4) अपने वालिद साहिब के आगे चलना, इसी तरह अपने पीरो मुर्शिद से आगे आगे चलना।⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हमारा चलना सुन्नत के सांचे में ढल जाए तो सुन्नत पर अमल की बरकत से सवाब का ख़ज़ाना भी हाथ आएगा और सुन्नत पर अमल की बरकत से हमारे वक़ार में भी इज़ाफ़ा होगा। चलने की चन्द सुन्नतें और आदाब मुलाहज़ा हों : (1) अगर कोई रुकावट न हो तो दरमियानी रफ़्तार से रास्ते के किनारे किनारे चलें, न इतना तेज़ कि लोगों की निगाहें आप पर जम जाएं और न इतना आहिस्ता कि आप बीमार महसूस हों। (2) लफ़ंगों की तरह गिरेबान खोल कर अकड़ते हुवे हरगिज़ न चलें कि येह अहमकों और मगरूरों की चाल है बल्कि नीची नज़रें किये पुर वक़ार तरीक़े पर चलें। हज़रते सय्यिदुना अनस **رضي الله تعالى عنه** से मरवी है कि जब हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक,

सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ चलते तो झुके हुवे मा'लूम होते थे।⁽¹⁾ (3) राह चलने में परेशान नज़री से बचें और सड़क उबूर करते वक्त गाड़ियों वाली सम्त देख कर सड़क उबूर करें। अगर गाड़ी आ रही हो तो बे तहाशा भाग न पड़ें बल्कि रुक जाएं कि इस में हिफ़ाज़त का ज़ियादा इमकान है।⁽²⁾

ढेरों सुन्नतें और आदाब सीखने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ के रिसाले “101 मदनी फूल” और “163 मदनी फूल” का मुतालआ कीजिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿3﴾ हिर्से दुन्या और निस्न्यान

जब इन्सान पर दुन्यवी हिर्स सुवार हो, सिर्फ़ दुन्या ही हासिल करने की जुस्तजू में दिन रात बसर हो रहे हों तो फिर कोई कीमती बात दिलो दिमाग़ में किस तरह बैठ सकती है ? इस लिये दुन्या की हिर्स को भी निस्न्यान का बुन्यादी सबब क़रार दिया गया है।⁽³⁾ लिहाज़ा निस्न्यान दूर करने के लिये हिर्स का इलाज कीजिये।

“हिर्स” के बारे में तफ़सीली मा'लूमात और इस के इलाज जानने के लिये मक्तबतुल मदीना की मतबूआ किताब “हिर्स” का मुतालआ कीजिये।

① ... أبو داؤد، كتاب الادب، باب في هدى الرجل، ٣/٢٩، حديث: ٣٨٦٣

②सुन्नतें और आदाब, स. 98

③ ... بصائر ذوي التمييز، الخ، بصيرة في الحرص، ٢/٥٠

«4» निर्यात पैदा करने वाली मुख्यलिफ़ आदतें

(1) प्याज़ और लहसन के छिलके जलाना (2) कसरत से हंसना और कहकहे लगाना (3) कब्रिस्तान में हंसना (4) कबूतर बाजी करना (5) जान बूझ कर झूट बोलना (6) ठहरे हुवे पानी को कसरत से देखना (7) कसरत से जिमाअ करना, अगर्चे हलाल तरीके पर हो (8) जुनुबी (जिस पर गुस्ल फ़र्ज़ हो) का हाथ मुंह धोए बिगैर खाना पीना (9) ज़ियादा बेदार रहना (10) ज़ियादा थकाने वाला काम करना (11) हाथों को गारे और मिट्टी से धोना (12) वीरान मकानों को देखना (13) नंगे हो कर पेशाब करना (14) बैतुल ख़ला में पहले दायां (सीधा) पाउं रखना (15) सीधे हाथ से इस्तिन्जा करना (16) बाएं (उलटे) हाथ से खाना चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि उलटे हाथ से खाना निर्यात पैदा करता है। (17) औलाद के लिये बद दुआ करना, यूंही अपने अहलो इयाल के लिये बलाओं और मुसीबतों में गिरिफ़्तार होने की बद दुआ करना (18) रात के वक़्त झाड़ू देना (19) किसी भी फटे पुराने कपड़े से घर को झाड़ना (20) खाने के बरतनों को फटे पुराने कपड़े से झाड़ना (21) औलाद और वालिदैन् के लिये दुआए ख़ैर न करना (22) दस्तरख़्वान पर गिरे रोटी के टुकड़ों से ला परवाही करना (या'नी उन्हें यूंही छोड़ देना और उठा कर न खाना) (23) घर में झाड़ू न देना या'नी सफ़ाई न करना (24) पहने हुवे लिबास को जिस्म पर ही सीना (25) जूएं ज़िन्दा

फेंक देना (26) क़ब्रों पर जूएं फेंकना (27) खाना और खाने वाली अश्या क़ब्रों पर डालना (28) ऐसा ठहरा हुवा पानी जिस से वुजू या गुस्ल किया जाता हो उस में पेशाब करना (29) गदा गर से सूखी रोटी के टुकड़े ख़रीदना (30) कन्जूसी करना (31) इसराफ़ (फुज़ूल खर्ची) करना (32) रोज़ी में तंगी करना (33) बिला ज़रूरत पेशाब की जगह या पाख़ाना की जगह पर वुजू करना (34) दरख़्त का ऐसा गूंद चबाना जो चबाने के बा वुजूद न घुले (35) रोटी के इलावा खाने पीने की अश्या को गर्म गर्म खाना या पीना (36) चूहे का झूठा खाना (37) ऐसा कंघा करना जिस के कुछ दन्दाने टूटे हुवे हों (38) नमाज़ में सुस्ती करना (39) अन्डे के छिलकों पर चलना (40) क़ब्रों के कतबे (तख़्तियां) पढ़ना (41) दिया (चराग़) और इस की मिस्ल चीज़ें (जैसे लालटेन, मोम बत्ती वगैरा) फूंक मार कर बुझाना (42) घर से मकड़ी के जाले साफ़ न करना (43) खाने पीने के बरतनों को खुला छोड़ देना (44) दरवाज़े के किसी एक तख़्ते (पट, या पल्ले) से टेक लगा कर बैठना (45) दरवाज़े के दरमियान बैठना (46) भेड़ बकरियों के दरमियान चलना (47) दांतों से नाखुन काटना (48) दाढ़ी के बा'ज़ बालों को दांतों से तोड़ना (49) खाने पीने वाली अश्या की ज़ख़ीरा अन्दोज़ी करना (50) घर बार और अहलो इयाल के ग़म में मुब्तला रहना (51) ग़म व परेशानी में मुब्तला रहना (52) बैठ कर इमामा बांधना (53) खड़े हो कर शलवार पहनना (54) बाज़ार में बहुत सवेरे जाना (55) सब से

आखिर में बाज़ार से वापस आना (56) फ़ज़्र की नमाज़ पढ़ कर फ़ौरन मस्जिद से निकल जाना (इसी तरह नमाज़े फ़ज़्र के बा'द फ़ौरन सो जाना (इन्सान और भूल, स. 334)) (57) मर्दों को मूए ज़ेरे नाफ़ साफ़ करने के लिये नूरा इस्ति'माल करना (58) दामन और आंचल से हाथ मुंह साफ़ करना (59) गिरह दार क़लम से लिखना (60) किसी भी लकड़ी से ख़िलाल कर लेना (61) बैतुल ख़ला में मिस्वाक करना (62) दूसरे की मिस्वाक इस्ति'माल करना (63) ज़रूरत मन्द साइल को आटे का ख़मीर (और यूंही मा'मूली ज़रूरत की अश्या नमक वगैरा) देने से इन्कार कर देना (इन्सान और भूल, स. 334) (64) कुर्रा का झगड़ना और एक दूसरे पर इल्मी तौर पर हम्ला आवर होना (65) फ़ासिको फ़ाजिर की नेकी के मुतअल्लिक सफ़ाई पेश करना (66) नेक लोगों का बुरे लोगों की हिमायत और तरफ़दारी करना (67) गुद्दी पर हिजामा करवाना (68) सियाह जूते पहनना (69) नाखुन बढ़ाना (70) मेला कुचैला रहना ।⁽¹⁾

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

❁.....गुलाब के तिन्के से दांतों का ख़िलाल करने से दिमाग़ कमज़ोर होता है ।⁽²⁾

❁.....हज़रते अल्लामा सय्यिद मुहम्मद अमीन इब्ने अबिदीन शामी قُدِّسَ سِرُّهُ التُّورَانِي निस्नान का सबब बनने वाली अश्या को जिफ़्र

1... فلائذ العقبان، ص ۲-۱۱ ملقط، الكشف والبيان، ص ۲۷-۳۲

2.....दौलते बे ज़वाल, स. 24

करते हुवे फ़रमाते हैं : “शलवार या इमामे को तक्या बनाने से निस्नान (भूल जाने की बीमारी) पैदा होती है ।”(1)

❀.....हज़रते इमाम मुहम्मद बिन यूसुफ़ शामी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى نكل फ़रमाते हैं : “इमामा बैठ कर बांधने और शलवार खड़े हो कर पहनने से मोहताजी और भूल जाने का मरज़ पैदा होता है ।”(2)

अगर सुन्नतें सीखने का है जज़्बा तुम आ जाओ देगा सिखा मदनी माहोल
तू दाढ़ी बढ़ा ले इमामा सजा ले नहीं है ये हरगिज़ बुरा मदनी माहोल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा निस्नान के अस्बाब में से बा'ज़ वोह हैं कि इन पर मुदावमत और हमेशगी निस्नान का सबब बनती है, नीज़ इन में वोह भी हैं जो तंगदस्ती का बाइस भी बनते हैं । अगर कभी कभार ज़रूरत की बिना पर किसी का इरतिकाब हो भी जाए तो हरज नहीं, दर अस्ल येह हमारे बुजुर्गाने दीन के तजरिबात हैं इस लिये इन कामों से बचने ही में अफ़ियत है जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल ग़नी नाबुलुसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : हम ने लोगों के कई ऐसे मा'मूलात को मुलाहज़ा किया, जो उन में जारी हैं और उन के तजरिबात से येह बात सामने आई है

① ... رد المحتار، كتاب الطهارة، فصل في البئر، مطلب ست توارث النسيان، ۲۲۸/۱

② ... سبل الهدى والرشاد، جامع ابواب سيرته صلى الله عليه وسلم في لباسه... الخ، الباب

الثاني في العمامة والعذبة... الخ، ۲۸۲/۴

कि वोह उमूर भूल की बीमारी पैदा करने वाले हैं लिहाज़ा ऐसे कामों से बचना चाहिये ।”(1)

बदलते मौसिम के कुल्लते हाफिज़े पर असरात

निस्नान कभी तो गर्मी और खुश्की की वजह से पैदा होता है और कभी कभार सर्दी और रतूबत की ज़ियादती की वजह से भी हो जाता है । मुन्दरिजए ज़ैल तदाबीर को हाज़िक हकीम के मश्वरे से अमल में लाया जाए तो निस्नान से बचा जा सकता है :

मौसिमे गर्मा की एहतियाती तदाबीर

- ★ गर्मी में ज़ियादा नहाने से इजतिनाब कीजिये । (दिन में एक बार नहाना काफी है ।)
- ★ कसरते फ़िक्क, कसरते जिमाअ और खेल कूद की कसरत से बचिये ।
- ★ रोगने गुलाब वगैरा मुक़व्विये दिमाग़ तेल की सर में मालिश कीजिये ।
- ★ हलाल जानवरों का दूध दोहते ही सर पर लगाइये ।
- ★ मुक़व्विये दिमाग़ तेल नाक में डाल कर दिमाग़ की तरफ़ खींचिये,
- ★ कान में मुक़व्विये दिमाग़ तेल के क़तरे डाले जाएं, खुसूसन नीलोफ़र का तेल इस मक़सद के लिये मुफ़ीद है ।

खुश्क मौसिम की एहतियाती तद्बीर

- ★ मो'तदिल और तर गिज़ाओं का इस्ति'माल कम कीजिये ।
- ★ सर के किनारों की मालिश कीजिये ।
- ★ सर मोटे कपड़े से ढांप कर रखिये । (इस मक्सद के लिये इमामा शरीफ़ की सुन्नत पर अमल करना बहुत अच्छा है कि जहां निस्यान काफूर हो वहीं सवाब भी हासिल हो)
- ★ हाथ पाउं की वरज़िश कीजिये ।
- ★ बाबूना (बूटी) पानी में पका कर उस का पानी सर पर डालिये ।

सर्द मौसिम की एहतियाती तद्बीर

- ★ ज़ियादा रौशनी वाले मकान में रिहाइश इख़्तियार कीजिये ।
- ★ नशा आवर नीज़ पेट में गेस पैदा करने वाली चीज़ों से परहेज़ कीजिये ।
- ★ (ब वक्ते ज़रूरत) ऐसे ताज़ा पानी से गुस्ल कीजिये जो गर्म हो न ठन्डा बल्कि मो'तदिल हो ।
- ★ कैलूला ज़ियादा न करें । (ख़ास तौर पर ऐसे वक्ते में जब कि पेट भरा हुआ हो ।)
- ★ इसी तरह ज़ियादा सोने से भी बचिये ।⁽¹⁾

...الكشف والبيان، ص ٢٩-٥٣ ملتقطاً ①

नेकियों के ज़रीए निस्यान का इलाज

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा
 كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ फ़रमाते हैं : हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया :
 दवा इस्ति'माल किये बिगैर तीन चीज़ें बलग़म ख़त्म कर देती हैं,
 (1) मिस्वाक करना, (2) रोज़ा रखना और (3) तिलावते कुरआने
 मजीद करना।⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम तिलावते कुरआन
 और मिस्वाक को अपना मा'मूल बना लेंगे तो إِنَّ شَاءَ اللهُ تَعَالَى
 निस्यान से महफूज़ रहेंगे और हाफ़िज़ा भी क़वी हो जाएगा,
 खास तौर पर वोह इस्लामी भाई जिन्हें बलग़म की शिकायत है
 तो उन्हें मज़कूरा नेकियों के ज़रीए इलाज करना चाहिये क्यूंकि
 बलग़म निस्यान पैदा करता है जब कि इस को ख़त्म करने वाली
 चीज़ें हाफ़िज़ा क़वी करती हैं, जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल
 मलिक رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى का कौल गुज़रा कि हर वोह चीज़ जो
 बलग़म ख़त्म करती है उस से निस्यान का खातिमा होता है और
 हाफ़िज़ा क़वी होता है।⁽²⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हाफ़िज़ा क़वी करने वाले
 आ'माल, सिहहत बख़्श ग़िज़ाओं का इस्ति'माल और औरादो वज़ाइफ़

① ...العلاج بالاغذية والاعشاب في بلاد المغرب، ماجاء في علاج البلغم... الخ، ص ٢١

② ...العلاج بالاغذية والاعشاب في بلاد المغرب، ماجاء في علاج البلغم... الخ، ص ٢١

के इलावा याददाश्त बढ़ाने वाले मा'मूलात के मुतालए से इस बात का पता चला कि हमारे रोज़ मर्रा के मा'मूलात से हमारी याददाश्त का बड़ा गहरा तअल्लुक है, अगर हम गुनाहों से बचें, तिलावते कुरआन करने और नमाज़ पढ़ने की आदत बनाएं, ज़िक्रो अज़कार करने और दुरूद शरीफ़ पढ़ने का शौक पैदा करें, कपड़े और बदन को साफ़ सुथरा रखें, अच्छी और मुनज़्जम ज़िन्दगी गुज़ारने के साथ साथ अपने मुतालए को भी बा मक्सद और मुनज़्जम बनाएं, अपने मुतालए को गुफ़्तगू का हिस्सा बनाने के साथ इसे अमलन अपनी ज़िन्दगी में भी नाफ़िज़ करें, हराम और मुश्तबा चीज़ों से बचते हुवे हलाल, पाकीज़ा और सिद्दहत बख़्श ग़िज़ाएं खाने की आदत बनाएं तो यकीनन येह चीज़ें हमारे हाफ़िज़े पर अपने अच्छे असरात मुरत्तब करेंगी और हमारी याददाश्त को कुव्वत बख़्शेंगी ।

अगर मद्दती माहोल मुयक्क़सब आ जाए तो.....

हमारा मज़हबे इस्लाम इन चीज़ों को पसन्द फ़रमाता है और ऐसी पाकीज़ा ज़िन्दगी गुज़ारने का हुक्म सादिर फ़रमाता है, मगर बद किस्मती से जहां दीगर इस्लामी अहक़ाम बजा लाने में सुस्ती का दौर दौरा है वहीं यूं लगता है कि इन चीज़ों पर भी अमल न करने का हम ने तहिय्या कर रखा है ।

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी दीने इस्लाम के कई शो'बों में अपनी ख़िदमात सर

अन्जाम दे रही है और बे अमल और बद किरदार मुसलमानों की अख़लाकी और इस्लामी तरबियत कर के उन्हें जीने का शुज़र सिखा रही है और एक सच्चा मुसलमान बना रही है ।

एक इन्सान को अगर बचपन से अच्छा और नेक माहोल मुयस्सर आ जाए और वोह सुन्नतों भरी फ़ज़ाओं में परवरिश पाने लगे तो उस की इस्लामी तरबियत की ब दौलत अख़लाक़ व किरदार संवर जाता है जिस की बरकत से हाफ़िज़ा भी मज़बूत होता है, इसी अहम्मियत के पेशे नज़र दा'वते इस्लामी ने मदारिसुल मदीना (लिल बनीन, लिल बनात) काइम किये, स्कूल पढ़ने वाले बच्चों के लिये “दारुल मदीना” ता'मीर किये और इस में सुन्नतों भरी तरबियत का एक मुअस्सर निज़ाम मुतआरिफ़ कराया और येह सब इस लिये कि कम उम्री में होने वाली ता'लीमो तरबियत ज़िन्दगी भर के लिये ज़ेहन में महफूज़ हो जाती है । चुनान्चे,

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : **حِفْظُ الْغُلَامِ كَالْتَّقِشِ فِي الْحَجَرِ وَحِفْظُ الرَّجُلِ بَعْدَ مَا كَبُرَ كَالْكِتَابِ عَلَى الْمَاءِ** या'नी छोटे बच्चे का याद करना पथ्थर पर लकीर की तरह है और मर्द का बुढ़ापे में किसी चीज़ को याद करना पानी पर लिखने की मानिन्द है ।⁽¹⁾

इसी तरह हज़रते सय्यिदुना हसन **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** लोगों से फ़रमाया करते थे कि “हमारी दर्सगाह में अपने कम उम्र बच्चों को

① ... الفقيه والمتفقه، باب التفقه في الحداثه و زمن الشيبه، ۱/۲، رقم: ۸۲۰

भेजा करो क्यूंकि उन के दिल बिल्कुल ख़ाली होते हैं और वोह सुन कर जल्द याद कर लेते हैं ।”(1)

अगर इमारत की बुन्याद ही टेढ़ी हो तो...

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कहते हैं कि ईंट या किसी इमारत की अगर बुन्याद ही टेढ़ी हो तो इमारत को लाख सीधा करने की कोशिश करें वोह हमेशा टेढ़ी की टेढ़ी ही रहेगी, वालिदैन् बच्चों की अच्छी तरबियत नहीं करते और फिर जब वोह बड़े हो जाते हैं तो उन के गुनाहों भरे मुआमलात देख कर कुढ़ते रहते हैं, आइये ! अपने बच्चों की तरबियत का सामान करने के लिये उन्हें दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना, दारुल मदीना या जामिअतुल मदीना में दाखिला दिलवाइये, और ज़हे नसीब खुद भी मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये, कि सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने में सिवाए भलाई के और कुछ नहीं । मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर इमामे शरीफ़ का ताज सजा लीजिये कि इमामा बांधने के जहां बे शुमार फ़वाइद हैं वहीं इस की बरकत से हाफ़िज़ा भी क़वी हो जाता है जैसा कि हज़रते सय्यिदुना रबीअ **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं : **لِيَ الْأَجْدُ الْعِمَّةُ تَرِيدُ فِي الْعَقْلِ** मेरे नज़दीक इमामा बांधने से अक़ल में इज़ाफ़ा होता है ।(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

1... الجامع في الحديث على حفظ العلم، ص ١٦٩

2... شرح البخاري لابن بطال، كتاب اللباس، باب العمام، ٨٩/٩

बलग़म कम करने के अस्बाब

(1) फ़ाज़िल रुतूबतें और बलग़म इन्सान के अन्दर सुस्ती पैदा करती हैं और तक़लीले त़ा़म बलग़म को कम करने का मुजर्रब नुस्खा है। एक कौल के मुताबिक़ सत्तर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि कसरते निस्यान, कसरते बलग़म से पैदा होता है और कसरते बलग़म ज़ियादा पानी पीने की वजह से होता है और पानी के ब कसरत पिये जाने की वजह कसरते त़ा़म है।

(2) सूखी रोटी खाने से भी बलग़म में कमी वाक़ेअ़ होती है।

(3) निहार मुंह किश्मिश खाना भी बलग़म को कम करने के लिये मुफ़ीद चीज़ है।

(4) मिस्वाक करना भी बलग़म को दूर करता है, हाफ़िज़ा और फ़साहत को बढ़ाता है। क्यूंकि मिस्वाक करना बहुत ही प्यारी सुन्नत है और इस से नमाज़ व तिलावते कुरआन का सवाब बढ़ा दिया जाता है।

(5) कै भी फ़ाज़िल रुतूबात और बलग़म में कमी का बाइस बनती है। जो शख़्स कम खाने की आदत बनाना चाहता है उसे चाहिये कि कम खाने के फ़वाइद अपने सामने रखे। सिद्दहत मन्द रहना, इफ़फ़त से मुत्तसिफ़ होना, ईसार के मवाक़ओं का मुयस्सर आना, कम खाने के फ़वाइद में से चन्द एक हैं। (राहे इल्म, स. 51)

ماخذ ومراجع

قرآن کریم

1	کتب الامان	امام شاہ احمد رضا خان، متوفی ۱۳۳۰ھ	مکتبہ المدینہ کراچی
2	بصائر ذوی التعمیر	مجد الدین محمد بن یعقوب انصاری آبادی، متوفی ۸۱۷ھ	لجنہ احیاء التراث اسلامی قادر، ۱۳۹۳ھ
3	روح البیان	مولی الروم شیخ اسماعیل حقی رومی، متوفی ۱۱۳۷ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت، ۱۴۰۵ھ
4	خزائن العرفان	مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبہ المدینہ کراچی
5	نور العرفان	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	مرکز الاولیاء لاہور
6	موطا امام مالک	امام مالک بن انس انصاری، متوفی ۱۷۹ھ	دار المعرفہ بیروت، ۱۴۲۰ھ
7	مسند احمد	امام احمد بن محمد حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت، ۱۴۱۴ھ
8	سنن الدارمی	عبد اللہ بن عبد الرحمن الدارمی، متوفی ۲۵۵ھ	دار الکتب العربیہ بیروت، ۱۴۰۷ھ
9	صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۹ھ
10	صحیح مسلم	امام ابو حسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار المعرفہ بیروت، ۱۴۱۹ھ
11	سنن ابن ماجہ	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۴۳ھ	دار المعرفہ بیروت، ۱۴۲۰ھ
12	سنن أبي داود	امام ابو داود سليمان بن اشعث ہجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربیہ بیروت، ۱۴۲۱ھ
13	سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت، ۱۴۱۴ھ
14	نواذر الاصول	امام ابو عبد اللہ محمد بن علی حکیم ترمذی، متوفی ۲۸۵ھ	دار النوادر، بیروت، ۱۴۳۱ھ
15	مسند ابی یعلیٰ	امام ابو یعلیٰ احمد بن علی الموصلی، متوفی ۳۰۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۸ھ
16	المعجم الکبیر	ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۹ھ	دار احیاء التراث العربیہ بیروت، ۱۴۲۲ھ
17	المعجم الأوسط	ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۹ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۲۲ھ
18	المستدرک	امام محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفہ بیروت، ۱۴۱۸ھ
19	شعب الامان	امام ابو بکر احمد بن حسین بنقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۲۱ھ
20	الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	امام علاء الدین علی بن لبان، متوفی ۴۳۹ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۷ھ

پیشکش : مجلیسے اہل مہدینتول ڈلمیہ (د' و تے اسلامی)

21	مشکاة المصابیح	ولی الدین محمد بن عبداللہ خطیب ، متوفی ۷۷۲ھ	دار الفکر بیروت، ۱۴۲۱ھ
22	القول البدیع	امام محمد بن عبد الرحمن السنخاوی ، متوفی ۹۰۲ھ	مؤسسہ الریان بیروت، ۱۴۲۲ھ
23	کنز العمال	علی قلی بن حسام الدین برهان پوری ، متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۹ھ
24	شرح البحاری	ابن بطلال ابو الحسن علی بن خلف ، متوفی ۳۴۹ھ	مکتبۃ ابن شدریا بلخ، ۱۴۲۰ھ
25	فتح الباری	امام حافظ ابن حجر عسقلانی شافعی ، متوفی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۲۰ھ
26	عمدة القاری	امام بدر الدین محمود بن احمد بن عینی ، متوفی ۸۵۵ھ	دار الفکر بیروت، ۱۴۱۸ھ
27	ارشاد الساری	امام شہاب الدین احمد بن محمد قطانی ، متوفی ۹۲۳ھ	دار الفکر بیروت، ۱۴۲۱ھ
28	مرآۃ المناجیح	مفتی احمد یار خان نعیمی ، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن مرکز الاولیاء لاہور
29	الشمائل المحمدیہ	امام محمد بن یحییٰ ترمذی ، متوفی ۲۷۹ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت
30	اخلاق النبی و آدابہ	حافظ عبداللہ بن محمد اصمہانی ، متوفی ۳۶۹ھ	دار الکتب العربیہ بیروت، ۱۴۲۸ھ
31	دلائل النبوة	حافظ ابو نعیم احمد بن عبداللہ اصفہانی ، متوفی ۴۳۰ھ	المکتبۃ العصریہ بیروت، ۱۴۳۰ھ
32	شواہد النبوة	مولانا عبد الرحمن جامی ، متوفی ۸۹۸ھ	اشتبیل ترکی
33	المواہب اللدنیہ	شہاب الدین احمد بن محمد قطانی ، متوفی ۹۲۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۶ھ
34	سبل الہدی والرشاد	محمد بن یوسف صالحی شافعی ، متوفی ۹۴۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۲ھ
35	السیرۃ الحلبیہ	ابو الفرج علی بن ابراہیم علی شافعی ، متوفی ۴۴۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۲۲ھ
36	زرقانی علی المواہب	ابو عبداللہ محمد بن عبد الباقی زرقانی ، متوفی ۱۱۲۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۷ھ
37	الثقات لابن حبان	امام ابو حاتم محمد بن حبان ، متوفی ۳۵۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۹ھ
38	حلیۃ الاولیاء	امام حافظ ابو نعیم اصفہانی ، متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۹ھ
39	احبار ابی حنیفہ	امام حسین بن علی الصیرفی ، متوفی ۳۳۶ھ	عالم الکتب، ۱۴۰۵ھ
40	تاریخ بغداد	امام ابو بکر خطیب بغدادی ، متوفی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۷ھ
41	طبقات الخلیفۃ	امام ابو الحسن ابن ابی یعلیٰ ، متوفی ۵۲۶ھ	مطبعہ دائرۃ المحدثین قاہرہ
42	ترتیب المدارک	قاضی عیاض بن موسیٰ الیصصی ، متوفی ۵۴۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
43	التذکرۃ الحملونیۃ	ابو العالی محمد بن حسن بغدادی ، متوفی ۵۶۲ھ	دار صادر بیروت، ۱۹۹۶ء
44	تاریخ مدینۃ دمشق	حافظ ابو القاسم علی بن حسن عساکر ، متوفی ۵۵۷ھ	دار الفکر بیروت، ۱۴۱۵ھ
45	المنتظم	ابو الفرج عبد الرحمن ابن جوزی ، متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۵ھ

46	وفیات الاعیان	ابوالعباس احمد بن محمد خلکان، متوفی ۶۸۱ھ	دار احیاء التراث العربی، دت، ۱۳۱۷ھ
47	میزان الاعتدال	امام شمس الدین محمد بن احمد زہبی، متوفی ۷۴۸ھ	دار الفکر بیروت، ۱۳۲۰ھ
48	سیر اعلاء النبلاء	امام شمس الدین محمد بن احمد زہبی، متوفی ۷۴۸ھ	دار الفکر بیروت، ۱۳۱۷ھ
49	تذکرۃ الحفاظ	امام شمس الدین محمد بن احمد زہبی، متوفی ۷۴۸ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۳۱۹ھ
50	البدایہ والنہایہ	عماد الدین اسماعیل بن عمر ابن کثیر، متوفی ۷۷۳ھ	دار الفکر بیروت، ۱۳۱۸ھ
51	منائب الامام الاعظم	محمد بن محمد کردی، متوفی ۸۷۷ھ	کونکہ، ۱۳۰۷ھ
52	الدرر الکامنة	امام ابن حجر عسقلانی شافعی، متوفی ۸۵۲ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت
54	بغیۃ الوعاة	جلال الدین عبد الرحمن السیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	مطبعہ عین البیالی الخلی
55	طبقات الکبری	عبد الوہاب بن احمد شعرائی، متوفی ۹۷۳ھ	دار الفکر بیروت، ۱۳۱۸ھ
56	الخیرات الحسان	احمد شہاب الدین ابن حجر مکی، متوفی ۹۷۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۳۰۳ھ
57	شذرات الذهب	امام عبدالحی بن احمد حلی، متوفی ۱۰۸۹ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۳۱۹ھ
58	بستان المعحدثین	شاہ عبد العزیز محدث دہلوی، متوفی ۱۲۳۹ھ	باب المدینہ کراچی
59	جامع کرامات اولیاء	امام یوسف بن اسماعیل زہبی، متوفی ۱۳۵۰ھ	مرکز البنت برکات رضا، دت، ۱۳۲۲ھ
60	قلاند العقیان	ابو اسحاق شہرہان الدین ابراہیم بن محمد شافعی، متوفی ۹۰۰ھ	مخطوط
61	روضۃ العقلاء	محمد بن حبان بن احمد بن حبان البیہقی، متوفی ۳۵۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۳۹۷ھ
62	الجامع فی البحث علی حفظ العلم	ابو بلال عسکری، ۴۰۰ھ، امام ابو بکر خطیب بغدادی، متوفی ۲۶۳ھ، ابن عساکر ۵۷۱ھ، ابن جوزی ۵۹۷ھ	قاہرہ، ۱۳۱۲ھ
63	جامع بیان العلم و فضلہ	ابو عمرو یوسف بن عبد البر انصاری القرطبی، متوفی ۳۶۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۳۲۸ھ
64	اقتضاء العلم العمل	امام ابو بکر خطیب بغدادی، متوفی ۳۶۳ھ	الکتب الاسلامی بیروت، ۱۳۹۷ھ
65	الجامع لاختلاف الراوی	امام ابو بکر خطیب بغدادی، متوفی ۳۶۳ھ	دارلن جوزی بیروت، ۱۳۳۳ھ
66	الفقیہ والمتفقہ	امام ابو بکر خطیب بغدادی، متوفی ۳۶۳ھ	دارلن جوزی بیروت، ۱۳۲۸ھ
67	محاضرات الادباء	ابو القاسم الحسین بن محمد راغب اصفہانی، متوفی ۵۰۲ھ	دار مکتبۃ الحیاء بیروت
68	راہ علم	امام بہران الاسلام ابراہیم زرنوجی، متوفی ۶۱۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
69	بستان العارفین	فتیہ ابوالدین نصر بن محمد سمرقندی، متوفی ۷۳۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۳۲۲ھ
70	الرسالة الفشیریہ	امام عبد الکریم بن ہوازن قشیری، متوفی ۳۶۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۳۱۸ھ

71	مکاشفۃ القلوب	امام ابو حامد محمد بن محمد الغزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
72	احیاء العلوم	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر، بیروت ۲۰۰۰ء
73	اتحاف السادة المتقین	ابو الفیض سید محمد رفیع زبیدی، متوفی ۱۲۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
74	المنہات	امام ابو عبد اللہ محمد بن علی حکیم ترمذی، متوفی ۲۸۵ھ	مکتبۃ القرآن قاہرہ
75	آکام المرحان فی احکام الجان	امام بدر الدین محمد بن عبد اللہ شلی، متوفی ۷۶۹ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۹۹۸ء
76	تذہیر الاخوان	ابو اسحاق شیخ برہان الدین ابراہیم بن محمد شافعی، متوفی ۹۰۰ھ	مخطوطہ
77	مستطرف	شہاب الدین محمد بن ابوالحسن، متوفی ۸۵۰ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۹ھ
78	العلاج بالاغذیۃ والاعشاب	عبد الملک بن حبیب الالبیری، متوفی ۲۳۸ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
79	الحوای فی الطب	ابو بکر محمد بن زکریا الرازی، متوفی ۳۱۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
80	الرحمة فی الطب والحکمة	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	مؤسسۃ تاریخ العربی
81	الحوای للفتوی	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
82	کتاب المفردات	حکیم مظفر حسین اعوان	شیخ غلام علی اینڈ سنز لاہور
83	خواص المفردات	حکیم مظفر حسین اعوان	شیخ غلام علی اینڈ سنز لاہور
84	میتھی کے 50 مانی پھول	امیر المہنت علامہ محمد الیاس عطار قادری رضوی	مکتبۃ المدینہ کراچی
85	فناوی ہندیہ	شیخ نظام و جماعت من علماء الہند، متوفی ۱۱۶۱ھ	کوئٹہ
86	رد المحتار	محمد امین ابن عابدین شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
87	فتاویٰ رضویہ	امام شاہ احمد رضا خان، متوفی ۱۳۲۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاہور
88	دولت بہ زوال	مفتی عبدالفتاح حسینی، متوفی ۱۳۲۳ھ	جامعہ المہنت صادق العلوم، ناسک، ہند
89	ملفوظات اعلیٰ حضرت	مفتی مصطفیٰ رضا خان قادری، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی 2012
90	جنتی زیور	علامہ عبد المصطفیٰ اعظمی، متوفی ۱۳۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی 2006
91	احوال و آثار علامہ عبدالعزیز پربادی	متین کاشمیری	بہار اسلام پبلی کیشنز لاہور

92	तारिख مشائخ قادریہ	ڈاکٹر غلام محی الدین	کتبہ خاندان امجدیہ ولی، ۱۴۲۴ھ
93	سیرت پاک حضرت شہر کن المدینہ والعالم	مفتی محمد راشد نظامی	کتبہ حاجی نیاز احمد ملتان
94	حیات اعلیٰ حضرت	ملک العلماء مفتی محمد ظفر الدین بہاری، متوفی	کتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی
95	تذکرہ صدر الافاضل	امیر اہلسنت علامہ محمد الیاس عطار قادری رضوی	کتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی
96	تذکرہ صدر الشریعہ	امیر اہلسنت علامہ محمد الیاس عطار قادری رضوی	کتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی
97	علم و حکمت کے 125 مدنی پھول	امیر اہلسنت علامہ محمد الیاس عطار قادری رضوی	کتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی
98	فیضان سنت	امیر اہلسنت علامہ محمد الیاس عطار قادری رضوی	کتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی
99	مدنی شیخ مورخہ	امیر اہلسنت علامہ محمد الیاس عطار قادری رضوی	کتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی
100	بیابان و توبہ ایسا	امیر اہلسنت علامہ محمد الیاس عطار قادری رضوی	کتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی
101	مچھلی کے عجائبات	امیر اہلسنت علامہ محمد الیاس عطار قادری رضوی	کتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی
102	ستیں اور آداب	مجلس المدینہ العلمیہ (شعبہ اصلاحی کتب)	کتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی

ذُلمِ ما سیتا رہوں کی میسرل ہن

فَرمانے مُستَفِرَّ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ہے : “بَہشک ذُلمِ ما
کی میسال جَمینِ پَر اِیسی ہی ہے جَیسے آسماں پَر سیتارے جین
سے خُشکی اُور تَری مَیں رَہنُمائی ہوتی ہے، پس جب سیتارے میٹ
جائے تہ تو کَریب ہے کی راہ چلنے والے بھٹک جائے۔”

(مُسْنَدُ امام احمد، ۴/۳۱۴، حدیث: ۱۲۶۰۰)

फ़हरिस्त

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
तआरुफ़े अल मदीनतुल इल्मिय्या	6	(6) निगरान व मुन्तज़िम के लिये	23
कुव्वते हाफ़िज़ा एक अनमोल ने'मत	8	(7) परेशानी से बचने के लिये	23
मौजूआत का इजमाली तआरुफ़	10	हैरत अंगेज़ कुव्वते हाफ़िज़ा की हिकायतें	24
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	12	हिफ़ज़े कुरआन की सात हिकायात	26
आलिमे मदीना की क्या शान है !	12	(1) सिर्फ़ पढ़ कर सूरए अन्आम याद कर ली	26
बाब 1 : हाफ़िज़े की अहम्मिय्यत	14	(2) एक रात में हिफ़ज़े कुरआन	26
हाफ़िज़े के उख़रवी फ़वाइद	15	(3) तीन माह में हिफ़ज़े कुरआन	27
(1) हुकूकुल्लाह की अदाएगी	15	(4) चार साल की उम्र में हिफ़ज़े कुरआन	27
(2) हुकूकुल इबाद की अदाएगी	16	(5) पन्दरह पारों के पैदाइशी हाफ़िज़	27
(3) अय्यामुल्लाह याद रखने के लिये	17	(6) हज़रते शाह रुक्ने आलम का हिफ़ज़े कुरआन	29
(4) अल्लाह वालों के हलालते ज़िन्दगी	18	(7) कुरआन नाज़ि़ा पढ़ कर हिफ़ज़ हो गया	30
(5) हुसूले इब्रत	18	अल्लाह वालों के हैरत अंगेज़	
(6) शरई अहक़ाम पर अमल	19	हाफ़िज़े की 39 हिकायात	30
हाफ़िज़े के दुन्यवी फ़वाइद	19	(1) आप तो तबीब हैं.....	30
(1) ता'लीमी कामयाबी का हुसूल	20	(2) इमाम औज़ाई ने तहसीन फ़रमाई	32
(2) कारोबारी कामयाबी	20	(3) एक लाख अशरफ़ियों पर तरजीह	33
(3) मुशावरत के लिये	21	(4) सब से बड़े हाफ़िज़े हदीस	34
(4) अच्छी यादों से महज़ूज़ होने के लिये	22	(5) मुत्तकी वालिदैन् का ज़हीन तरीन् फ़रज़न्	37
(5) दिलचस्प गुफ़्तगू करने के लिये	22	(6) सत्तर हज़ार हदीसों का कमसिन हाफ़िज़	38

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
(7) एक हजार हदीसों ज़बानी बयान फ़रमा दीं	39	(22) कुव्वते हाफिज़ा की हिफ़ाज़त	
(8) शौक और लगन ने मुश्किलात आसान कर दीं	41	और कानों का कुफ़्ले मदीना	64
(9) आस्माने इल्म का चमकता दमकता सितारा	43	(23) अगर येह बात है तो ज़रा सुनाओ ?	64
(10) उस्ताद की तमाम बातों को ज़ेहन में महफूज़ कर लिया	45	(24) 120 तफ़सीर और तीन लाख अश्आर के हाफिज़	65
(11) हजारहा हदीसों याद फ़रमा लिया करते	46	(25) ज़हीन बेटे की बीमारी पर	
(12) जो सुनते याद फ़रमा लेते	46	वालिद साहिब की बेचैनी	66
(13) कुव्वते हाफिज़ा से लोगों को फ़ाइदा	47	(26) अचानक इम्तिहान में इम्तियाज़ी कामयाबी	67
(14) इल्मे तफ़सीर, मग़ाज़ी और अय्यामे अरब के हाफिज़	48	(27) 80 दिन में हिफ़ज़े कुरआन	68
(15) जिस्म बीमार लेकिन हाफिज़ा सिद्दहत मन्द	49	(28) कई उलूम का ख़ज़ाना ज़ेहन में महफूज़ था	68
(16) जिन के हाफिज़े से दूसरे भी मुस्तफ़ीद होते	50	(29) तमाम जवाबत याद हैं ?	69
(17) सात दिन में कुरआन हिफ़ज़ कर लिया	51	(30) हुज़ैम के हाफिज़े में फ़र्क़ नहीं आ सकता	70
(18) शरई मसाइल हल करने का अनोखा अन्दाज़	52	(31) आ'ला हज़रत का हैरत अंगेज़ हाफिज़ा	70
(19) सय्यिदुल हुप्फ़ाज़ का हैरत अंगेज़ हाफिज़ा	55	(32) एक रात में दो जिल्दें हाफिज़े	
हर सुनी हुई बात याद हो जाती	56	में महफूज़ कर लीं	71
(20) कुव्वते हाफिज़ा की ब दौलत उम्मत को ख़ैर ख़्वाही	59	(33) बाबुल इस्लाम सिन्ध के आठ	
(21) कुव्वते हाफिज़ा ने उस्ताद साहिब को हैरान कर दिया	61	उलमा के नाम बता दिये	73
		(34) एक माह में हाफिज़े कुरआन	75
		(35) ख़लीफ़े आ'ला हज़रत का हाफिज़ा	76
		(36) एक ही दिन में काफ़िया याद फ़रमा ली	78
		(37) अमीरे अहले सुन्नत का हाफिज़ा	78

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
(38) एक बार पढ़ने से याद हो जाता	79	(5) बारगाहे इलाही में दुआ करें	94
(39) पुरानी यादें ताज़ा फ़रमा दीं	79	(6) हर वक़्त बा वुजू रहिये	95
बाब 2 : हाफ़िज़ा कैसे क़वी हो		(7) मुनज़्ज़म ज़िन्दगी गुज़ारिये	96
सकता है ?	81	(8) नींद का ख़ास ख़याल रखें	97
इन्सानी याददाश्त की अक्सांम	82	(9) शुक्र अदा कीजिये	98
इल्म को याद रखने के लिये तीन अहम बातें	83	याद करते हुवे क़ाबिले लिहाज़ उमूर	99
(1) हाज़िर दिमागी	83	(1) जो चीज़ याद करना चाहें उसे बग़ौर सुनें	99
(2) तकरार	83	(2) अच्छी तरह समझ कर याद करें	100
(3) साबिक़ा मा'लूमात से मुत्सलिक करना	84	(3) बुलन्द आवाज़ से याद कीजिये	101
एक अमली मश्क़	84	(4) याद करने के लिये वक़्त का इन्तिखाब	102
बाब 3 : हाफ़िज़े की मज़बूती		बच्चों को सोते हुवे कुछ न कुछ याद करवाएं	104
के तरीक़े	85	(5) पुर सुकून कैफ़ियत में याद कीजिये	106
(1) याद कैसे करें ?	85	(6) याद करने के लिये मुनासिब	
याद करने से पहले क़ाबिले तवज्जोह उमूर	86	जगह का इन्तिखाब कीजिये	106
(1) अच्छी निय्यत	86	(7) थोड़ा मुतालआ मगर इस्तिक़्ामत के साथ	107
(2) गुनाहों से दूर रहिये	88	(8) याददाश्त को तहरीरी सूत दीजिये	109
(3) सिर्फ़ रिक्के हलाल पर इन्द्दिसार कीजिये	90	कान पर क़लम रखो !	110
लुक्मए हलाल में बरकत है	91	याद कर लेने के बाद क़ाबिले लिहाज़ उमूर	111
लुक्मए हराम की नुहूसत	92	(1) तेज़ तर नज़रे सानी की आदत बनाएं	111
(4) इल्म पर अमल का ज़बा पैदा कीजिये	92	(2) अपनी मा'लूमात को गुफ़्तू को हिस्सा बनाइये	112

उपनाम	सफ़्हा	उपनाम	सफ़्हा
(3) तकरार से तक़रीर आती है	112	सुख़ मुनक्के	141
(4) इल्मी महाफ़िल में शिकत की आदत डालिये	114	दौरे रिसालत का फ़ालूदा	142
हर वक़्त सीखते रहना चाहिये	116	मछली और कुव्वते हाफ़िज़ा	144
(5) आंखें बन्द कर के याददाश्त पर जोर दें	116	मछली के सर की यख़नी और कुव्वते हाफ़िज़ा	145
(6) दिमागी वरज़िश की आदत डालिये अगर कोशिश करे इन्सान.....	117	बर्हमी बूटी	146
इलाज में तरतीब	119	कुन्दुर खाइये हाफ़िज़ा मजबूत बनाइये	148
(2) औरादो वज़ाइफ़ पढ़ने की आदत बनाइये	123	इल्मो हिकमत के मदनी फूल कैसे याद रखें	148
निस्नान का इलाज आयाते कुरआनी से तरीक़ए अमल	124	याददाश्त क़वी करने वाली	150
तरीक़ए अमल	130	गिज़ाओं का इन्तिख़ाब कीजिये	151
तरीक़ए अमल	130	कलोनज़ी और शहद से निस्नान का इलाज	151
तरीक़ए अमल	131	सरकार ने हाफ़िज़ा क़वी फ़रमा दिया	151
तरीक़ए अमल	132	निस्नान दूर करना सरकार का मो'जिज़ा है	154
निस्नान का इलाज हदीसे मुबारका से	133	इस के बाद मैं कभी कोई चीज़ नहीं भूला	154
(3) सिद्दहत बह़श गिज़ाएं इस्ति'माल कीजिये	136	कुन्द ज़ेहनी ख़त्म हो गई	156
तबीब से मश्वरा ज़रूरी है	137	तबर्स्कात से हाफ़िज़ा क़वी कीजिये	157
मुनक्के के हैरत अंगेज़ फ़वाइद	140	शेरे खुदा के क़वी हाफ़िज़े का राज़	158
		इमाम ज़हबी जैसे हाफ़िज़े की तमन्ना	159
		निगाहे बली की ताम्साँर कुव्वते हाफ़िज़ा के लिये इक़साँर	160
		बलिये कामिल की नज़रे इनायत से निस्नान दूर हो गया	162
		येह मेरे मुर्शिद का फ़ैज़ है	163

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
उठो ! मैं ने तुम्हें ज़हीन किया	164	(2) चलने में बे एहतियाती से भी	
बच्चों पर तन्कीद न करें	165	निस्यान पैदा होता है	178
कुव्वते हाफ़िज़ा बढ़ाने वाले काम	166	(3) हिसें दुन्या और निस्यान	179
(4) निस्यान पैदा करने वाले		(4) निस्यान पैदा करने वाली	
अस्बाब से बचिये	168	मुख़लिफ़ आदतें	180
(1) गुनाहों से हाफ़िज़ा कमज़ोर होता है	169	बदलते मौसिम के कुव्वते हाफ़िज़े	
आलाते हाफ़िज़ा से किये जाने वाले गुनाह	170	पर असरात	184
(1) बद निगाही, निस्यान का सब से बड़ा सबब	170	मौसिमे गर्मा की एहतियाती तदाबीर	184
(2) ज़बान का ग़लत इस्ति'माल		ख़ुश्क मौसिम की एहतियाती	
भी निस्यान पैदा करता है	172	तदाबीर	185
(3) सुन कर याद कर लेना भी एक		सर्द मौसिम की एहतियाती तदाबीर	185
ने'मत है लेकिन...	173	नेकियों के ज़रीए निस्यान का इलाज	186
गाने बाजे सुनने से अक़ल ज़ा़इल हो जाती है	174	अगर मदनी माहोल मुयस्सर आ	
निस्यान पैदा करने वाले चन्द गुनाह	174	जाए तो.....	187
(4) निस्यान पैदा करने वाली ग़िज़ाएं	174	अगर इमारत की बुन्याद ही टेढ़ी	
(5) निस्यान पैदा करने वाली आदतें	175	हो तो...	189
(1) किस तरह, कितना और कब		माख़ज़ो मराजेअ	191
सोने से निस्यान पैदा होता है ?	176	फ़ेहरिस्त	196
सोने जागने की सुन्नतें और आदाब	176	याददाश्त	201

नेक नमाजी बनने के लिये

हर जुमा 'रात बा 'द नमाजे मगरिब आप के यहां होने वाले दा 'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निव्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आशिकाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा 'मूल बना लीजिये ।

मेश मदनी मक्खद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है ।" إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ
अपनी इस्लाह के लिये "मदनी इन्आमात" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है । إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ



मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुश्तलिफ़ शाखें

- ❁ देहली :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ मस्जिद, देहली -6 ☎ 011-23284560
- ❁ अहमदाबाद :- फैज़ाने मदीना, श्रीकोनिया बगीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदाबाद-1, गुजरात ☎ 9327168200
- ❁ मुम्बई :- फैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खडक, मुम्बई, महाराष्ट्र ☎ 09022177997
- ❁ हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना ☎ (040) 2 45 72 786